हिंदी कोर

कक्षा XI

2026-27

विद्यार्थी सहायक सामग्री

Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

विकास गुप्ता, भा.प्र.से.
आयुक्त
Vikas Gupta, IAS
Commissioner

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016
Kendriya Vidyalaya Sangathan
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

संदेश

शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित ज्ञान नहीं है; यह स्वयं को पहचानने, अपने विचारों को विस्तार देने और जीवन की चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना करने की सतत् यात्रा है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन का सदैव यह प्रयास रहा है कि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए ऐसा शिक्षण वातावरण हो, जहाँ जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिले, सीखना आनंददायी बने और प्रत्येक बालक अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित कर सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को सिर्फ रटने से समझने, सूचना से ज्ञान और ज्ञान से जीवनोपयोगी दक्षताओं की ओर अग्रसर किया है। आज का समय कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI), डिजिटल नवाचार और निरंतर बदलती तकनीकों का है। ऐसे युग में केवल तथ्यों का ज्ञान पर्याप्त नहीं है; आवश्यक है कि विद्यार्थी मनन- चिंतन करना सीखें, प्रश्न पूछें, समस्याओं का समाधान खोजें और नए विचारों के साथ आगे बढ़ें। यही क्षमताएँ उन्हें भविष्य के लिए तैयार करेंगी।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पाँचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (ZIETs) के माध्यम से, समर्पित एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए यह विद्यार्थी सहायक सामग्री तैयार की गई है। यह केवल परीक्षा की तैयारी की संकलन सामग्री नहीं है, बल्कि विषयों को सरलता से समझने, अवधारणाओं को स्पष्ट करने, नियमित अभ्यास करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का एक विश्वसनीय साथी है।

इस सामग्री में विषय-वस्तु को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप सरल, व्यवस्थित एवं दक्षता-आधारित दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि इसे हमारे शिक्षकों के अनुभव, नवाचार और विद्यार्थियों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने समृद्ध बनाया है। मुझे विश्वास है कि यह सामग्री विद्यार्थियों की सीखने की यात्रा को अधिक सहज, रोचक और प्रभावी बनाएगी तथा उन्हें बोर्ड परीक्षाओं के साथ-साथ जीवन की व्यापक चुनौतियों के लिए भी तैयार करेगी।

मेरा विश्वास है कि जब एक जिज्ञासु विद्यार्थी, प्रेरित शिक्षक और सार्थक शिक्षण संसाधन एक साथ आते हैं, तब शिक्षा केवल उपलब्धि का माध्यम नहीं रहती, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की एक सशक्त प्रक्रिया बन जाती है। यही भावना इस विद्यार्थी सहायक सामग्री के केंद्र में है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि आप सभी सीखने की इस यात्रा में निरंतर आगे बढ़ें, अपने सपनों को नए आयाम दें और ज्ञान, संवेदनशीलता तथा नवाचार के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित।

(विकास गुप्ता)

संरक्षक

श्री विकास गुप्ता, आयुक्त, केविसं

सह-संरक्षक

सुश्री चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शैक्षिक), केविसं (मु.)

समन्वयक

श्री सोमित श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त (शैक्षिक), केविसं (मु.)
एवं
सुश्री पी बी एस उषा, संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण), केविसं (मु.)

कवर डिज़ाइन

केविसं प्रकाशन विभाग

संपादक

श्री सरदार सिंह चौहान, निदेशक, केविसं जीट भुवनेश्वर (प्रभारी)

श्री बी.एल. मोरोडिया, निदेशक, केविसं जीट ग्वालियर

श्रीमती श्रुति भार्गव, निदेशक, केविसं जीट चंडीगढ़

श्री पी आई टी राजा, निदेशक, केविसं जीट मैसूर

श्री टी प्रभुदास, निदेशक, केविसं जीट मुंबई

Content creators and reviewed by

1. श्रीमती चरणजीत सेठी, स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी, पीएम श्री के. वि. सेक्टर-31 चंडीगढ़, चंडीगढ़ संभाग
2. श्री सूर्य प्रकाश सिंह, स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी, पीएम श्री के. वि. पीलीभीत, लखनऊ संभाग
3. श्री बसंत कुमार, स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी, पीएम श्री के. वि. क्र.-3 दिल्ली छावनी, दिल्ली संभाग
4. श्री राकेश कुमार स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी, पीएम श्री के. वि. लखनपुर जम्मू, जम्मू संभाग

विषय-सूची

क्र. सं.	पाठ्यवस्तु / विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम कक्षा-11 (हिन्दी कोर)	2
2.	अपठित गद्यांश	4
3.	अपठित पद्यांश	11
	अभिव्यक्ति और माध्यम	
4.	जनसंचार माध्यम	16
5.	पत्रकारिता के विविध आयाम	19
6.	डायरी लिखने की कला	22
7.	कथा-पटकथा	24
8.	कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया	26
9.	स्ववृत्त लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र	32
10.	कोश-एक परिचय	34
	आरोह खंड	
11.	हम तौ एक एक करि जांनां - कबीर	37
12.	मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई - मीरा	42
13.	घर की याद - भवानी प्रसाद मिश्र	47
14.	चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती - त्रिलोचन	52
15.	गज़ल - दुष्यंत कुमार	57
16.	1. हे भूख ! मत मचल हे 2. हे! मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर - अक्कमहादेवी	62
17.	सबसे खतरनाक - अवतार सिंह पाश	67
18.	आओ, मिलकर बचाएँ - निर्मला पुतुल	72
	आरोह पद्य खंड	
19.	नमक का दारोगा - प्रेमचंद	77
20.	मियाँ नसीरुद्दीन - कृष्णा सोबती	82
21.	अपू के साथ ढाई साल - सत्यजित राय	87
22.	विदाई-संभाषण - बालमुकुंद गुप्त	93
23.	गलता लोहा - शेखर जोशी	99
24.	रजनी - मन्नू भंडारी	105
25.	जामुन का पेड़ - कृश्नचंदर	110
26.	भारत माता - जवाहरलाल नेहरू	117
	वितान	
27.	भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर - कुमार गंधर्व	124
28.	राजस्थान की रजत बूँदें - अनुपम मिश्र	129
29.	आलो-आँधारि - बेबी हालदार	133
30.	प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 1 से 3 (अंक योजना सहित)	137

हिंदी (आधार)
विषय कोड – 302
कक्षा 11वीं (2026-27)
परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- **प्रश्न –पत्र तीन खण्डों – खंड- क, ख और ग में होगा।**
- **खंड- क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे I सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।**
- **खंड- ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।**
- **खंड- ग में आरोह भाग – 1 एवं वितान भाग – 1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।**

भारांक–80 **निर्धारित समय – 03 घंटे**

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खंड-क (अपठित बोध)	18 अंक
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) पर आधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 1 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 3 प्रश्न = 6 अंक)	10 अंक
2	01 अपठित पद्यांश (लगभग 100 शब्दों का) पर आधारित बोध, सराहना, सौंदर्य, चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) **पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित**	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर **आधारित** लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	औपचारिक पत्र लेखन। (विकल्प सहित) (05 अंक x 01 प्रश्न)	05 अंक
5	**पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित** 04 प्रश्न (विकल्प सहित) (02 अंक x 04 प्रश्न= 8 अंक) (लगभग 40 शब्दों में), (03 अंक x 01 प्रश्न = 3 अंक) (लगभग 60 शब्दों में)	11 अंक

	खंड- ग (आरोह भाग – 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर)	40 अंक
6	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
7	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
8	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
9	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
10	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
11	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
12	वितान के पाठों पर आधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
13	**(अ) श्रवण तथा वाचन** **(ब) परियोजना कार्य**	10+10 = 20 अंक
कुल अंक		**100** अंक

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें :

1. **आरोह, भाग-1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान भाग-1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं I

आरोह भाग - 1	काव्य खंड	• कबीर (पद 2) - संतो देखत जग बौराना • मीरा (पद 2) - पग घुंगरू बांधि मीरा नाची • रामनरेश त्रिपाठी – पथिक (पूरा पाठ) • सुमित्रानंदन पंत - वे आँखें (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• कृष्णनाथ – स्पीति में बारिश (पूरा पाठ) • सैयद हैदर रज़ा - आत्मा का ताप (पूरा पाठ)

अपठित बोध

- **अपठित का अर्थ पढ़ो ➜ समझो ➜ खोजो ➜ लिखो ➜ जाँचो (भाषा जाँचो)**

अपठित बोध का अर्थ- अपठित शब्द 'अ' उपसर्ग, और 'पठ्' धातु (क्रिया) तथा 'इत' प्रत्यय से मिलकर बना है। यहाँ 'अ' का अर्थ है 'नहीं' और 'पठित' का अर्थ है 'पढ़ा हुआ' या 'पढ़ा गया' अर्थात जिसे उन्होंने अपनी पाठ्य पुस्तक में नहीं पढ़ा है। 'बोध' शब्द का अर्थ है 'समझ'। दिए गए गद्यांश अथवा पद्यांश को पढ़कर समझना होता है और उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने होते है। अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश पर आधरित प्रश्नों के उत्तर देने की विधि - संक्षिप्त सूत्र (याद रखने हेतु) पढ़ो ➜ समझो ➜ खोजो ➜ लिखो ➜ जाँचो (भाषा जाँचो) विद्यार्थी नीचे दिए गए सुझावों की सहायता से अपठित गद्यांश या पद्यांश को समझकर उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकते हैं-

1. अपठित गद्यांश/ पद्यांश को कम से कम दो या तीन बार समझ में आने तक पढ़ें। इसके पश्चात गद्यांश/ पद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और दिए गए गद्यांश /पद्यांश में संभावित उत्तरों को रेखांकित करें।
2. जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट न हों, उनके उत्तर जानने हेतु गद्यांश/पद्यांश को पुन: ध्यान से पढ़ें उत्तर खोजने का प्रयास करना चाहिए।
3. पूछे गए प्रश्नों के अनुसार उत्तर हमेशा सहज, स्पष्ट भाषा में लिखने का प्रयास करें।
4. प्रश्न के निर्धारित अंकों के योजनानुरूप उत्तर संक्षिप्त, सरल और प्रभावशाली होना चाहिए।
5. शीर्षक पर आधारित प्रश्न भी पूछा जाता है शीर्षक हमेशा गद्यांश/ पद्यांश के मूल भाव, केंद्रीय विशेषता पर आधारित होना चाहिए।

(1)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

संस्कृति और सभ्यता- ये दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति इस सबसे कहीं बारीक चीज़ है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है, मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं, मगर ये सारी चीजें हमारी सभ्यता के सबूत हैं, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती, वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन चीज़ है और वह हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन

हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं-यह हमारी संस्कृति बतलाती है। आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छह विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। अगर ये विकार बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी इतना गिर जाए कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाए। इसलिए आदमी इन विचारों पर रोक लगाता है। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज़्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज़्यादा-से-ज्यादा देशों या जातियों की संस्कृतियों से लाभ उठाकर अपनी संस्कृति का विकास किया हो।

1. गद्यांश के अनुसार संस्कृति का विकास किससे होता है?

(क) धन-संपत्ति बढ़ाने (ख) बड़े-बड़े मकान बनाने

(ग) विभिन्न देशों और जातियों के आपसी आदान-प्रदान (घ) आधुनिक साधनों के उपयोग

2. निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कथन (A): संस्कृति का विकास देशों और जातियों के आपसी आदान-प्रदान से होता है।

कारण (R): क्योंकि संस्कृति भौतिक साधनों से प्राप्त नहीं होती, बल्कि गुणों, विचारों और व्यवहारों के परिष्कार से विकसित होती है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, परंतु R असत्य है।

(घ) A असत्य है, परंतु R सत्य है।

3. स्तम्भ-I तथा स्तम्भ-II का सही मिलान कीजिए।

स्तम्भ-I	**स्तम्भ-II**
(i) सभ्यता	(a) विनय और विनम्रता
(ii) संस्कृति	(b) बाहरी उन्नति
(iii) मानवीयता	(c) विकारों पर नियंत्रण

(क) (i)-(b), (ii)-(a), (iii)-(c) (ख) (i)-(a), (ii)-(c), (iii)-(b)

(ग) (i)-(c), (ii)-(b), (iii)-(a) (घ) (i)-(b), (ii)-(c), (iii)-(a)

4. संस्कृति से आप क्या समझते हैं?

5. सभ्यता व संस्कृति में क्या अंतर है?

6. मानव की मानवता किस बात में निहित है?

7. लेखक ने संस्कृति को "सूक्ष्म", "महीन" और "भीतरी उन्नति" से संबंधित बताया है। प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर समझाइए कि मनुष्य की संस्कृति उसके व्यवहार, रुचि और विचारों में किस प्रकार प्रकट होती है?

उत्तर माला 1. (ग) **2.** (क) **3.** (क)

4. संस्कृति मनुष्य की आंतरिक उन्नति, उसके गुणों, विचारों, व्यवहार, विनम्रता और जीवन-मूल्यों का समष्टिगत रूप है।

5. सभ्यता मनुष्य की बाहरी उन्नति एवं भौतिक प्रगति है, जैसे- सड़कें, भवन, वस्त्र, साधन आदि। संस्कृति मनुष्य का आंतरिक परिष्कार है– करुणा, विनम्रता, सद्गुण, रुचि और व्यवहार। सभ्यता दिखती है; संस्कृति सूक्ष्म होती है।

6. करुणा, प्रेम, परोपकार तथा दुष्प्रवृत्तियों– काम, क्रोध, लोभ आदि पर नियंत्रण में निहित है। जो व्यक्ति इन विकारों पर संयम रखता है, वही सच्चा मानव कहलाता है।

7. व्यवहार की सौम्यता, विनम्रता, दूसरों से संवाद के तरीके, कला-सौंदर्य की परख तथा सोच की परिपक्वता में दिखाई देती है।

(2)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

सभी मनुष्य स्वभाव से ही साहित्य-स्रष्टा नहीं होते, पर साहित्य-प्रेमी होते हैं। मनुष्य का स्वभाव ही है सुंदर देखने का। घी का लड्डू टेढ़ा भी मीठा ही होता है, पर मनुष्य गोल बनाकर उसे सुंदर कर लेता है। मूर्ख-से-मूर्ख हलवाई के यहाँ भी गोल लड्डू ही प्राप्त होता है; लेकिन सुंदरता को सदा-सर्वदा तलाश करने की शक्ति साधना के द्वारा प्राप्त होती है। उच्छृंखलता और सौंदर्य-बोध में अंतर है। बिगड़े दिमाग का युवक परायी बहू-बेटियों के घूरने को भी सौंदर्य-प्रेम कहा करता है, हालाँकि यह संसार की सर्वाधिक असुंदर बात है। जैसा कि पहले ही बताया गया है, सुंदरता सामंजस्य में होती है और सामंजस्य का अर्थ होता है, किसी चीज़ का बहुत अधिक और किसी का बहुत कम न होना। इसमें संयम की बड़ी ज़रूरत है। इसलिए सौंदर्य-प्रेम में संयम होता है, उच्छृंखलता नहीं। इस विषय में भी साहित्य ही हमारा मार्ग-दर्शक हो सकता है। जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता उसे दूसरे से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य कुछ ऐसी जटिलताओं में आ फँसा है कि उसके भावों को ठीक-ठीक पहचानना हर समय संभव नहीं होता। ऐसी अवस्था में हमें मनीषियों के चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। इस दिशा में साहित्य के अलावा दूसरा उपाय नहीं है। मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य है और उसे मनुष्य पद का अधिकारी बने रहने के लिए साहित्य ही एकमात्र सहारा है। यहाँ साहित्य से हमारा मतलब उसकी सब तरह ही सात्त्विक चिंतन-धारा से है।

1. सुंदरता को तलाश करने की शक्ति कैसे प्राप्त होती है?

(क) संयम के द्वारा (ख) साधना के द्वारा

(ग) साहित्य प्रेम के द्वारा (घ) उच्छृंखलता के द्वारा

2. निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कथन (A): सभी मनुष्य स्वभाव से साहित्य-स्रष्टा नहीं होते, पर साहित्य-प्रेमी होते हैं।

कारण (R): साहित्य मनुष्य को सुंदरता, संयम और सामंजस्य का बोध कराता है।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(ख) कथन सही है, पर कारण गलत है।

(ग) कथन गलत है, पर कारण सही है।

(घ) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

3. स्तम्भ-I तथा स्तम्भ-II का सही मिलान कीजिए।

स्तम्भ-I	**स्तम्भ-II**
(i) साधना	(a) किसी चीज़ का न बहुत अधिक और न बहुत कम होना
(ii) सामंजस्य	(b) सुंदरता को तलाश करने की शक्ति
(iii) सौंदर्य-बोध	(c) संयम और संतुलन

(क) (i)-(b), (ii)-(c), (iii)-(a) (ख) (i)-(a), (ii)-(c), (iii)-(b)

(ग) (i)-(c), (ii)-(b), (iii)-(a) (घ) (i)-(b), (ii)-(a), (iii)-(c)

4. 'साहित्य स्रष्टा' का क्या अर्थ है?

5. जीवन में संयम की जरूरत क्यों है?

6. लेखक ने संसार की सबसे बुरी बात किसे माना है और क्यों?

7. उच्छृंखलता और सौंदर्य-बोध में क्या अंतर है?

उत्तरमाला

1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ)

4. साहित्य का सर्जक, जो साहित्य की रचना करता है।

5. संयम से संतुलन बना रहता है एवं विवेकशीलता आती है।

6. दूसरों की बहू-बेटियों को घूरना, क्योंकि यह असुंदर एवं अशिष्ट व्यवहार है।

7. उच्छृंखलता में असंयम होता है, जबकि सौंदर्य-बोध में संयम और सामंजस्य होता है।

(3)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

सिनेमा जगत के अनेक नायक-नायिकाओं, गीतकारों, कहानीकारों, और निर्देशकों को हिंदी के माध्यम से पहचान मिली है। यही कारण है कि गैर-हिंदी भाषी कलाकार भी हिंदी की ओर आए हैं। समय और समय के उभरते सच को परदे पर पूरी अर्थवत्ता में धारण करने वाले ये लोग दिखावे के लिए भले ही अंग्रेज़ी के आग्रही हों लेकिन बुनियादी और ज़मीनी हकीकत यही है कि इनकी पूँजी, इनकी प्रतिष्ठा की एकमात्र निमित्त हिंदी ही है। लाखों-करोड़ों दिलों की धड़कनों पर राज करने वाले ये सितारे हिंदी फ़िल्मों और भाषा के सबसे बड़े प्रतिनिधि हैं। छोटे परदे (टी.वी.) ने आम जनता के घरों

में अपना मुकाम बनाया तो लगा हिंदी आम भारतीय की जीवन शैली बन गई। हमारे आदि ग्रंथों - रामायण और महाभारत को जब हिंदी में प्रस्तुत किया गया तो सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल गया । 'बुनियाद' और 'हम लोग' से शुरू हुआ सोप ऑपेरा का दौर हो या सास-बहू धारावाहिकों का, ये सभी हिंदी की रचनात्मकता और उर्वरता के प्रमाण हैं । 'कौन बनेगा करोड़पति' से करोड़पति चाहे जो बने हों, पर सदी के महानायक की हिंदी हर दिल की धड़कन और हर धड़कन की भाषा बन गई। सुर और संगीत की प्रतियोगिता में कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, असम, सिक्किम जैसे गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों ने हिंदी गीतों के माध्यम से पहचान बनाई। ज्ञान गंभीर 'डिस्कवरी चैनल, हो या बच्चों को रिझाने-लुभाने वाला 'टॉम एंड जेरी' इनके हिंदी उच्चारण की मिठास और गुणवत्ता अद्भुत, प्रभावी और ग्राह्य है। धर्म - संस्कृति, कला - कौशल, ज्ञान-विज्ञान सभी कार्यक्रम हिंदी की संप्रेषणीयता के प्रमाण हैं।

1. सिनेमा जगत के अनेक कलाकारों को पहचान किस माध्यम से मिली है?

(क) अंग्रेज़ी के माध्यम से (ख) हिंदी के माध्यम से

(ग) क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से (घ) विदेशी भाषाओं के माध्यम से

2. स्तम्भ 'क' का स्तम्भ 'ख' से सही मिलान कीजिए -

स्तम्भ 'क'	**स्तम्भ 'ख'**
(A) रामायण और महाभारत	(i) हिंदी गीतों से पहचान
(B) कौन बनेगा करोड़पति	(ii) सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल गया
(C) गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकार	(iii) हर दिल की धड़कन बनी हिंदी
(D) हिंदी फ़िल्मों के सितारे	(iv) प्रतिष्ठा और पूँजी का आधार हिंदी

(क) A-(ii), B-(iii), C-(i), D-(iv) (ख) A-(iii), B-(ii), C-(iv), D-(i)

(ग) A-(i), B-(iv), C-(ii), D-(iii) (घ) A-(iv), B-(i), C-(iii), D-(ii)

3. निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कथन (A): गैर-हिंदी भाषी कलाकारों ने भी हिंदी के माध्यम से पहचान बनाई है।

कारण (R): हिंदी व्यापक जनसमूह तक पहुँचने वाली लोकप्रिय और प्रभावी भाषा है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, परंतु R असत्य है।

(घ) A असत्य है, परंतु R सत्य है।

4. 'रामायण' और 'महाभारत' के हिंदी प्रसारण का क्या प्रभाव पड़ा?

5. 'कौन बनेगा करोड़पति' के संदर्भ में लेखक ने हिंदी की किस विशेषता को रेखांकित किया है?

6. गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों ने अपनी पहचान किस प्रकार बनाई?

7. हिंदी की संप्रेषणीयता को सिद्ध करने वाले किन-किन क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर माला **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (क)

4. 'रामायण' और 'महाभारत' के हिंदी प्रसारण के समय सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल गया। इससे उनकी लोकप्रियता तथा हिंदी की व्यापक स्वीकार्यता सिद्ध हुई।

5. लेखक ने बताया है कि 'कौन बनेगा करोड़पति' के माध्यम से हिंदी हर दिल की धड़कन और जनसामान्य की भाषा बन गई।

6. कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, असम और सिक्किम जैसे गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों ने हिंदी गीतों के माध्यम से अपनी पहचान बनाई।

7. धर्म-संस्कृति, कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान, मनोरंजन, संगीत तथा शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी की संप्रेषणीयता सिद्ध होती है।

(4)

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

आज का युग डिजिटल क्रांति का युग है। इंटरनेट और स्मार्टफोन ने मानव जीवन को अभूतपूर्व गति प्रदान की है। शिक्षा, व्यापार, बैंकिंग, चिकित्सा तथा संचार के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक ने अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं। अब लोग घर बैठे ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं तथा विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से तुरंत संपर्क स्थापित कर सकते हैं। इससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है। हालाँकि डिजिटल तकनीक के बढ़ते उपयोग ने कुछ नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग युवाओं में एकाग्रता की कमी, मानसिक तनाव तथा समय की बर्बादी का कारण बन रहा है। इसके अतिरिक्त साइबर अपराध, डेटा चोरी और फर्जी सूचनाओं का प्रसार भी गंभीर समस्याएँ बनकर उभरे हैं। कई बार लोग बिना सत्यता की जाँच किए समाचारों को साझा कर देते हैं, जिससे भ्रम और सामाजिक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल साक्षरता आज के समय की एक अनिवार्य आवश्यकता है। इसका अर्थ केवल तकनीक का उपयोग करना नहीं, बल्कि उसका सुरक्षित, जिम्मेदार और विवेकपूर्ण उपयोग करना भी है। प्रत्येक नागरिक को साइबर सुरक्षा के नियमों की जानकारी होनी चाहिए तथा इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं का आलोचनात्मक दृष्टि से मूल्यांकन करना चाहिए। यदि डिजिटल तकनीक का उपयोग नैतिकता और जिम्मेदारी के साथ किया जाए तो यह समाज के विकास का सशक्त माध्यम बन सकती है। अतः डिजिटल सुविधाओं का लाभ उठाते हुए उनसे जुड़ी चुनौतियों के प्रति भी सजग रहना आवश्यक है।

1. डिजिटल तकनीक ने किन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं?

(क) केवल शिक्षा में (ख) केवल व्यापार में

(ग) शिक्षा, व्यापार, बैंकिंग, चिकित्सा तथा संचार में (घ) केवल मनोरंजन में

2. निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कथन (A): डिजिटल साक्षरता आज के समय की एक अनिवार्य आवश्यकता है।

कारण (R): डिजिटल साक्षरता का अर्थ केवल तकनीक का उपयोग करना नहीं, बल्कि उसका सुरक्षित, जिम्मेदार और विवेकपूर्ण उपयोग करना भी है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।
(ग) A सत्य है, परंतु R असत्य है।
(घ) A असत्य है, परंतु R सत्य है।

3. स्तम्भ-I तथा स्तम्भ-II का सही मिलान कीजिए।

स्तम्भ-I	**स्तम्भ-II**
(i) डिजिटल साक्षरता	(a) डेटा चोरी
(ii) साइबर अपराध	(b) सुरक्षित एवं जिम्मेदार तकनीकी उपयोग
(iii) सोशल मीडिया का दुरुपयोग	(c) मानसिक तनाव एवं एकाग्रता की कमी

(क) (i)-(b), (ii)-(c), (iii)-(a)
(ख) (i)-(a), (ii)-(c), (iii)-(b)
(ग) (i)-(c), (ii)-(b), (iii)-(a)
(घ) (i)-(b), (ii)-(a), (iii)-(c)

4. डिजिटल तकनीक से लोगों के जीवन में क्या परिवर्तन आए हैं?

5. साइबर अपराध और फर्जी सूचनाएँ समाज के लिए किस प्रकार चुनौती बन गई हैं?

6. डिजिटल साक्षरता से क्या अभिप्राय है?

7. लेखक के अनुसार डिजिटल तकनीक का उपयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए?

उत्तरमाला 1. (ग) **2.** (क) **3.** (घ)

4. डिजिटल तकनीक के कारण शिक्षा, बैंकिंग, व्यापार और संचार के कार्य अधिक सरल, तेज और सुविधाजनक हो गए हैं। इससे समय और श्रम की बचत होती है।

5. साइबर अपराध, डेटा चोरी और फर्जी सूचनाएँ लोगों को भ्रमित करती हैं तथा सामाजिक तनाव और असुरक्षा की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं।

6. डिजिटल साक्षरता का अर्थ तकनीक का सुरक्षित, जिम्मेदार और विवेकपूर्ण उपयोग करना तथा इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं का सही मूल्यांकन करना है।

7. लेखक के अनुसार डिजिटल तकनीक का उपयोग नैतिकता, जिम्मेदारी और सावधानी के साथ किया जाना चाहिए, ताकि उसके लाभ प्राप्त किए जा सकें और दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

अपठित काव्यांश (1)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

मैं पेड़ हूँ, छाया देता,
फल-फूलों से जग को भरता।
धूप, वर्षा सब कुछ सहता,
फिर भी जीवन हँसकर जीता।
पक्षी मुझ पर नीड़ बनाते,
थके पथिक विश्राम भी पाते।
शुद्ध वायु का दान करूँ मैं,
धरती का सम्मान करूँ मैं।

मत काटो मुझको मानव,
मैं प्रकृति का सुंदर सावन।
मुझसे हरियाली मुस्काती,
जीवन में खुशियाँ भर जाती।
यदि मुझको तुम बचाओगे,
भविष्य अपना सुरक्षित पाओगे।
पेड़ लगाओ, वृक्ष बचाओ,
धरती माँ का मान बढ़ाओ।

1. कविता में पेड़ स्वयं को किस रूप में प्रस्तुत करता है?

(क) प्रकृति का रक्षक (ख) मनोरंजन का साधन
(ग) व्यापार का साधन (घ) ईंधन का स्रोत

2. कविता का मुख्य संदेश क्या है?

(क) पशु-पक्षियों का संरक्षण (ख) वृक्षों का महत्व और संरक्षण
(ग) वर्षा का महत्व (घ) प्राकृतिक आपदाएँ

3. कथन (A): पेड़ मानव जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।
कारण (R): पेड़ शुद्ध वायु, छाया तथा पर्यावरण संतुलन प्रदान करते हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता।
(ग) कथन (A) सत्य है, परन्तु कारण (R) असत्य है।
(घ) कथन (A) असत्य है, परन्तु कारण (R) सत्य है।

4. कविता के अनुसार पेड़ मानव को क्या प्रदान करते हैं?

5. कविता में पेड़ों के दो प्रमुख लाभ कौन से बताए गए हैं?

6. कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1. (क) **2.** (ख) **3.** (क)

4. पेड़ मानव को शुद्ध वायु, छाया तथा फल-फूल प्रदान करते हैं।

5. कविता में पेड़ों के दो प्रमुख लाभ पेड़ शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। पेड़ छाया और फल-फूल देते हैं। वे पर्यावरण संतुलन बनाए रखते हैं।

6. पेड़ों के महत्व और उनके संरक्षण का संदेश देना है। पेड़ हमें छाया, फल-फूल, शुद्ध वायु तथा पर्यावरण का संतुलन प्रदान करते हैं। मानव जीवन को सुखद बनाते हैं।

(2)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

चिट्ठी आई गाँव से मेरे,
ले आई संदेश सुहाने।
माँ ने लिखा - बेटा, आ जाना,
सूने हैं आँगन के तराने।
बाबूजी ने खेतों की बातें,
फसलों की मुस्कान लिखी।
बहना ने राखी का त्योहार,
और मिलन की आस लिखी।

पढ़ते-पढ़ते भीग गईं आँखें,
यादों का सागर लहराया।
दूर नगर की भीड़ में बैठा,
मन फिर अपने गाँव को आया।
पाती केवल कागज़ नहीं है,
यह तो प्रेम का बंधन है।
रिश्तों की मधुर सुगंध समेटे,
जीवन का अमूल्य धन है।

1. कविता में 'पाती' किसका प्रतीक है?

(क) शिक्षा का (ख) प्रेम और आत्मीयता का (ग) संघर्ष का (घ) प्रकृति का

2. पाती पढ़कर कवि की आँखें क्यों भीग जाती हैं?

(क) दुख के कारण (ख) गाँव और परिवार की याद आने के कारण
(ग) बीमारी के कारण (घ) क्रोध के कारण

3. कथन (A): पाती रिश्तों को जोड़ने का कार्य करती है।
कारण (R): पाती में परिवार के सदस्यों की भावनाएँ और स्नेह व्यक्त होते हैं।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता।
(ग) कथन (A) सत्य है, परन्तु कारण (R) असत्य है।
(घ) कथन (A) असत्य है, परन्तु कारण (R) सत्य है।

4. कविता में बहन किस त्योहार का उल्लेख करती है?

5. काव्यांश में माँ की किन भावनाओं को व्यक्त किया गया है?

6. कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर काव्यांश -2 1. (ख) **2.** (ख) **3.** (क)

4. कविता में बहन राखी के त्योहार का उल्लेख करती है।

5. याद करती है। आने की प्रतीक्षा करती है। उसके प्रति स्नेह और अपनापन व्यक्त करती है।

6. पाती प्रेम और आत्मीयता का प्रतीक है। यह परिवार के सदस्यों को भावनात्मक रूप से जोड़ती है। कविता रिश्तों के महत्व को दर्शाती है।

(3)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

नारी अब कमजोर नहीं है,
उसने अपनी राह बनाई।
शिक्षा, साहस और परिश्रम से,
जीवन में पहचान बनाई।
घर-आँगन से लेकर जग तक,
हर क्षेत्र में बढ़ती जाती।
ज्ञान, कला, विज्ञान, खेलों में,
नई सफलताएँ अपनाती।

अपने अधिकारों को समझकर,
अन्याय के विरुद्ध खड़ी है।
आत्मविश्वास और संकल्पों से,
हर बाधा से आगे बढ़ी है।
नारी शक्ति का सम्मान करें,
यही समाज की शान है।
समान अवसर, समान अधिकार,
प्रगति का यही विधान है।

1. नारी की सफलता का मुख्य आधार क्या बताया गया है?

(क) धन (ख) शिक्षा, साहस और परिश्रम (ग) भाग्य (घ) दूसरों पर निर्भरता

2. कविता के अनुसार नारी किन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर रही है?

(क) केवल शिक्षा में (ख) केवल खेलों में

(ग) ज्ञान, कला, विज्ञान और खेलों में (घ) केवल घर-परिवार में

3. कथन (A): नारी आज समाज में अपनी अलग पहचान बना रही है।

कारण (R): नारी शिक्षा, आत्मविश्वास और परिश्रम के बल पर आगे बढ़ रही है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन (A) सत्य है, परन्तु कारण (R) असत्य है।

(घ) कथन (A) असत्य है, परन्तु कारण (R) सत्य है।

4. नारी किन गुणों के बल पर बाधाओं को पार करती है?

5. काव्यांश के अनुसार नारी सशक्तिकरण का वर्णन कीजिए।

6. काव्यांश में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- काव्यांश - 1. (ख) 2. (ग) 3. (क)

4. कविता में नारी आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के बल पर बाधाओं को पार करती है।

5. नारी शिक्षा और परिश्रम के माध्यम से आगे बढ़ रही है। अधिकारों के प्रति जागरूक है। वह समाज के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही है।

6. नारी सशक्तिकरण समाज की प्रगति का आधार है। महिलाओं को समान अवसर और समान अधिकार मिलने चाहिए। नारी सम्मान, आत्मनिर्भरता और समानता का संदेश दिया है।

(4)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

लड़ने के लिए चाहिए
थोड़ी- सी सनक, थोड़ा- सा पागलपन
और एक आवाज को बुलंद करते हुए
मुफ्त में मर जाने का हुनर
बहुत समझदार और सुलझे हुए लोग
नहीं लड़ सकते कोई लड़ाई
नहीं लड़ सकते कोई क्रांति
जब घर में लगी हो भीषण आग
आग की जद में हों बहनें और बेटियाँ
तो आग के सीने पर पाँव रखकर
बढ़कर आगे उन्हें बचा लेने के लिए
नहीं चाहिए कोई दर्शन या कोई महान विचार
चाहिए तो बस
थोड़ी- सी सनक, थोड़ा- सा पागलपन
और एक खिलखिलाहट को बचाने के लिए
झुलस जाने का हुनर |

प्रश्न 1. 'मुफ्त में मर जाने का हुनर' पंक्ति के माध्यम से कवि समाज के किस आदर्श चरित्र को रेखांकित करना चाहता है?

(क) जो बिना सोचे-समझे अपने जीवन को व्यर्थ के विवादों में गँवा देता है।

(ख) जो किसी व्यक्तिगत लाभ,यश या बदले की भावना के बिना देश-समाज के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का जज्बा रखता है।

(ग) जो आर्थिक रूप से विपन्न होने के कारण स्वेच्छा से युद्ध में भाग लेता है।

(घ) जो अत्यधिक भावुकता व अवसाद में आकर आत्मघाती कदम उठाता है।

प्रश्न 2. कवि के अनुसार 'बहुत समझदार और सुलझे हुए लोग' किसी क्रांति या सामाजिक लड़ाई का नेतृत्व क्यों नहीं कर पाते?

(क) क्योंकि बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ होने के कारण वे शारीरिक श्रम और संघर्ष से कतराते हैं।

(ख) क्योंकि वे हर विषम परिस्थिति में केवल अपना व्यक्तिगत नफ़ा-नुकसान, तार्किक लाभ और सुरक्षा सुनिश्चित करने में लग जाते हैं।

(ग) वे मानते हैं कि समाज की समस्याओं का समाधान केवल शांतिपूर्ण वार्ताओं से संभव है।

(घ) क्योंकि उनके पास व्यावहारिक धरातल पर लड़ने के लिए रणनीतियों का पूर्ण अभाव है।

प्रश्न 3. काव्यांश के कथ्य के आधार पर निम्नलिखित कथनों (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:

कथन (A): जब अपनों या समाज के अस्तित्व पर भीषण संकट मँडरा रहा हो, तब किसी महान दार्शनिक विचार या दर्शन की कोई उपयोगिता नहीं रह जाती।

कारण (R): विपरीत एवं आपातकालीन परिस्थितियों में तात्कालिक संकल्प, एक विशेष आंतरिक जुनून और आत्म-बलिदान का हुनर ही काम आता है।

(क) कथन (A) त्रुटिपूर्ण है, परंतु कारण (R) पूर्णतः सत्य है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही असत्य हैं।

(ग) कथन (A) सत्य है, परंतु कारण (R) उसकी सही तार्किक व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व सटीक व्याख्या करता है।

प्रश्न 4. 'एक खिलखिलाहट को बचाने के लिए झुलस जाने का हुनर' पंक्ति में 'खिलखिलाहट' शब्द का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

प्रश्न 5. काव्यांश में प्रयुक्त 'सनक' और 'पागलपन' शब्द सामान्यतः नकारात्मक माने जाते हैं, परंतु कवि ने इन्हें क्रांति के लिए अनिवार्य तत्व क्यों माना है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्रश्न 6. 'जब घर में लगी हो भीषण आग' वाले प्रसंग के माध्यम से कवि वैचारिक शून्यता को तोड़कर किस प्रकार के व्यावहारिक मानवीय धर्म का संदेश दे रहा है?

उत्तर- 1 (ख) **2** (ख) **3** (घ)

उत्तर 4. यहाँ 'खिलखिलाहट' शब्द समाज की मासूमियत, घर की बहन-बेटियों की सहज प्रसन्नता, मानवीय स्वतंत्रता और एक सुरक्षित-खुशहाल समाज के अस्तित्व का प्रतीक है।

उत्तर 5. काव्यांश में 'सनक' और 'पागलपन' नकारात्मक अर्थ में नहीं, बल्कि एक निस्वार्थ तीव्र इच्छाशक्ति और अदम्य साहस के रूप में है। क्रांति या किसी भी बड़ी सामाजिक विसंगति के विरुद्ध लड़ने के लिए अत्यधिक चतुरता या तार्किकता बाधक बन जाती है।

उत्तर 6. कवि यह संदेश देना चाहता है कि जब समाज या परिवार पर कोई प्रत्यक्ष और विनाशकारी संकट (जैसे अत्याचार, शोषण या दमन) मँडरा रहा हो, तो उस समय केवल बैठकर निष्क्रिय बने रहना, बड़ी-बड़ी बातें करना या दार्शनिक विचार साझा करना पूरी तरह निरर्थक है।

अभिव्यक्ति और माध्यम

(पाठ संख्या 1,2,9,10,14,15 तथा 16)

पाठ-1 जनसंचार माध्यम

•संचार - अर्थ •संचार के तत्व •संचार के प्रकार •जनसंचार की विशेषताएँ• कार्य •जनसंचार के रूप •प्रिंट मीडिया, •समाचार-पत्र, •पत्रिकाएँ, •पुस्तकें, •पोस्टर, •बैनर •इलेक्ट्रॉनिक •मीडिया, •रेडियो, •टेलीविजन, •सिनेमा, •इंटरनेट

1. संचार का क्या अर्थ है?

उत्तर- संचार वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, सूचनाओं तथा संदेशों को दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाता है।

2. कूटीकरण क्या है?

उत्तर- जब संचारक अपने विचारों या संदेश को किसी भाषा, संकेत, चित्र या प्रतीक के माध्यम से व्यक्त करता है, तो इस प्रक्रिया को कूटीकरण कहते हैं।

3. फीडबैक क्या है?

उत्तर- संचारक द्वारा भेजे गए संदेश को प्राप्त करने के बाद प्राप्तकर्ता जो प्रतिक्रिया देता है, उसे फीडबैक कहते हैं। फीडबैक से यह पता चलता है कि संदेश सही रूप में समझा गया है या नहीं।

4. शोर किसे कहते हैं?

उत्तर- संचार प्रक्रिया में होने वाली किसी भी प्रकार की बाधा को शोर कहते हैं। यह तकनीकी खराबी, भाषा संबंधी कठिनाई या बाहरी व्यवधान के रूप में हो सकती है, जिससे संदेश प्रभावित होता है।

5. जनसंचार क्या है?

उत्तर- जब समाचार-पत्र, रेडियो, यांत्रिक आदि माध्यमों के द्वारा किसी संदेश या सूचना को एक साथ बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचाया जाता है, तो उसे जनसंचार कहा जाता है।

6. पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- समाचारों और सूचनाओं के संकलन, संपादन तथा प्रकाशन की प्रक्रिया को पत्रकारिता कहते हैं। पत्रकारिता समाज को जागरूक बनाने, सूचना पहुँचाने और जनमत निर्माण करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

7. हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कौन-सा था?

उत्तर- हिन्दी का पहला समाचार-पत्र **'उदंत मार्तंड'** था। इसका प्रकाशन 30 मई 1826 को कोलकाता से प्रारंभ हुआ था। इसके संपादक पंडित जुगल किशोर शुक्ल थे।

8. रेडियो का आविष्कार किसने किया?

उत्तर- रेडियो का आविष्कार जी मार्कोनी ने 1895 ई. में किया था। उन्होंने वायरलेस तकनीक के माध्यम से ध्वनि और संकेतों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने में सफलता प्राप्त की।

9. संचार के तत्वों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर- संचार के सात प्रमुख तत्व होते हैं–स्रोत, कूटीकरण, संदेश, प्राप्तकर्ता, कूटवाचन, फीडबैक तथा शोर। स्रोत संदेश भेजता है, कूटीकरण के माध्यम से उसे भाषा में व्यक्त करता है और प्राप्तकर्ता उसे ग्रहण कर समझता है। प्राप्तकर्ता द्वारा दी गई प्रतिक्रिया फीडबैक कहलाती है। संचार में आने वाली किसी भी बाधा को शोर कहा जाता है। ये सभी तत्व मिलकर संचार प्रक्रिया को पूर्ण करते हैं।

10 . संचार के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- संचार के प्रमुख प्रकार हैं– मौखिक, अमौखिक, अंतःवैयक्तिक, अंतर्वैयक्तिक, समूह संचार तथा जनसंचार। मौखिक संचार बोलकर किया जाता है, जबकि अमौखिक संचार संकेतों द्वारा होता है। अंतःवैयक्तिक संचार व्यक्ति का स्वयं से संवाद है तथा अंत:वैयक्तिक संचार दो व्यक्तियों के बीच होता है। समूह संचार एक से अधिक व्यक्तियों के किसी समूह के बीच तथा जनसंचार यांत्रिक माध्यम से बड़े जनसमूह के साथ किया जाता है।

11. जनसंचार की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- जनसंचार का दायरा अत्यंत व्यापक होता है क्योंकि इसके माध्यम से लाखों लोगों तक सूचना पहुँचाई जाती है। इसकी प्रकृति सार्वजनिक होती है। इसमें संचारक और प्राप्तकर्ता का प्रत्यक्ष संपर्क नहीं होता। फीडबैक सामान्यतः देर से प्राप्त होता है। जनसंचार में समाचार संगठनों और द्वारपालों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो सूचना की दिशा और स्वरूप निर्धारित करते हैं।

4. जनसंचार के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- जनसंचार का मुख्य कार्य लोगों तक सूचना पहुँचाना है। इसके अतिरिक्त यह समाज को शिक्षित करता है, स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करता है तथा विभिन्न सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति जागरूक बनाता है। जनसंचार जनमत निर्माण करने और लोगों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए मंच प्रदान करने का कार्य भी करता है।

5. पत्रकारिता के प्रमुख कार्य लिखिए।

उत्तर- पत्रकारिता का प्रमुख कार्य समाचारों और सूचनाओं का संकलन, संपादन तथा प्रकाशन करना है। यह जनता को देश-दुनिया की घटनाओं से अवगत कराती है। पत्रकारिता सामाजिक समस्याओं को उजागर करती है, जनमत निर्माण करती है तथा जनता और सरकार के बीच सेतु का कार्य करती है। इसी कारण इसे लोकतंत्र का **चौथा स्तंभ** कहा जाता है।

6. रेडियो के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- रेडियो जनसंचार का एक सस्ता, सुलभ और लोकप्रिय माध्यम है। यह दूर-दराज़ क्षेत्रों तक भी आसानी से पहुँच जाता है। रेडियो शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य और मनोरंजन संबंधी कार्यक्रमों के

माध्यम से लोगों को उपयोगी जानकारी प्रदान करता है। राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विकास में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

7. टेलीविजन के महत्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर- टेलीविजन दृश्य और श्रव्य दोनों प्रकार का जनसंचार माध्यम है। यह समाचार, शिक्षा, खेल, मनोरंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रभावी साधन है। इसके माध्यम से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का सीधा प्रसारण देखा जा सकता है।

8. इंटरनेट को आधुनिक जनसंचार का सबसे प्रभावशाली माध्यम क्यों कहा जाता है?

उत्तर- इंटरनेट आधुनिक युग का सबसे प्रभावशाली जनसंचार माध्यम है क्योंकि इसमें समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा सभी के गुण मौजूद हैं। इसकी पहुँच विश्वव्यापी है तथा सूचना का आदान-प्रदान बहुत तेजी से होता है। उपयोगकर्ता सूचना प्राप्त करने के साथ-साथ अपनी प्रतिक्रिया भी दे सकता है।

9. जनसंचार के सकारात्मक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- जनसंचार के कारण सूचना का त्वरित आदान-प्रदान संभव हुआ है। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और संचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। लोगों को देश-दुनिया की घटनाओं की जानकारी आसानी से मिल जाती है। जनसंचार सामाजिक जागरूकता बढ़ाने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में भी सहायक है।

10. जनसंचार के नकारात्मक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- जनसंचार के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। इसके कारण हिंसा, अश्लीलता और भ्रामक सूचनाओं का प्रसार हो सकता है। कई बार लोग आभासी दुनिया में अधिक समय बिताने लगते हैं, जिससे सामाजिक संबंध प्रभावित होते हैं।

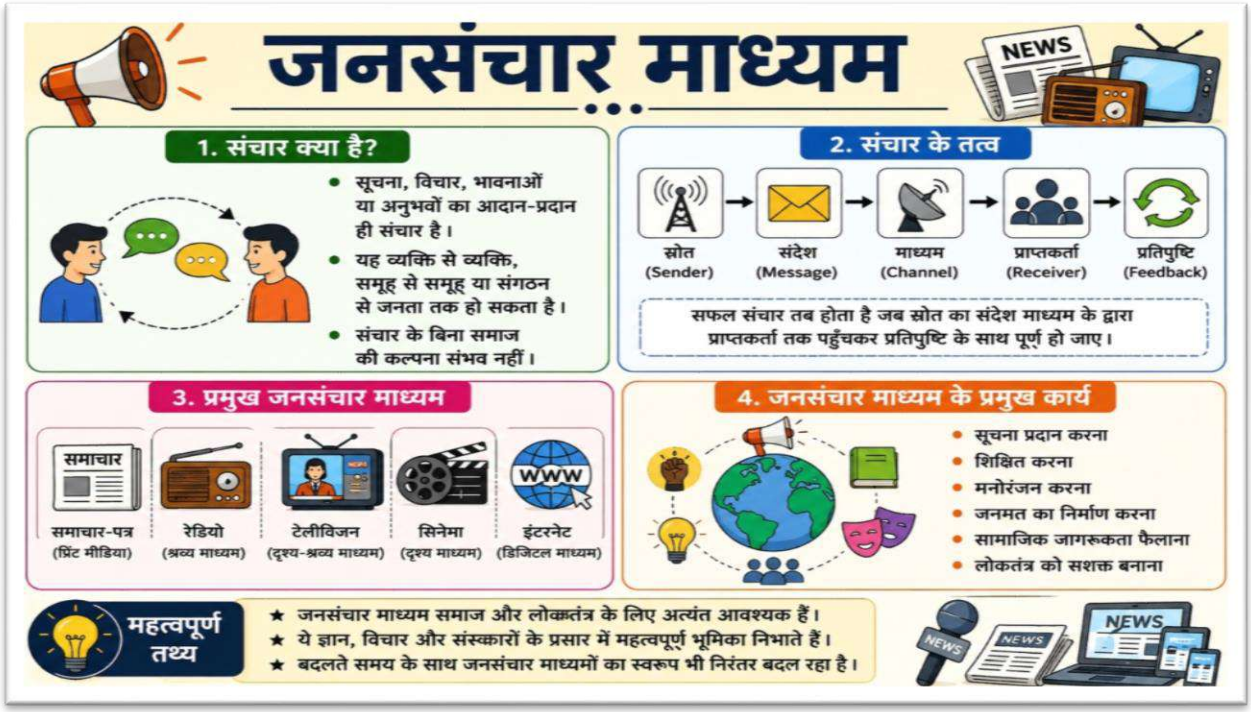

पाठ-2 पत्रकारिता के विविध आयाम

- पत्रकारिता • संपादन • संपादकीय • कार्टून कोना • रेखांकन और कार्टोग्राफ •
- पत्रकारिता के प्रकार : खोजपरक •विशेषीकृत •वॉचडाग • एडवोकेसी •वैकल्पिक •
- पीत पत्रकारिता • ऑनलाइन पत्रकारिता

प्रश्न 01. मीडिया और पत्रकारिता में क्या संबंध है?

उत्तर- मीडिया सूचना के प्रसार का माध्यम है, जबकि पत्रकारिता सूचना के संग्रह, संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया है।

प्रश्न 02. पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- पत्रकारिता का संबंध सूचनाओं को संकलित और संपादित कर आम पाठकों तक पहुँचाने से है। इसमें संपादकीय, लेख, कार्टून आदि भी होते हैं। इनमें खोजपरक पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता और एडवोकेसी पत्रकारिता प्रमुख हैं।

प्रश्न 03. पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ क्यों कहा जाता है?

उत्तर- पत्रकारिता सरकार, जनता औरप्रशासन के बीच सेतु का कार्य करती है तथा सत्ता की गतिविधियों पर निगरानी रखकर लोकतंत्र को मजबूत बनाती है।

प्रश्न 04. समाचार क्या है?

उत्तर- समाचार किसी भी ऐसी ताज़ी घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है, जिसमें अधिक-से-अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक-से-अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।

प्रश्न 05. समाचार के तत्व कौन-कौन से हैं?

उत्तर- तत्व :- (1) नवीनता (2) निकटता (3) प्रभाव (4) जनरुचि (5) टकराव या संघर्ष (6) महत्वपूर्ण लोग (7) उपयोगी जानकारियाँ (8) अनोखापन (9) पाठकवर्ग (10) नीतिगत ढाँचा।

प्रश्न 06. पत्रकारिता के सिद्धांत कौन-कौन से हैं ?

उत्तर- पत्रकारिता के निम्नलिखित सिद्धांत हैं - (1) तथ्यों की शुद्धता (2) वस्तुपरकता (3) निष्पक्षता (4) संतुलन (5) स्रोत।

प्रश्न 07. प्रिंट मीडिया से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और अन्य मुद्रित प्रकाशन प्रिंट मीडिया कहलाते हैं। इनके माध्यम से लिखित रूप में सूचनाएँ और विचार जनता तक पहुँचते हैं।

प्रश्न 08. संपादकीय पृष्ठ का क्या महत्त्व है?

उत्तर- संपादकीय पृष्ठ समाचार- पत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण पृष्ठ होता है। इस पृष्ठ पर अखबार की ओर से संपादक विभिन्न घटनाओं और समाचारों पर अपनी राय रखता है। इसे संपादकीय कहा जाता है। इसमें संपादक का नाम नहीं छापा जाता, क्योंकि यह पूरे समाचार-पत्र की राय होती है। इसे **समाचार पत्र की आवाज़** भी माना जाता है।

प्रश्न 9. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया क्या है?

उत्तर- रेडियो, टेलीविजन तथा इंटरनेट आधारित माध्यम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहलाते हैं। ये ध्वनि और दृश्य दोनों के माध्यम से समाचार प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न 10. कार्टून कोना क्या है?

उत्तर- सभी समाचार पत्रों में कार्टून कोना होता है। इसके माध्यम से की गई सटीक टिप्पणियाँ पाठक के मन को छूती हैं। कार्टून पहले पृष्ठ पर प्रकाशित हस्ताक्षरित संपादकीय हैं। इनकी चुटीली टिप्पणियाँ कई बार कड़े और धारदार संपादकीय से भी अधिक प्रभावी होती हैं |

प्रश्न 11. समाचार संकलन में संवाददाता की क्या भूमिका होती है?

उत्तर- संवाददाता घटनास्थल से समाचार एकत्रित करता है, तथ्यों की पुष्टि करता है और उन्हें समाचार संस्थान तक पहुँचाता है।

प्रश्न 12. पत्रकारिता के प्रमुख प्रकारों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर- पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं-

(1) खोजपरक पत्रकारिता- इसमें गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश की जाती है, जिन्हें दबाने या छिपाने का प्रयास किया गया हो।

(2) वॉचडॉग पत्रकारिता-मीडिया का मुख्य उत्तरदायित्व सरकार के कामकाज पर निगाह रखना है। इसमें मीडिया सरकार के कामकाज में गड़बड़ी का पर्दाफाश करती है |

(3) एडवोकेसी पत्रकारिता- इसमें अनेक समाचार संगठन किसी विचारधारा या किसी खास उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर आगे बढ़ते हैं और उसके लिए जनमत तैयार करने के लिए जोर - शोर से अभियान चलाते हैं |

प्रश्न 13. पीत पत्रकारिता क्या है ?

उत्तर- पाठकों को आकर्षित करने और मुनाफा कमाने के लिए **अफवाहों, व्यक्तिगत लांछनों और सनसनीखेज खबरों** को प्रमुखता से छापा जाता है। पत्रकारिता के सिद्धांतों को ताक पर रखकर केवल **सस्ती लोकप्रियता और टीआरपी (TRP)** बटोरना ही पीत पत्रकारिता है।

प्रश्न 14. 'संपादन' से क्या तात्पर्य है? द्वारपाल की भूमिका का निर्वाह कौन करता है?

उत्तर- किसी सामग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाना। समाचार-संगठनों में संपादक, सहायक संपादक, समाचार संपादक, उपसंपादक आदि द्वारपाल की भूमिका का निर्वाह करते हैं। उपसंपादक अपने रिपोर्टर की खबर को ध्यानपूर्वक पढ़ता है और उसकी भाषा-शैली, व्याकरण, वर्तनी तथा संबंधी अशुद्धियों को दूर करता है।

प्रश्न 15. समाचार लेखन में 'छह ककार' का क्या महत्व है?

उत्तर- क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे– इन छह प्रश्नों के उत्तर समाचार को पूर्ण और स्पष्ट बनाते हैं।

प्रश्न 16. समाचार और फीचर में क्या अंतर है?

उत्तर- समाचार तात्कालिक घटनाओं पर आधारित होता है, जबकि फीचर किसी विषय का रोचक, विस्तृत और विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण होता है।

प्रश्न 17. फीचर लेखन की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर- फीचर में रोचकता, सरल भाषा, भावनात्मकता, तथ्यात्मकता तथा विषय का विस्तृत वर्णन प्रमुख विशेषताएँ होती हैं।

प्रश्न 18.खोजी पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- किसी छिपे हुए तथ्य, भ्रष्टाचार या घोटाले की गहन जाँच-पड़ताल करके सत्य को जनता के सामने लाने वाली पत्रकारिता खोजी पत्रकारिता कहलाती है।

प्रश्न 19. समाचार का इंट्रो क्या होता है?

उत्तर- समाचार का प्रारंभिक और सबसे महत्वपूर्ण भाग इंट्रो कहलाता है। इसमें घटना की मुख्य जानकारी संक्षेप में दी जाती है।

प्रश्न 20. टेलीविजन पत्रकारिता को अधिक प्रभावी क्यों माना जाता है?

उत्तर- टेलीविजन पत्रकारिता में दृश्य और ध्वनि दोनों का प्रयोग होता है, जिससे समाचार अधिक विश्वसनीय, आकर्षक और प्रभावी बन जाता है |

प्रश्न 21. ऑनलाइन पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से समाचारों का प्रकाशन और प्रसारण ऑनलाइन पत्रकारिता कहलाता है।

प्रश्न 22. समाचार एजेंसियाँ क्या कार्य करती हैं?

उत्तर- समाचार एजेंसियाँ विभिन्न स्थानों से समाचार एकत्रित करके समाचार-पत्रों, चैनलों और अन्य मीडिया संस्थानों को उपलब्ध कराती हैं।

प्रश्न 23. पेज थ्री पत्रकारिता किसे कहते हैं?

उत्तर- फिल्मी सितारों, मॉडल और बड़े उद्योगपतियों के निजी जीवन को दिखाया जाता है। उच्च समाज की लेट-नाइट पार्टियों, फैशन शो, चकाचौंध और गॉसिप को बड़ी रंगीन तस्वीरों के साथ प्रमुखता से छापा जाता है।

पाठ-9 डायरी लेखन

डायरी लेखन आत्म-अभिव्यक्ति की एक महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें व्यक्ति अपने दैनिक जीवन की घटनाओं, अनुभवों, भावनाओं, विचारों तथा प्रतिक्रियाओं को क्रमबद्ध रूप से लिखता है।

डायरी लेखन में दिनांक,समय,स्थान, घटना, भावनाएँ,विचार व हस्ताक्षर होता है।

डायरी लिखते समय ध्यान रखने योग्य संक्षिप्त बातें : घटना का क्रमबद्ध वर्णन करें। अपने वास्तविक विचार एवं भावनाएँ व्यक्त करें। भाषा स्वाभाविक और आत्मीय रखें। अनावश्यक विस्तार से बचें। अंत में निष्कर्ष या मनःस्थिति अवश्य लिखें।

1. डायरी किसे कहते हैं?

उत्तर- दैनिक जीवन में हम जिन घटनाओं, विचारों और गतिविधियों से निरंतर गुजरते हैं, उन्हें डायरी के पृष्ठों पर शब्दबद्ध कर लेना ही डायरी-लेखन है। अत्यंत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और उससे संबंधित बौद्धिक तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का लेखा-जोखा डायरी कहलाता है। डायरी एक ऐसी नोटबुक होती है, जिसके पृष्ठों पर वर्ष के 365 दिनों की तिथियाँ क्रम से लिखी होती हैं। प्रत्येक तिथि के बाद पृष्ठ को खाली छोड़ दिया जाता है। डायरी को दैनिकी, दैनंदिनी, रोजनामचा, रोजनिशि आदि कहते हैं। डायरी विभिन्न आकारों में मिलती हैं, इनमें टेबल डायरी, पॉकेट डायरी, पुस्तकाकार डायरी प्रमुख हैं।

2. डायरी की उपयोगिता क्या है? डायरी क्यों लिखी जाती है?

उत्तर- डायरी में तिथि से संबंधित विशेष सूचनाओं, विचारों, घटित घटनाओं को लिखा जाता है। हमारे दिन-प्रतिदिन के अनुभवों को भी हम उस तिथि के पृष्ठ पर लिखकर अपने अनुभवों को सुरक्षित रख सकते हैं। डायरी में अपनी निजी बातों को तथा किसी विशेष तिथि पर यदि हमें कोई कार्य करना है या कहीं जाना है, तो उससे संबंधित सूचना को पहले उस तिथि पर लिख दिया जाता है।

3. डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज है- कैसे?

उत्तर- यदि हम किसी पर्यटन स्थल की यात्रा का विवरण उसी दिन अपनी डायरी में लिख लेते हैं, तो हम अपने अनुभव को पूर्ण रूप से सुरक्षित रख पाते हैं तथा अवसर मिलने पर इसे पढ़कर उस यात्रा का फिर से पूरा लाभ उठा सकते हैं। डायरी से जब हम अपने विगत को पढ़ते हैं, तो यह हमारा व्यक्तिगत दस्तावेज बन जाता है।

4.कुछ प्रसिद्ध डायरियों व डायरी लेखकों के नाम लिखिए |

कुछ प्रसिद्ध डायरी व उनके लेखक इस प्रकार हैं:-

(i) पैरों में पंख बाँधकर- रामवृक्ष बेनीपुरी

(ii) एक साहित्यिक की डायरी- गजानन माधव मुक्तिबोध

(iii) रूस में पच्चीस मास -राहुल सांकृत्यायन

(iv) सुदूर दक्षिण-पूर्व - सेठ गोविंद दास

5. डायरी लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

उत्तर:- डायरी लिखते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है

(i) डायरी किसी नोटबुक अथवा पिछले साल की डायरी में लिखी जानी चाहिए, डायरी को वर्तमान तिथि के अनुसार लिखने पर उसमें अभिव्यक्ति के लिए जगह अपने हिसाब से कम या अधिक कर लेनी चाहिए|

(ii) दिन भर की घटनाओं में से मुख्य घटना या गतिविधि का चयन करने के बाद ही उसे शब्दबद्ध करना चाहिए।

(iii) 'डायरी के पाठक आप स्वयं हैं' यह मानकर डायरी लिखने से भाषा-शैली की स्वाभाविकता बनी रहती है।

6. डायरी लेखन और आत्मकथा में क्या अंतर है?

उत्तर- डायरी दैनिक घटनाओं पर आधारित होती है, जबकि आत्मकथा पूरे जीवन का वर्णन करती है। डायरी समय-समय पर लिखी जाती है, जबकि आत्मकथा जीवन के किसी चरण में लिखी जाती है। डायरी अधिक व्यक्तिगत और गोपनीय होती है, जबकि आत्मकथा प्रकाशन हेतु लिखी जा सकती है।

पाठ-10 कथा-पटकथा

कथा-पटकथा वह विधा है जिसमें किसी कहानी, उपन्यास, घटना या विचार को नाटक, फिल्म, दूरदर्शन अथवा अन्य दृश्य-श्रव्य माध्यमों के लिए रूपांतरित किया जाता है। 'पटकथा' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'पट' और 'कथा'। 'पट' शब्द का अर्थ 'परदा' तथा 'कथा' शब्द का अर्थ 'कहानी' होता है। अतः ऐसी कहानी जो परदे पर दिखाई जाए वही पटकथा है। परदा छोटा (टेलीविजन) या बड़ा (सिनेमा) कोई भी हो सकता है। इसमें घटनाओं, पात्रों, संवादों, दृश्यों, स्थानों तथा समय का क्रमबद्ध और विस्तृत वर्णन किया जाता है। कथा-पटकथा का उद्देश्य कहानी को इस प्रकार प्रस्तुत करना है कि दर्शक उसे देखकर समझ सकें।

1. पटकथा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'पटकथा' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'पट' और 'कथा'। 'पट' शब्द का अर्थ 'परदा' तथा 'कथा' शब्द का अर्थ 'कहानी' होता है। अतः ऐसी कहानी जो परदे पर दिखाई जाए वही पटकथा है। परदा छोटा (टेलीविजन) या बड़ा (सिनेमा) कोई भी हो सकता है।

2. पटकथा का स्रोत कहाँ से प्राप्त होता है?

उत्तर- पटकथा का स्रोत कुछ भी हो सकता है। हमारे स्वयं के साथ यदि कोई घटना या हमारे आस-पास घटी कोई घटना भी पटकथा का आधार बन सकती है। इसके अतिरिक्त अखबार में छपा कोई समाचार, हमारी कल्पना से अपनी कोई कहानी, इतिहास में वर्णित कोई व्यक्तित्व, कोई सच्चा किस्सा अथवा साहित्य की किसी प्रसिद्ध रचना पर पटकथा लिखी जा सकती है।

3. पटकथा की संरचना कैसी होती है?

उत्तर- फिल्म तथा टी.वी. की पटकथा में पात्र-चरित्र, नायक-प्रतिनायक, घटनास्थल, दृश्य, कहानी का क्रमिक विकास, द्वंद्व समाधान आदि सब कुछ होता है। इसमें छोटे-छोटे दृश्य, असीमित घटनास्थल होते हैं। इसकी कथा फ्लैश बैक या फ्लैश फॉरवर्ड तकनीक से भी प्रस्तुत की जा सकती है। इसमें एक ही समय में अलग-अलग स्थानों पर घटित घटनाओं को भी दिखाया जा सकता है।

4. पटकथा लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है और क्यों?

उत्तर- पटकथा लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना जरूरी है:-

पटकथा लिखते समय दृश्यों के बदलाव में विशेष ध्यान रखना चाहिए। किसी भी दृश्य का बँटवारा करते समय, समय, स्थान और उसके कार्य-व्यापार का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। पात्रों के बोलने तथा हाव-भाव का संकेत दिया जाना चाहिए। पटकथा में दृश्य का उल्लेख अवश्य करना चाहिए; जैसे-सड़क, बरामदा, बगीचा, बंद कमरा आदि। प्रत्येक दृश्य के अंत में **कट टू** जैसी जानकारी अवश्य देनी चाहिए। इससे निर्देशक तथा फिल्मांकन कार्य करने वालों को मदद मिलती है।

5. कथा और पटकथा में कोई दो प्रमुख अंतर लिखिए।

उत्तर- कथा पढ़ी जाती है, जबकि पटकथा देखी और सुनी जाती है। कथा वर्णन-प्रधान होती है, जबकि पटकथा दृश्य एवं संवाद-प्रधान होती है।

6. पटकथा में संवादों का क्या महत्त्व है?

उत्तर- संवाद पात्रों के विचार, भावनाएँ और कथानक को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं। वे पटकथा को प्रभावशाली और जीवंत बनाते हैं।

7. किसी कहानी को पटकथा में रूपांतरित करते समय किन दो बातों का ध्यान रखा जाता है?

उत्तर- 1.घटनाओं का उचित दृश्य-विभाजन। 2.पात्रों और संवादों का प्रभावी चयन।

8. किसी कथा को पटकथा में रूपांतरित करने की प्रक्रिया को क्रमबद्ध रूप में समझाइए।

उत्तर- मूल कथा का चयन। प्रमुख घटनाओं का निर्धारण। दृश्यों का विभाजन। पात्रों का चयन। संवाद लेखन। दृश्य-संकेत एवं मंच-निर्देशों का समावेश।

9. कंप्यूटर ने पटकथा लेखन को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर- कंप्यूटर के आगमन से पटकथा लेखन अधिक सरल, व्यवस्थित और तेज हो गया है। लेखक आसानी से संपादन, संशोधन तथा दृश्य क्रम में परिवर्तन कर सकता है।

10. पटकथा लेखन में कंप्यूटर की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- कंप्यूटर ने पटकथा लेखन को आधुनिक और सुविधाजनक बना दिया है। इसके माध्यम से लेखक पटकथा को टाइप, संपादित, सुरक्षित और पुनः व्यवस्थित कर सकता है। दृश्य, संवाद और घटनाओं में आवश्यक परिवर्तन तुरंत किए जा सकते हैं। इससे समय की बचत होती है तथा कार्य अधिक प्रभावी बनता है।

पाठ-14 कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया

मुख्य बिंदु • औपचारिक पत्र • टिप्पण, मुख्य टिप्पण, आनुषंगिक टिप्पणी • अनुस्मारक • अर्द्धसरकारी पत्र • कार्यसूची • कार्यवृत्त • प्रेस विज्ञप्ति • परिपत्र

कार्यालयी लेखन प्रशासनिक व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी सरकारी, अर्द्धसरकारी अथवा निजी संस्था का कार्य केवल मौखिक निर्देशों से नहीं चलता, बल्कि लिखित पत्रों, टिप्पणियों, आदेशों तथा अभिलेखों के माध्यम से संचालित होता है। कार्यालयों में किसी विषय पर विचार करने, निर्णय लेने तथा उस निर्णय का रिकॉर्ड सुरक्षित रखने के लिए फाइलों का प्रयोग किया जाता है। किसी विषय से संबंधित आवेदन, प्रस्ताव, रिपोर्ट अथवा प्राप्त पत्र फाइल के दाहिने भाग में रखे जाते हैं, जबकि उस विषय पर लिखी गई टिप्पणियाँ, आदेश तथा सुझाव फाइल के बाएँ भाग में रखे जाते हैं। इन टिप्पणियों के आधार पर ही अधिकारी अंतिम निर्णय लेते हैं।

औपचारिक पत्र (Formal Letter)

सरकारी कार्यालयों में सबसे अधिक प्रयोग होने वाला पत्र औपचारिक पत्र होता है। यह एक कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय द्वारा दूसरे कार्यालय, विभाग या मंत्रालय को लिखा जाता है। इसका उद्देश्य सूचना देना, सूचना प्राप्त करना, अनुमति लेना, आदेश देना तथा प्रशासनिक कार्यों का संचालन करना होता है। औपचारिक पत्र के शीर्ष पर कार्यालय का नाम, पता, पत्र संख्या तथा दिनांक लिखी जाती है। इसके बाद प्राप्तकर्ता का नाम, पता और विषय लिखा जाता है। विषय के माध्यम से पत्र का उद्देश्य संक्षेप में स्पष्ट किया जाता है। पत्र की भाषा सरल, स्पष्ट, शिष्ट तथा औपचारिक होनी चाहिए। पत्र के अंत में 'भवदीय' लिखकर हस्ताक्षर, नाम तथा पदनाम अंकित किया जाता है।

कार्यालयी पत्र लेखन का प्रारूप

प्रेषक

_____(पदनाम)

_____कार्यालय का नाम / स्थान)

पत्रांक : _____

दिनांक : _____

सेवा में,

_____(पदनाम)

____(कार्यालय / विभाग का नाम)

_____(स्थान)

विषय : _____

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि——————————————————————

——भवदीय

(हस्ताक्षर)

_____(नाम)

_____(पदनाम)

प्रतिलिपि सूचनार्थ :

1. कार्यालय प्रति

उदाहरण

प्रश्न 1. जिलाधीश टोंक (राजस्थान) की ओर से स्वास्थ्य सचिव, राजस्थान सरकार, जयपुर को निर्धारित प्रारूप में एक कार्यालयी पत्र लिखिए जिसमें उनसे अपने क्षेत्र में फैली हुई रहस्यमय बीमारी से ग्रामीण जनता को राहत दिलवाने के लिए राजधानी के विशेष चिकित्सकों का एक दल भेजने के लिए निवेदन कीजिए।

राजस्थान सरकार

कार्यालय, जिलाधीश टोंक

पत्रांक- जि./स्वा/14 - 15/175 - 76

दिनांक- 5 मई, 20_ _

सेवा में

श्रीमान् स्वास्थ्य सचिव

राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय- रहस्यपूर्ण बीमारी से राहत दिलवाने हेतु चिकित्सकीय सहायता के सन्दर्भ में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत सूचनार्थ निवेदन है कि टोंक जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में एक अज्ञात बीमारी से विगत 3 दिनों में 07 लोग मौत के शिकार हो गए हैं। इस बीमारी में रोगी को तीव्र ज्वर आता है और वह पेट दर्द के साथ प्राण त्याग देता है। स्थानीय चिकित्सक इस बीमारी का निदान नहीं कर पा रहे हैं।

अतः इस महामारी पर शीघ्र नियन्त्रण हेतु राजधानी से चिकित्सकों का एक दल तत्काल भिजवाने का कष्ट करें, ताकि संत्रस्त जनता को राहत प्रदान की जा सके।

सादर

भवदीय

(हस्ताक्षर)

जिलाधीश, टोंक

टिप्पण (Noting)

किसी विचाराधीन विषय पर निर्णय लेने के लिए फाइल में लिखी गई राय, सुझाव, आदेश अथवा निर्देश को टिप्पण कहा जाता है। टिप्पण का मुख्य उद्देश्य तथ्यों को स्पष्ट करना, नियमों का उल्लेख करना तथा अधिकारी को निर्णय लेने में सहायता प्रदान करना होता है। एक अच्छी टिप्पणी संक्षिप्त, स्पष्ट, तर्कपूर्ण, विषयानुकूल तथा वस्तुनिष्ठ होती है। इसमें व्यक्तिगत आरोप, भावनाएँ या पूर्वाग्रहों का स्थान नहीं होता। टिप्पणी सदैव अन्य पुरुष में लिखी जाती है।

मुख्य टिप्पण

मुख्य टिप्पण को आरंभिक टिप्पण भी कहा जाता है। इसे सामान्यतः सहायक द्वारा लिखा जाता है। इसमें विषय का संक्षिप्त परिचय, उससे संबंधित तथ्य, नियमों का उल्लेख तथा सहायक की राय सम्मिलित होती है। मुख्य टिप्पण का उद्देश्य अधिकारी को विषय की पूरी जानकारी देना और निर्णय लेने के लिए आवश्यक आधार उपलब्ध कराना होता है। मुख्य टिप्पण स्पष्ट, क्रमबद्ध, संक्षिप्त और तथ्यपरक होनी चाहिए।

आनुषंगिक टिप्पण

मुख्य टिप्पण को पढ़ने के बाद अधिकारी द्वारा लिखी गई टिप्पणी को आनुषंगिक टिप्पण कहा जाता है। यदि अधिकारी मुख्य टिप्पण से पूर्णतः सहमत हो तो वह केवल 'मैं उपर्युक्त टिप्पणी से सहमत हूँ' लिख सकता है। यदि वह अतिरिक्त सुझाव देना चाहता है या किसी बात से असहमत है तो अपनी राय अलग से लिख सकता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि अधिकारी अपने अधीनस्थ द्वारा लिखी गई टिप्पणी को काट, बदल या हटा नहीं सकता। वह केवल अपनी सहमति, असहमति या अतिरिक्त विचार व्यक्त कर सकता है।

अनुस्मारक अथवा स्मरण पत्र

जब किसी पत्र, ज्ञापन अथवा सूचना का उत्तर निर्धारित समय पर प्राप्त नहीं होता, तब उत्तर प्राप्त करने के उद्देश्य से पुनः जो पत्र भेजा जाता है उसे अनुस्मारक या स्मरण पत्र कहा जाता है। इसमें पहले भेजे गए पत्र का संदर्भ दिया जाता है। यदि एक से अधिक अनुस्मारक भेजे जाएँ तो उन्हें क्रमशः अनुस्मारक-1, अनुस्मारक-2 और अनुस्मारक-3 लिखा जाता है।

अर्द्धसरकारी पत्र

अर्द्धसरकारी पत्र औपचारिक और अनौपचारिक शैली का मिश्रित रूप होता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब दो अधिकारी एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हों या किसी विषय पर विशेष ध्यान आकर्षित करना हो। इस पत्र में 'महोदय' के स्थान पर 'प्रिय श्री' या 'प्रियवर श्री' का प्रयोग किया जाता है तथा अंत में 'भवदीय' के स्थान पर 'आपका' लिखा जाता है।

उदाहरण

अर्द्धसरकारी पत्र संख्या : 15/2026

प्रधानाचार्य कार्यालय, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रोहतक

दिनांक : 10 जून 2026

प्रिय श्री शर्मा जी,

आशा है कि आप सकुशल होंगे।

हमारे विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है, जिसके कारण अतिरिक्त कक्षों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इस संबंध में निर्माण प्रस्ताव आपके कार्यालय में विचाराधीन है। विद्यार्थियों के हित को ध्यान में रखते हुए आपसे अनुरोध है कि इस प्रकरण पर विशेष ध्यान देकर आवश्यक कार्यवाही शीघ्र कराने का कष्ट करें। मुझे विश्वास है कि आपके सहयोग से यह कार्य शीघ्र संपन्न हो सकेगा।

सादर।

आपका

(हस्ताक्षर)

आर. के. वर्मा

प्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रोहतक

कार्यसूची

किसी बैठक में जिन विषयों पर चर्चा की जानी होती है, उनकी पूर्व निर्धारित सूची को कार्यसूची या एजेंडा कहा जाता है। कार्यसूची बैठक के अनुशासित संचालन में सहायता करती है तथा सदस्यों को पहले से तैयारी करने का अवसर प्रदान करती है। कार्यसूची में बैठक की तिथि, समय, स्थान और चर्चा के विषयों का क्रमबद्ध उल्लेख किया जाता है। इसे बैठक से पहले सदस्यों को भेज दिया जाता है।

उदाहरण-1

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रोहतक

विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक

कार्यसूची

बैठक की तिथि : 15 जून 2026

समय : प्रातः 11:00 बजे

स्थान : प्रधानाचार्य कक्ष

बैठक में निम्नलिखित विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा–

1. पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि।
2. वार्षिक परीक्षा परिणाम की समीक्षा।
3. विद्यालय में अतिरिक्त कक्ष निर्माण प्रस्ताव पर चर्चा।

4. पुस्तकालय के लिए नई पुस्तकों की खरीद।
5. अन्य विषय (अध्यक्ष की अनुमति से)।

(हस्ताक्षर)

आर. के. वर्मा

प्रधानाचार्य एवं सदस्य सचिव

दिनांक : 10 जून 2026

प्रेस विज्ञप्ति

किसी संस्था, विभाग या संगठन द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों को जनता तक पहुँचाने के लिए प्रेस विज्ञप्ति जारी की जाती है। इसके माध्यम से निर्णय का उद्देश्य, कारण तथा उससे होने वाले लाभों की जानकारी दी जाती है। प्रेस विज्ञप्ति की भाषा सरल, स्पष्ट और समाचार शैली की होती है। इसका उद्देश्य जनता को सही और प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराना होता है।

कार्यवृत्त

किसी बैठक में हुई कार्यवाही का क्रमबद्ध और लिखित विवरण कार्यवृत्त कहलाता है। इसमें बैठक की तिथि, समय, स्थान, उपस्थित सदस्यों के नाम, चर्चा के मुख्य बिंदु तथा लिए गए निर्णयों का उल्लेख किया जाता है। कार्यवृत्त भविष्य में संदर्भ के लिए सुरक्षित रखा जाता है और यह बैठक का आधिकारिक रिकॉर्ड माना जाता है।

उदाहरण

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रोहतक

विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक का कार्यवृत्त

बैठक की तिथि : 15 जून 2026

समय : प्रातः 11:00 बजे

स्थान : प्रधानाचार्य कक्ष

उपस्थित सदस्य

1. श्री आर. के. वर्मा - प्रधानाचार्य (अध्यक्ष)
2. श्रीमती सुनीता शर्मा - वरिष्ठ अध्यापिका
3. श्री महेश कुमार - अभिभावक प्रतिनिधि
4. श्री राजेश सिंह - सदस्य सचिव

कार्यवाही

1. पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई।
2. वार्षिक परीक्षा परिणाम की समीक्षा उपरांत परिणाम सुधारने हेतु जरूरी सुझाव दिए गए।
3. विद्यालय में दो अतिरिक्त कक्षों के निर्माण संबंधी प्रस्ताव पर चर्चा की गई।
4. विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान चलाने का निर्णय लिया गया।

लिए गए निर्णय

- अतिरिक्त कक्ष निर्माण का प्रस्ताव जिला शिक्षा अधिकारी को भेजा जाएगा।
- पुस्तकालय के लिए ₹50,000 तक की पुस्तकों की खरीद स्वीकृत की गई।

बैठक का समापन अध्यक्ष महोदय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ दोपहर 1:00 बजे हुआ।

(हस्ताक्षर)	**(हस्ताक्षर)**
राजेश सिंह	आर. के. वर्मा
सदस्य सचिव	**अध्यक्ष / प्रधानाचार्य**

परिपत्र

जब एक ही सूचना को एक साथ अनेक कार्यालयों, कर्मचारियों या व्यक्तियों तक पहुँचाना होता है, तब परिपत्र जारी किया जाता है। इसका उपयोग नियमों, आदेशों और निर्देशों की जानकारी देने के लिए किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

1. कार्यालयी लेखन क्या है?

कार्यालयों में प्रशासनिक कार्यों के संचालन हेतु किए जाने वाले औपचारिक लेखन को कार्यालयी लेखन कहते हैं।

3. टिप्पण किसे कहते हैं?

किसी विषय पर निर्णय लेने हेतु ली गई राय, सुझाव, आदेश अथवा निर्देश को टिप्पण कहते हैं।

4. अनुस्मारक क्या है?

उत्तर प्राप्त न होने पर स्मरण दिलाने के लिए भेजे गए पत्र को अनुस्मारक कहते हैं।

6. अर्द्धसरकारी पत्र कब लिखा जाता है?

जब किसी अधिकारी का व्यक्तिगत ध्यान आकर्षित करना हो या व्यक्तिगत सलाह लेनी हो।

7. औपचारिक पत्र की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

औपचारिक पत्र की भाषा सरल, स्पष्ट और औपचारिक होती है। इसमें विषय स्पष्ट रूप से लिखा जाता है तथा अंत में 'भवदीय' का प्रयोग किया जाता है। इसमें कार्यालय का नाम, पता, दिनांक और पदनाम भी अंकित होते हैं।

8. मुख्य टिप्पण की विशेषताएँ लिखिए।

मुख्य टिप्पण में विषय का सार, नियमों का उल्लेख और सुझाव दिए जाते हैं। यह संक्षिप्त, स्पष्ट, तर्कपूर्ण तथा अन्य पुरुष में लिखी जाती है।

10. अनुस्मारक की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

जब किसी पत्र का उत्तर समय पर प्राप्त नहीं होता, तब संबंधित अधिकारी या विभाग का ध्यान आकर्षित करने तथा उत्तर प्राप्त करने के लिए अनुस्मारक भेजा जाता है।

11. कार्यसूची का महत्व बताइए।

कार्यसूची सदस्यों को बैठक के विषयों की पूर्व जानकारी देती है, जिससे वे तैयारी के साथ बैठक में भाग ले सकें और बैठक व्यवस्थित ढंग से संचालित हो सके।

पाठ -15 स्ववृत्त लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र

आज के प्रतिस्पर्धी युग में नौकरी प्राप्त करने के लिए केवल शैक्षणिक योग्यता पर्याप्त नहीं होती, बल्कि अपनी योग्यताओं, अनुभवों और उपलब्धियों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना भी आवश्यक होता है। स्ववृत्त वह संक्षिप्त विवरण है जिसमें व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत जानकारी, शैक्षणिक योग्यताएँ, कार्यानुभव, विशेष कौशल, उपलब्धियाँ तथा रुचियाँ क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है।

1. स्ववृत्त (Resume) का अर्थ स्ववृत्त व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय होता है। इसे नौकरी, प्रवेश या अन्य औपचारिक उद्देश्यों के लिए तैयार किया जाता है।

2. अच्छे स्ववृत्त की विशेषताएँ:-

संक्षिप्त और स्पष्ट होना चाहिए। तथ्य सत्य एवं प्रमाणिक हों। इसकी भाषा सरल और औपचारिक होनी चाहिए। अनावश्यक विस्तार व जानकारी न दी जाए। प्रस्तुति आकर्षक और सुव्यवस्थित हो।

3. रोजगार संबंधी आवेदन पत्र

किसी विज्ञापित (विज्ञापन में दिए गए) पद के लिए आवेदन करने के लिए होता है। अपनी व्यक्तिगत जानकारी के साथ योग्यता और रुचि का अनुभव आदि का परिचय देना होता है। नियोक्ता को अपनी उपयुक्तता से अवगत कराना इसका प्रमुख उद्देश्य हैं।

4. आवेदन पत्र लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें

भाषा शिष्ट एवं औपचारिक हो। विषय स्पष्ट लिखा जाए। अपनी योग्यता का संक्षिप्त उल्लेख करें। पत्र में विनम्रता बनी रहे। वर्तनी एवं व्याकरण की त्रुटियाँ न हों। एक पंक्ति में याद रखें "स्ववृत्त व्यक्ति की योग्यता का परिचय है और आवेदन पत्र उस योग्यता को अवसर से जोड़ने का माध्यम है।"

5. स्ववृत्त का मुख्य उद्देश्य

उत्तर- स्ववृत्त का मुख्य उद्देश्य किसी संस्था या नियोक्ता के समक्ष अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं का संक्षिप्त और प्रभावशाली परिचय प्रस्तुत करना है।

6. आवेदन पत्र के साथ कौन-कौन से दस्तावेज संलग्न किए जाते हैं?

उत्तर- आवेदन पत्र के साथ स्ववृत्त, शैक्षणिक प्रमाण-पत्रों की प्रतियाँ, अनुभव प्रमाण-पत्र तथा अन्य आवश्यक दस्तावेज संलग्न किए जाते हैं।

7. रोजगार संबंधी आवेदन पत्र लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- रोजगार संबंधी आवेदन पत्र लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

भाषा विनम्र एवं औपचारिक हो। विषय स्पष्ट और संक्षिप्त लिखा जाए। अपनी योग्यता एवं अनुभव का उचित उल्लेख किया जाए तथा पत्र त्रुटिरहित हो।

एक अच्छे स्ववृत्त का उदाहरण

स्ववृत्त

1. व्यक्तिगत विवरण

- **नाम:** राहुल कुमार
- **पिता का नाम:** श्री सुरेश कुमार
- **जन्म तिथि:** 15 अगस्त 2008
- **पता:** 123, शास्त्री नगर, जयपुर, राजस्थान
- **मोबाइल नंबर:** 9876543210
- **ई-मेल:** rahulkumar@gmail.com

2. शैक्षणिक योग्यताएँ

परीक्षा	विद्यालय/संस्था	वर्ष	प्रतिशत
माध्यमिक (कक्षा 10)	राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जयपुर	2024	88%
उच्च माध्यमिक (कक्षा 12)	अध्ययनरत	2026	–

3. विशेष योग्यताएँ

- कंप्यूटर का सामान्य ज्ञान (MS Word, PowerPoint, Excel)
- हिंदी एवं अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा ज्ञान
- प्रभावी संवाद कौशल

4. उपलब्धियाँ

- विद्यालय स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान
- विज्ञान प्रदर्शनी में द्वितीय पुरस्कार

5. रुचियाँ : पुस्तकें पढ़ना, लेखन कार्य ,क्रिकेट खेलना

6. घोषणा

मैं घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त जानकारी मेरे ज्ञान एवं विश्वास के अनुसार सत्य और सही है।

दिनांक: 10 जून 2026

स्थान: जयपुर

हस्ताक्षर

(राहुल कुमार)

पाठ-16 कोश: एक परिचय

शब्दकोश किसी भाषा के शब्दों का व्यवस्थित संग्रह होता है, जिसमें शब्दों के अर्थ, वर्तनी, उच्चारण, व्याकरणिक जानकारी तथा उनके प्रयोग से संबंधित विवरण दिए जाते हैं। शब्दकोश भाषा-ज्ञान को समृद्ध करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। यह न केवल शब्दों के सही अर्थ और प्रयोग की जानकारी देता है, बल्कि भाषा की शुद्धता और अभिव्यक्ति-कौशल को भी विकसित करता है। शब्दकोश में शब्द सामान्यतः वर्णक्रम (अकारादि क्रम) के अनुसार व्यवस्थित होते हैं, जिससे किसी शब्द को खोजने में सुविधा होती है। वर्तमान समय में मुद्रित शब्दकोशों के साथ-साथ ऑनलाइन और डिजिटल शब्दकोश भी व्यापक रूप से उपयोग में लाए जा रहे हैं। शब्दकोश, शब्दों का खजाना है। इसमें एक भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को संचित किया जाता है। शब्दकोश में शब्दों की व्युत्पत्ति, स्रोत, लिंग, शब्द-रूप एवं विभिन्न संदर्भपरक अर्थों के बारे में जानकारी दी जाती है। हिंदी शब्दकोश में हिंदी वर्णमाला का अनुसरण किया जाता है परंतु अं से प्रारंभ होने वाले शब्द सबसे पहले दिए जाते हैं। यद्यपि हिंदी वर्णमाला में कुछ संयुक्त व्यंजन सबसे अंत में आते हैं परंतु शब्दकोश में उन्हें उस क्रम में रखा जाता है जिन व्यंजनों से मिलकर वे बने हैं। स्वर रहित व्यंजन से प्रारंभ होने वाले शब्द उस व्यंजन में सभी आने वाले सभी स्वरों के बाद में रखे जाते हैं, जैसे 'क्या' शब्द 'कौस्तुभ' के बाद ही आएगा।

1. शब्दकोश का अर्थ: शब्दों का व्यवस्थित संग्रह। शब्दों के अर्थ, उच्चारण, वर्तनी और प्रयोग की जानकारी देने वाला ग्रंथ। शब्दकोश वह ग्रंथ है जिसमें किसी भाषा के शब्दों को वर्णक्रमानुसार व्यवस्थित करके उनके अर्थ, वर्तनी और प्रयोग दिए जाते हैं। इसका प्रमुख उपयोग शब्दों के सही अर्थ और प्रयोग की जानकारी प्राप्त करना है।

2. शब्दकोश का महत्त्व : शब्द-भंडार में वृद्धि करता है। सही वर्तनी और उच्चारण की जानकारी देता है। भाषा को शुद्ध एवं प्रभावी बनाने में सहायता करता है। लेखन एवं पठन कौशल का विकास करता है।

3. शब्दकोश की प्रमुख विशेषताएँ: शब्द वर्णक्रम (अ, आ, इ, ई...) में व्यवस्थित होते हैं। प्रत्येक शब्द का अर्थ दिया जाता है। कई शब्दकोशों में पर्यायवाची, विलोम भी दिए जाते हैं।

4. शब्दकोश के प्रकार: सामान्य शब्दकोश, द्विभाषी शब्दकोश, तकनीकी शब्दकोश,पर्यायवाची शब्दकोश ऑनलाइन/डिजिटल शब्दकोश विश्व ज्ञान कोश, साहित्य कोश और चरित्र कोश

5. हिन्दी शब्दकोश में शब्द ढूँढने का सरल क्रम

शब्दकोश में शब्द वर्णमाला के क्रम से व्यवस्थित होते हैं। किसी शब्द को खोजते समय निम्न बातों का ध्यान रखें–सबसे पहले शब्द का पहला अक्षर देखें।

जैसे: कमल, घर, चिड़िया – ये क्रमशः क, घ, च खंड में मिलेंगे।

यदि कई शब्द एक ही अक्षर से शुरू हों, तो दूसरा अक्षर देखें।

कमल, कलम, कसरत में पहले "क" समान है, इसलिए दूसरे अक्षर के आधार पर खोजेंगे।

मात्राओं का क्रम ध्यान रखें।

कं, क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ

शब्दकोश में इन्हीं मात्राओं के क्रम से शब्द रखे जाते हैं।

संयुक्ताक्षर वाले शब्द बाद में आते हैं। जैसे: क्ष, त्र, ज्ञ, श्र आदि से बने शब्द संबंधित अक्षर के सामान्य शब्दों के बाद मिलते हैं। एक-एक अक्षर मिलाते हुए आगे बढ़ें। यदि पहले और दूसरे अक्षर समान हों, तो तीसरे अक्षर को देखें। उदाहरण: इन शब्दों का क्रम शब्दकोश में इस प्रकार होगा–कलम → कमल → करम → कर्म → कसरत → क्रोध

7. शब्दकोश में शब्दों को किस क्रम में रखा जाता है और क्यों?

उत्तर :शब्दकोश में शब्दों को वर्णक्रम (अकारादि क्रम) में रखा जाता है। इससे किसी शब्द को आसानी और शीघ्रता से खोजा जा सकता है।

8. मुद्रित शब्दकोश और डिजिटल शब्दकोश में कोई दो अंतर लिखिए।

उत्तर :मुद्रित शब्दकोश पुस्तक के रूप में होता है, जबकि डिजिटल शब्दकोश मोबाइल या कंप्यूटर पर उपलब्ध होता है। डिजिटल शब्दकोश में शब्दों की खोज शीघ्र होती है, जबकि मुद्रित शब्दकोश में खोजने में अधिक समय लगता है।

9. शब्दकोश का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :शब्दकोश भाषा सीखने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। यह शब्दों के अर्थ, वर्तनी, उच्चारण और प्रयोग की जानकारी प्रदान करता है। इसके उपयोग से शब्द-भंडार बढ़ता है तथा भाषा की शुद्धता और अभिव्यक्ति-कौशल का विकास होता है।

10. शब्दकोश के प्रमुख प्रकारों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर- शब्दकोश के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं–

सामान्य शब्दकोश - सामान्य शब्दों के अर्थ देता है।

द्विभाषी शब्दकोश - दो भाषाओं के शब्दों के अर्थ बताता है।

तकनीकी शब्दकोश - विशेष विषयों के पारिभाषिक शब्दों की जानकारी देता है।

ऑनलाइन डिजिटल शब्दकोश/- इंटरनेट के माध्यम से उपयोग किए जाने वाले शब्दकोश।

11. संदर्भ-ग्रंथ क्या हैं? इनके महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :संदर्भ-ग्रंथ ऐसे ग्रंथ हैं जिनमें विभिन्न विषयों की जानकारी संक्षिप्त एवं व्यवस्थित रूप में संकलित होती है। ये किसी विषय पर त्वरित जानकारी प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन हैं। अध्ययन, शोध तथा ज्ञान-वृद्धि में इनकी विशेष भूमिका होती है। इसी कारण इन्हें 'गागर में सागर' कहा जाता है।

12. संदर्भ ग्रंथों के प्रमुख प्रकार बताइए।

उत्तर : संदर्भ ग्रंथों के प्रमुख प्रकार हैं– विश्वकोश, साहित्य कोश और चरित्र कोश। ये सभी ज्ञान एवं सूचनाओं को अलग-अलग क्षेत्रों के अनुसार संकलित कर पाठकों तक पहुँचाते हैं और अध्ययन को सरल बनाते हैं।

13. विश्व ज्ञान कोश, साहित्य कोश और चरित्र कोश में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :विश्व ज्ञान कोश में मानव ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की सामान्य जानकारी संकलित होती है। साहित्य कोश में साहित्य, साहित्यकारों तथा साहित्यिक विषयों से संबंधित जानकारियाँ दी जाती हैं। चरित्र कोश में साहित्य, संस्कृति, विज्ञान आदि क्षेत्रों के महान व्यक्तियों के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय मिलता है।

14. संदर्भ-ग्रंथों को 'गागर में सागर' क्यों कहा जाता है?

उत्तर :संदर्भ-ग्रंथों में विभिन्न विषयों की विस्तृत जानकारियों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कम समय में आवश्यक एवं प्रामाणिक जानकारी प्राप्त हो जाती है। इनमें विशाल ज्ञान-सामग्री का सार निहित होता है, इसलिए इन्हें 'गागर में सागर' कहा जाता है।

15.चरित्र कोश से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :चरित्र कोश वह संदर्भ ग्रंथ है जिसमें साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, कला तथा अन्य क्षेत्रों के महान व्यक्तियों के जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व और उपलब्धियों से संबंधित जानकारी संकलित एवं व्यवस्थित रूप में दी जाती है।

16. साहित्य कोश क्या है?

उत्तर : साहित्य कोश एक प्रकार का संदर्भ ग्रंथ है जिसमें साहित्य से संबंधित विषयों, लेखकों, रचनाओं, साहित्यिक आंदोलनों तथा साहित्यिक शब्दावली के बारे में आवश्यक एवं प्रामाणिक जानकारी संकलित की जाती है।

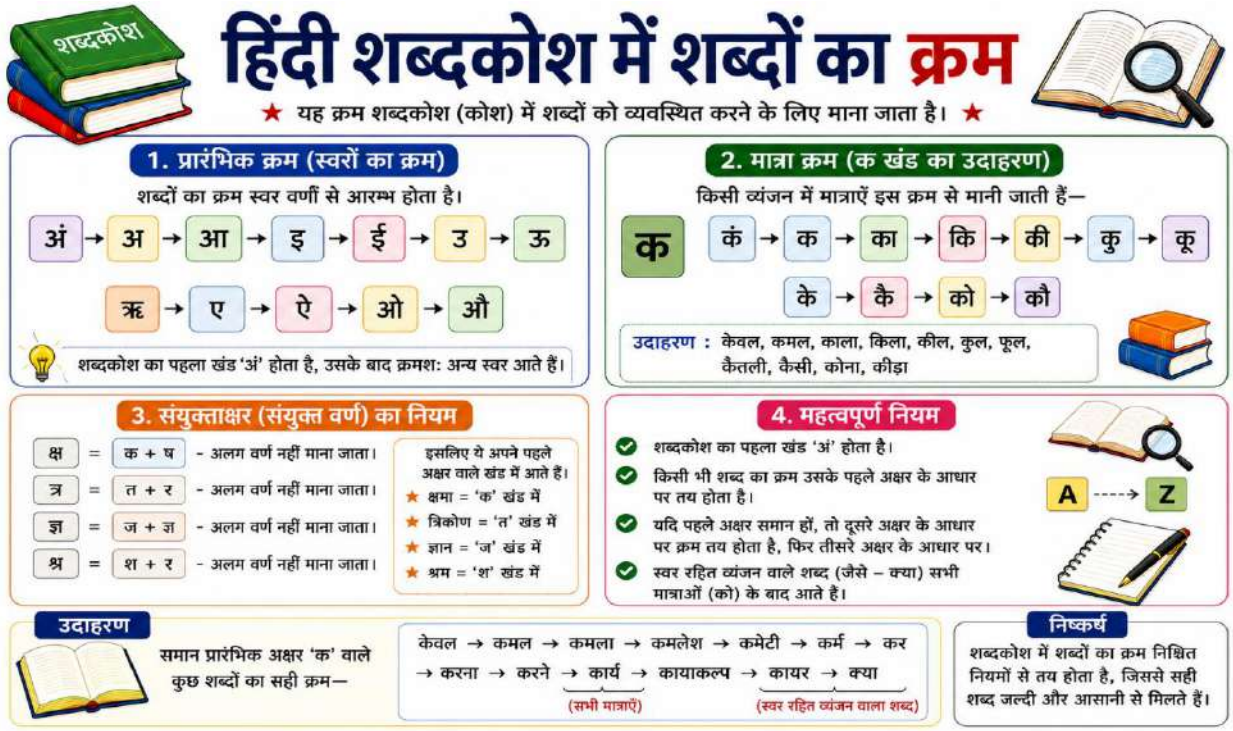

काव्य खंड

पाठ -1 कबीर पद-1

पद का सारांश

पहले पद में कबीर ने परमात्मा को सृष्टि के कण-कण में देखा है, ज्योति रूप में स्वीकारा है तथा उसकी व्याप्ति चराचर संसार में दिखाई है। कबीर कहते है कि मैंने ईश्वर को एक रूप में जान लिया है जिन्हें लगता है कि ईश्वर के दो रूप (राम और रहीम) हैं उन्हें नर्क की प्राप्ति होगी क्योंकि इन्हें ईश्वर के वास्तविक रूप का ज्ञान नहीं है। कबीरदास ने आत्मा और परमात्मा को एक रूप में ही देखा है। संसार के लोग अज्ञानवश इन्हें अलग-अलग मानते हैं। कवि पानी, पवन, प्रकाश आदि के उदाहरण देकर उन्हें एक जैसा बताता है। बढ़ई लकड़ी को काटता है, परंतु आग को कोई नहीं काट सकता। परमात्मा सभी के हदय में विद्यमान है। माया के कारण इसमें अंतर दिखाई देता है। कबीरदास अपने पदों में ईश्वर की एकता, मानव समानता तथा आध्यात्मिक जीवन का संदेश देते हैं। सभी मनुष्य एक ही तत्व से बने हैं, इसलिए जाति, धर्म और ऊँच-नीच का भेद निरर्थक है। कबीर बताते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है और उसे बाहर नहीं, अपने भीतर खोजने की आवश्यकता है। वे माया-मोह और भौतिक आकर्षणों को मनुष्य के पतन का कारण मानते हैं तथा उनसे बचने की शिक्षा देते हैं। साथ ही अहंकार का त्याग, विनम्रता, समभाव और ईश्वर में अटूट विश्वास रखने पर बल देते हैं। उनके अनुसार ईश्वर पर विश्वास करने वाला व्यक्ति निर्भय होकर जीवन जीता है और किसी भी सांसारिक भय से विचलित नहीं होता।

पठित काव्यांश (1)

1.निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

हम तौ एक एक करि जाना ।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचाना।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटे अगिनि न काटे कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई।
एकै पवन एक ही पानीं एकै ज्योति समाना।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोहरा साना।
माया देखि के जगत लुभाना काहे रे नर गरबाना
निरभै भया कछू नहि ब्यापै कहैं कबीर दिवांनां।

1. 'दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचाना' पंक्ति का आशय क्या है?

(A) संसार में दो ईश्वर हैं। (B) जो ईश्वर की एकता को नहीं पहचानते, वे भ्रमित रहते हैं।
(C) स्वर्ग और नरक अलग-अलग हैं। (D) मनुष्य को दो प्रकार का जीवन जीना चाहिए।

2. कबीर के अनुसार समस्त सृष्टि का निर्माण किससे हुआ है?

(A) अलग-अलग तत्वों से (B) केवल जल से
(C) एक ही परम तत्व से (D) केवल अग्नि से

3. कथन-कारण आधारित प्रश्न

कथन (A): कबीरदास समस्त प्राणियों में समानता का भाव स्थापित करना चाहते हैं।
कारण (R): उनके अनुसार सभी मनुष्य एक ही मिट्टी, जल, वायु और ज्योति से बने हैं।
(A) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, परंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।
(C) कथन सत्य है, पर कारण असत्य है।
(D) कथन असत्य है, पर कारण सत्य है।

4. स्तंभ मिलान कीजिए।

स्तंभ - A	स्तंभ - B
(क) एकै पवन	(i) सभी में समान प्रकाश
(ख) एकै ज्योति	(ii) सभी में समान वायु
(ग) एकै खाक	(iii) सभी शरीरों की समान मिट्टी

सही मिलान चुनिए–
(A) क-ii, ख-i, ग-iii (B) क-i, ख-iii, ग-ii (C) क-iii, ख-ii, ग-i (D) क-ii, ख-iii, ग-i

5. 'माया देखि के जगत लुभाना' से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

(A) माया ही जीवन का लक्ष्य है। (B) संसार के लोग माया-मोह में फँस जाते हैं।
(C) धन कमाना सबसे महत्वपूर्ण है। (D) माया से ही मोक्ष प्राप्त होता है।

उत्तरमाला - 1.(B) 2.(C) 3.(A) 4.(A) 5.(B)

पठित काव्यांश (2)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटे अगिनि न काटे कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई।
एकै पवन एक ही पानीं एकै ज्योति समाना।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोहरा साना।
माया देखि के जगत लुभाना कह रे नर गरबाना
निरभै भया कछू नहि ब्यापै कहैं कबीर दिवांनां।

1.'जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटे अगिनि.....' पंक्ति में किस सत्य को व्यक्त किया गया है?

(A) लकड़ी आग से अधिक शक्तिशाली है।

(B) प्रत्येक वस्तु का अपना स्वभाव और कार्य होता है।

(C) आग और लकड़ी समान हैं।

(D) बढ़ई आग का उपयोग नहीं करता।

2. 'सब घटि अंतरि तूही व्यापक' से कवि किसकी व्यापकता का वर्णन करता है?

(A) प्रकृति की (B) मनुष्य की (C) परमात्मा की (D) माया की

3. कथन-कारण आधारित प्रश्न

कथन (A): कबीरदास मनुष्य को अहंकार त्यागने की शिक्षा देते हैं।

कारण (R): संसार के सभी प्राणी और वस्तुएँ एक ही परम तत्व से निर्मित हैं।

(A) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(C) कथन सत्य है, पर कारण असत्य है।

(D) कथन असत्य है, पर कारण सत्य है।

4. स्तंभ मिलान कीजिए

स्तंभ - A	**स्तंभ - B**
(क) माया	(i) निर्भय व्यक्ति
(ख) निरभै भया	(ii) मोह और आकर्षण
(ग) एकै पवन	(iii) समानता का प्रतीक

सही विकल्प चुनिए–

(A) क-ii, ख-i, ग-iii (B) क-i, ख-ii, ग-iii (C) क-iii, ख-ii, ग-i(D) क-ii, ख-iii, ग-i

5. 'निरभै भया कछू नहि ब्यापै' का भाव क्या है?

(A) निर्भय व्यक्ति को कोई सांसारिक भय प्रभावित नहीं कर सकता।

(B) निर्भय व्यक्ति को किसी की सहायता नहीं चाहिए।

(C) निर्भय व्यक्ति कभी गलती नहीं करता।

(D) निर्भय व्यक्ति संसार से दूर रहता है।

उत्तरमाला

1.(B) 2.(C)3 (A) 4(A) 5.(A)

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. कबीरदास के अनुसार ईश्वर का स्वरूप कैसा है? कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर- कबीरदास के अनुसार ईश्वर एक है और वह समस्त प्राणियों तथा वस्तुओं में समान रूप से व्याप्त है। जिस प्रकार सब जगह ही पवन और एक ही जल है। सारा जगत एक ही ज्योति से प्रकाशमान हैं। वह परमात्मा लकड़ी में अग्नि की तरह रहता हैं। जिस प्रकार बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है किन्तु उसमें निहित अग्नि को नहीं नष्ट कर सकता उसी प्रकार मनुष्य का शरीर तो नश्वर है किन्तु उसके भीतर निवास करने वाला परमात्मा अमर है।

प्रश्न 2. 'एकै पवन एक ही पानी' पंक्ति का क्या अर्थ है? मानव शरीर का निर्माण किन पंच तत्त्वों से हुआ है ?

उत्तर- इस पंक्ति का अर्थ है कि सभी प्राणी एक ही वायु और जल से बने हैं। इससे मानव समानता का संदेश मिलता है। मानव शरीर का निर्माण- अग्नि,वायु,जल,भूमि एवं आकाश इन पंच तत्वों से हुआ है।

प्रश्न 3. आज के समय में कबीरदास का 'माया देखि के जगत लुभाना' संदेश किस प्रकार प्रासंगिक है? कबीरदास ने माया के विषय में क्या कहा है?

उत्तर- आज के समय में लोग भौतिक सुख-सुविधाओं और दिखावे की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। कबीरदास का यह संदेश हमें माया-मोह से बचकर सच्चे मूल्यों, नैतिकता और आत्मिक विकास पर ध्यान देने की प्रेरणा देता है। कबीरदास के अनुसार माया मनुष्य को आकर्षित करके सत्य मार्ग से भटका देती है और उसे मोह-माया में फँसा देती है।

प्रश्न 4. 'एकै खाक गढ़े सब भांडै' में 'भांडै' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'भांडै' का अर्थ है शरीर या पात्र। कवि कहना चाहते हैं कि सभी मनुष्य एक ही मिट्टी से बने हैं।

प्रश्न 5. निर्भय व्यक्ति की क्या विशेषता है?

उत्तर:निर्भय व्यक्ति पर कोई सांसारिक भय, चिंता या मोह प्रभाव नहीं डाल सकता। वह आत्मविश्वास और सत्य के मार्ग पर चलता है।

प्रश्न 6. मानव समानता के संबंध में कबीरदास के विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीरदास के अनुसार सभी मनुष्य एक ही वायु, जल, प्रकाश और मिट्टी से बने हैं। सभी के भीतर एक ही परमात्मा का वास है। इसलिए जाति, धर्म और ऊँच-नीच के भेदभाव का कोई औचित्य नहीं है।

प्रश्न 7. प्रस्तुत पद की दो भाषागत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- पद में सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग हुआ है, जिसमें ब्रज, अवधी और खड़ी बोली के शब्दों का समावेश है। अनुप्रास तथा पुनरुक्ति अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है, जैसे– "एकै पवन, एक ही पानीं, एकै जोति समाना"।

प्रश्न 8. यदि समाज में लोग कबीरदास के "एकै खाक गढ़े सब भांडै" संदेश को अपनाएँ, तो सामाजिक जीवन में क्या परिवर्तन आएगा?

उत्तर- यदि लोग इस संदेश को अपनाएँ, तो जाति, धर्म और ऊँच-नीच के भेदभाव समाप्त होंगे। समाज में समानता, भाईचारा और सद्भाव की भावना विकसित होगी तथा सामाजिक एकता मजबूत होगी।

पाठ - 2 मीरा

पाठ का सारांश

इस पद में मीराबाई ने भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अटूट भक्ति व्यक्त करती हैं। वे कहती हैं कि उनके लिए केवल गिरधर गोपाल (श्रीकृष्ण) ही सब कुछ हैं, उनके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। मोर-मुकुट धारण करने वाले श्रीकृष्ण को ही वे अपना सर्वस्व और अपना पति मानती हैं। मीरा बताती हैं कि उन्होंने भगवान की भक्ति के लिए अपने कुल-मान, समाज की मर्यादा और लोक-लाज की चिंता छोड़ दी है। वे संतों की संगति में बैठकर ईश्वर-भक्ति में लीन रहती हैं। उन्होंने अपने आँसुओं के जल से प्रेमरूपी बेल को सींचा है, जो अब बढ़कर फल देने लगी है और उन्हें आनंद प्रदान कर रही है। वे आगे कहती हैं कि जैसे दही को मथकर उसमें से घी निकाल लिया जाता है और बाकी छाछ छोड़ दी जाती है, उसी प्रकार उन्होंने संसार की नश्वर वस्तुओं को त्यागकर भक्ति का सार प्राप्त कर लिया है। भक्तों को देखकर उन्हें प्रसन्नता होती है, जबकि संसार के लोगों को देखकर वे दुखी हो जाती हैं। अंत में वे प्रभु गिरधर से प्रार्थना करती हैं कि वे अपनी दासी मीरा का उद्धार करें और उन्हें संसार-सागर से पार लगाएँ। इस पद्यांश में मीराबाई ने भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति, प्रेम और पूर्ण समर्पण का वर्णन किया है। मीरा के लिए संसार में कृष्ण के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। उन्होंने सामाजिक बंधनों, लोक-लाज और पारिवारिक प्रतिष्ठा का त्याग करके स्वयं को पूर्णतः कृष्ण-भक्ति में समर्पित कर दिया है।

काव्यांश (1)

1. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छांड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गयी, आणंद-फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोही

1. पद्यांश में 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई' पंक्ति का केंद्रीय भाव क्या है?

(क) सामाजिक बंधनों का विरोध

(ख) एकनिष्ठ एवं अनन्य भक्ति की अभिव्यक्ति

(ग) सांसारिक वैभव का महत्त्व

(घ) पारिवारिक संबंधों की श्रेष्ठता

2. 'अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी' में 'प्रेम-बेलि' का आशय है–

(क) वास्तविक लता का रोपण

(ख) सांसारिक प्रेम का विस्तार

(ग) ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति का विकास

(घ) परिवार के प्रति समर्पण

3. कथन-कारण

कथन (A): मीरा ने कुल-मर्यादा और लोक-लाज का त्याग कर दिया।

कारण (R): उनके लिए कृष्ण-भक्ति सामाजिक मान्यताओं से अधिक महत्त्वपूर्ण थी।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए–

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, किंतु R असत्य है।

(घ) A असत्य है, किंतु R सत्य है।

4. (दक्षता आधारित : कॉलम मिलान)

कॉलम-I	**कॉलम-II**
(A) प्रेम-बेलि	(i) भक्ति का सार प्राप्त करना
(B) अँसुवन जल	(ii) कृष्ण-प्रेम/भक्ति
(C) दधि मथि घृत काढ़ि लियो	(iii) विरह एवं समर्पण के आँसू
(D) लोक-लाज खोयी	(iv) सामाजिक बंधनों का त्याग

सही मिलान चुनिए–

(क) A-(ii), B-(iii), C-(i), D-(iv)

(ख) A-(iii), B-(ii), C-(iv), D-(i)

(ग) A-(iv), B-(i), C-(ii), D-(iii)

(घ) A-(ii), B-(iv), C-(iii), D-(i)

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. मीरा ने कृष्ण को अपना सर्वस्व स्वीकार किया है।
2. कवयित्री सांसारिक प्रतिष्ठा को सर्वोच्च मानती है।
3. 'दधि मथि घृत काढ़ि लियो' भक्ति के सारतत्त्व की प्राप्ति का प्रतीक है।
4. पद्यांश में भक्त और समाज के बीच मूल्य-संघर्ष का संकेत मिलता है।

सही विकल्प चुनिए–

(क) केवल 1 और 2 सत्य हैं।

(ख) केवल 1, 3 और 4 सत्य हैं।

(ग) केवल 2 और 4 सत्य हैं।

(घ) केवल 1 और 3 सत्य हैं।

उत्तरमाला :

1. (ख) 2.(ग) 3.(क) 4.(क) 5.(ख)

काव्यांश-2

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गयी, आणंद-फल होयी।
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी,
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी।
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी।
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोही॥

काव्यांश आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कथन-कारण प्रश्न

कथन (A): मीरा ने प्रेम-बेलि को आँसुओं से सींचा है।

कारण (R): मीरा के अनुसार सच्ची भक्ति प्रेम, त्याग और समर्पण से विकसित होती है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

2. सूची 1 का सूची II से मिलान कीजिए:

सूची-I	**सूची-II**
(A) प्रेम-बेलि	(i) श्रीकृष्ण
(B) आनंद-फल	(ii) भक्ति का विकास
(C) गिरधर	(iii) भक्त
(D) भगत	(iv) भक्ति का फल

सही विकल्प चुनिए–

(क) A-ii, B-iv, C-i, D-iii (ख) A-iv, B-ii, C-iii, D-i (ग) A-i, B-iii, C-iv, D-ii

(घ) A-iii, B-i, C-ii, D-iv

3. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. **मीरा ने भक्ति की तुलना प्रेम-बेलि से की है।**
2. **कवयित्री संसार को देखकर प्रसन्न होती है।**
3. **घृत प्राप्त करने का उदाहरण भक्ति के सार की प्राप्ति को दर्शाता है।**

(क) केवल 1 और 2 सत्य हैं। (ख) केवल 1 और 3 सत्य हैं।

(ग) केवल 2 और 3 सत्य हैं। (घ) 1, 2 और 3 सभी सत्य हैं।

4. भाषागत विशेषता पर आधारित प्रश्न

'प्रेम-बेलि' में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार (ग) यमक अलंकार (घ) श्लेष अलंकार

5. काव्यांश की भाषा और शैली की प्रमुख विशेषता क्या है?

(क) संस्कृतनिष्ठ एवं क्लिष्ट भाषा (ख) सरल, भावपूर्ण तथा गेय भाषा

(ग) उर्दू प्रधान भाषा (घ) वैज्ञानिक शैली

उत्तरमाला

1.(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

2.(क) A-ii, B-iv, C-i, D-iii

3.ख) केवल 1 और 3 सत्य हैं।

4.(ख) रूपक अलंकार

5.ख) सरल, भावपूर्ण तथा गेय भाषा

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई" पंक्ति मीरा के व्यक्तित्व और उनकी भक्ति-दृष्टि को किस प्रकार प्रकट करती है?

उत्तर- यह पंक्ति मीरा की अनन्य भक्ति और पूर्ण समर्पण को व्यक्त करती है। उनके लिए भगवान कृष्ण ही जीवन के आधार हैं। वे सांसारिक संबंधों, प्रतिष्ठा और भौतिक सुखों को महत्व नहीं देतीं। उनकी दृष्टि में ईश्वर ही सर्वस्व हैं, जिससे उनकी एकनिष्ठ भक्ति और आध्यात्मिक दृढ़ता प्रकट होती है।

प्रश्न 2. मीरा ने "लोक-लाज खोयी" कहकर किस सामाजिक स्थिति की ओर संकेत किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मीरा बताती हैं कि उन्होंने समाज की आलोचना, मर्यादाओं और रूढ़ियों की परवाह नहीं की। संतों की संगति और कृष्ण-भक्ति में लीन होकर उन्होंने लोक-लाज का त्याग कर दिया। यह उनकी स्वतंत्र चेतना और आध्यात्मिक साहस को दर्शाता है, जिसमें ईश्वर-प्रेम सामाजिक बंधनों से ऊपर है।

प्रश्न 3."अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी" में प्रयुक्त रूपक का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यहाँ प्रेम को बेल और आँसुओं को जल माना गया है। मीरा ने अपने विरह, प्रेम और भक्ति के आँसुओं से कृष्ण-प्रेम को विकसित किया है। निरंतर साधना और समर्पण से यह प्रेमरूपी बेल बढ़ती गई और अंततः आनंदरूपी फल प्रदान करने लगी। यह भक्ति की परिपक्वता का प्रतीक है।

प्रश्न 4. मीरा कौन-सा आध्यात्मिक संदेश देना चाहती हैं?

उत्तर- मीरा बताती हैं कि जैसे दही को मथकर उसका सार घी प्राप्त किया जाता है, वैसे ही जीवन में साधना और भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक सार प्राप्त होता है। सांसारिक मोह-माया त्याज्य है, जबकि ईश्वर-प्रेम जीवन का वास्तविक और स्थायी तत्व है।

प्रश्न 5. प्रथम पद में मीरा की भक्ति को "अनन्य भक्ति" क्यों कहा गया है?

उत्तर- मीरा की भक्ति अनन्य है क्योंकि उनका मन, जीवन और अस्तित्व पूर्णतः कृष्ण को समर्पित है। वे किसी अन्य शक्ति या व्यक्ति को महत्व नहीं देतीं। सामाजिक मर्यादाओं का त्याग, संत-संगति, प्रेम और आत्मसमर्पण उनकी भक्ति को एकनिष्ठ तथा विशिष्ट बनाते हैं।

प्रश्न 6. मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती है? वह रूप कैसा है?

उत्तर- मीरा कृष्ण की उपासना अपने पति रूप में करती है। यह रूप अत्यंत मनोहारी है। मीरा इस रूप पर बलिहारी जाती है। कृष्ण ने इस रूप में सिर पर मोर मुकुट पहन रखा है। मीरा को कृष्ण का यही रूप अति प्रिय है।

प्रश्न 7. संत-संगति का मीरा के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- संत-संगति ने मीरा की भक्ति को दृढ़ बनाया। इससे उनका मन संसार से हटकर ईश्वर-प्रेम में लग गया और उन्होंने लोक-लाज तथा सामाजिक बंधनों का त्याग कर दिया।

प्रश्न 8. लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं ?

उत्तर : लोग मीरा को बावरी इसलिए कहते है क्योंकि वह श्रीकृष्ण के प्रेम में पागल होकर उनकी मूर्ति के सम्मुख नाचती रहती है। वह कृष्ण को अपना पति मानती है। मीरा संतों की संगति में रहती है इन बातों के कारण लोग मीरा को बावरी कहते हैं ।

प्रश्न 9. मीरा भक्तों को देखकर प्रसन्न और जगत को देखकर दुखी क्यों होती हैं?

उत्तर- भक्त ईश्वर-प्रेम और सदाचार के मार्ग पर चलते हैं, इसलिए मीरा उन्हें देखकर प्रसन्न होती हैं। संसार के लोग मोह-माया में फँसे हैं, इसलिए उन्हें देखकर दुखी होती हैं।

पाठ -3

घर की याद (भवानी प्रसाद मिश्र)

पाठ का सारांश

'घर की याद' कविता में कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने घर से दूर रहने की स्थिति में अपने परिवार और घर के प्रति उमड़ने वाली भावनाओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। कवि जब घर से दूर होता है, तब उसे अपने परिवार के सभी सदस्यों की याद सताने लगती है। विशेष रूप से उसे अपनी माँ का स्नेह, पिता का अनुशासन, भाई-बहनों का प्रेम और घर का आत्मीय वातावरण बार-बार स्मरण आता है। कवि को घर की छोटी-छोटी बातें, पारिवारिक गतिविधियाँ और अपनेपन से भरा वातावरण याद आता है। घर से दूर रहकर वह अकेलापन अनुभव करता है और उसे एहसास होता है कि घर केवल रहने का स्थान नहीं, बल्कि प्रेम, सुरक्षा, अपनत्व और भावनात्मक सहारे का केंद्र है। कविता में कवि ने परिवार के प्रति अपने गहरे लगाव तथा भारतीय पारिवारिक संस्कृति की महत्ता को उजागर किया है। घर की स्मृतियाँ कवि के मन को भावुक कर देती हैं और उसके हृदय में अपने परिवार के प्रति प्रेम और सम्मान और भी बढ़ जाता है। यह कविता हमें बताती है कि जीवन में चाहे कितनी भी उपलब्धियाँ प्राप्त हों, घर और परिवार का स्थान सबसे महत्वपूर्ण होता है। घर का प्रेम, स्नेह और आत्मीयता मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति होती है। इस कविता में कवि ने घर और परिवार से दूर रहने की पीड़ा व्यक्त की है।

काव्यांश (1)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात भर गिरता रहा है,
प्राण-मन घिरता रहा है,
बहुत पानी गिर रहा हैं,
घर नजर में तिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर खुशी का पूर है जो,
घर कि घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर,
चार भाई चार बहिने,
भुजा भाई प्यार बहिने

1. 'आज पानी गिर रहा है, बहुत पानी गिर रहा है' पंक्ति में कवि किस प्राकृतिक दृश्य का वर्णन कर रहा है?

(A) आँधी का
(B) वर्षा का
(C) हिमपात का
(D) धूप का

2. वर्षा को देखकर कवि को किसकी याद आती है?

(A) विद्यालय की
(B) मित्रों की
(C) अपने घर और परिवार की
(D) गाँव के मेले की

3. कथन-कारण आधारित प्रश्न

कथन (A): वर्षा के कारण कवि का मन भावुक हो उठता है।

कारण (R): वर्षा का दृश्य कवि को अपने घर और परिवार की याद दिलाता है।

(A) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, परंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(C) कथन सत्य है, पर कारण असत्य है।

(D) कथन असत्य है, पर कारण सत्य है।

4. स्तंभ मिलान कीजिए

स्तंभ - A	**स्तंभ - B**
(क) चार भाई	(i) मायके में आई
(ख) बहिन	(ii) परिवार की एकता
(ग) घर	(iii) खुशी का पूर

सही विकल्प चुनिए–

(A) क-ii, ख-i, ग-iii

(B) क-i, ख-iii, ग-ii

(C) क-iii, ख-ii, ग-i

(D) क-ii, ख-iii, ग-i

5. 'घर कि घर में सब जुड़े हैं' पंक्ति से क्या भाव व्यक्त होता है?

(A) परिवार में मतभेद हैं।

(B) परिवार के सदस्य एक-दूसरे से जुड़े और स्नेहपूर्ण हैं।

(C) परिवार के सदस्य घर छोड़कर चले गए हैं।

(D) परिवार में कोई नहीं रहता।

उत्तरमाला

1. (B) 2. (C) 3. (A) 4. (A) 5. (B)

पठित काव्यांश (2)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,

माँ कि जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,

1. 'जो अभी भी खिलखिलाएँ' पंक्ति से किस गुण का बोध होता है?

(A) निराशा
(B) भय
(C) उत्साह और प्रसन्नता
(D) क्रोध

2. 'मौत के आगे न हिचकें' से कवि किस विशेषता का वर्णन कर रहा है?

(A) आलस्य
(B) साहस और निर्भीकता
(C) अहंकार
(D) चंचलता

3. कथन-कारण आधारित प्रश्न

कथन (A): **कवि की माँ औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकी थीं।**

कारण (R): **इसलिए कवि उनकी ममता और स्नेह को कम महत्त्व देता है।**

(A) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन सत्य है, पर कारण असत्य है।
(C) कथन असत्य है, पर कारण सत्य है।
(D) कथन और कारण दोनों असत्य हैं।

4. स्तंभ मिलान कीजिए

स्तंभ - A	**स्तंभ - B**
(क) खिलखिलाएँ	(i) कर्मठता
(ख) मौत के आगे न हिचकें	(ii) प्रसन्नता
(ग) काम में झंझा लरजता	(iii) निर्भीकता

सही विकल्प चुनिए–

(A) क-ii, ख-iii, ग-i
(B) क-iii, ख-i, ग-ii
(C) क-i, ख-ii, ग-iii
(D) क-ii, ख-i, ग-iii

5. 'बोल में बादल गरजता' का आशय क्या है?

(A) व्यक्ति बहुत धीरे बोलता है।
(B) व्यक्ति की वाणी में प्रभाव, ओज और आत्मविश्वास है।

(C) व्यक्ति केवल क्रोधित रहता है।

(D) व्यक्ति कम बोलता है।

उत्तरमाला- 1. (C) **2.** (B) **3.** (A) **4.** (A) **5.** (B)

अभ्यास प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. पानी के रात भर गिरने और प्राण मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है?

उत्तर- पानी के रात भर गिरने और प्राण मन के घिरने का आपस में गहरा संबंध है वर्षा होने पर मन में भी प्रेम की भावनाएँ उमड़ने- घुमड़ने लगती हैं। व्यक्ति का प्राण-मन अपनों से मिलने के लिए तरसने लगता है। वर्षा की बूँदें मन प्राण को जहाँ उल्लसित करती है, वहीं वियोगवस्था में वे मिलन की कामना पैदा करती हैं।

प्रश्न 2. कवि अपनी माँ की कौन-सी विशेषताओं का उल्लेख करता है?

उत्तर- कवि अपनी माँ को अशिक्षित किंतु अत्यंत स्नेहमयी, त्यागमयी और वात्सल्यपूर्ण बताता है। उनकी गोद में कवि को शांति, सुरक्षा और अपनत्व का अनुभव होता है।

प्रश्न 3. कवि के पिता का व्यक्तित्व कैसा है? पिता की कौन-सी विशेषताएँ बताई गई है?

उत्तर- कवि के पिता साहसी, कर्मठ, उत्साही और निर्भीक हैं। बुढ़ापा भी उनके उत्साह को कम नहीं कर पाया है। वे जीवन की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करते हैं।

प्रश्न 4. 'घर नहीं हूँ बस यही है' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि कहता है कि उसे कोई विशेष कष्ट नहीं है, परंतु घर और परिवार से दूर रहना उसके लिए सबसे बड़ी कमी है। यही दूरी उसे निरंतर दुखी करती है।

प्रश्न 5 मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' क्यों कहा है?

उत्तर. मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' इसलिए कहा है, क्योंकि वहाँ एक भाई के न होने से घर का वातावरण दुखपूर्ण हो जाता होगा। बहन भी भाई को घर में न देखकर बहुत दुखी हुई होगी।

प्रश्न 6. 'घर की याद' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।

उत्तर- 'घर की याद' कविता में कवि ने घर से दूर रहने की पीड़ा और परिवार के प्रति अपने गहरे प्रेम को व्यक्त किया है। वर्षा का वातावरण उसे अपने घर, माता-पिता, भाई-बहनों तथा पारिवारिक स्नेह की याद दिलाता है। कविता में आत्मीयता, स्मृति और पारिवारिक प्रेम का मार्मिक चित्रण हुआ है।

प्रश्न.7. 'घर की याद' कविता की दो भाषागत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- इस कविता की भाषा सरल, सहज तथा बोलचाल के निकट है। कविता में चित्रात्मकता, पुनरुक्ति प्रकाश तथा अनुप्रास अलंकार का प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। भाषा की आत्मीयता कविता के भावों को और अधिक मार्मिक तथा प्रभावपूर्ण बनाती है।

प्रश्न 8. यदि आपको पढ़ाई के लिए अपने घर से दूर रहना पड़े, तो परिवार से भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखने के लिए आप क्या करेंगे?

उत्तर- मैं नियमित रूप से अपने परिवार से फोन, वीडियो कॉल और संदेशों के माध्यम से संपर्क रखूँगा। अपनी समस्याएँ और खुशियाँ उनसे साझा करूँगा तथा उनके सुझावों का सम्मान करूँगा। इससे परिवार के साथ भावनात्मक संबंध मजबूत बने रहेंगे और अकेलेपन की भावना कम होगी।

प्रश्न 9. आज के समय में 'घर की याद' कविता विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार प्रेरणादायक है?

उत्तर- यह कविता विद्यार्थियों को परिवार के महत्व का बोध कराती है। पढ़ाई या नौकरी के लिए घर से दूर रहने वाले छात्रों को यह समझाती है कि परिवार का प्रेम और सहयोग जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। यह कविता पारिवारिक संबंधों को संजोकर रखने की प्रेरणा देती है।

पाठ 4 कविता-चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती

कवि परिचय : त्रिलोचन

कविता का सार

यह कविता ग्रामीण जीवन की सहजता, निष्कपटता और मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करती है। कविता की मुख्य पात्र चम्पा एक भोली-भाली ग्रामीण लड़की है, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानती। कवि उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करता है, परंतु चम्पा पढ़ाई में रुचि नहीं लेती। वह मानती है कि पढ़ाई का उद्देश्य दूर रहने वालों को पत्र लिखना है, जबकि वह अपने प्रियजनों से अलग रहना ही नहीं चाहती। कवि ने चम्पा के माध्यम से ग्रामीण समाज की वास्तविकताओं, अशिक्षा की समस्या और मानवीय संबंधों की गरिमा को अत्यंत सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। ग्रामीण जीवन में मानवीय संबंधों का विशेष महत्व होता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर-ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन को बेहतर बनाना भी है। चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती" कविता में कवि त्रिलोचन ने एक अशिक्षित ग्रामीण लड़की के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सरलता, निष्कपटता और मानवीय संवेदनाओं का चित्रण किया है। कविता शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए यह भी बताती है कि प्रेम, आत्मीयता और मानवीय संबंध जीवन के अनमोल मूल्य हैं। "यह कविता अशिक्षा और शिक्षा के महत्व के साथ-साथ ग्रामीण जीवन की सरलता, निष्कपटता और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण करती है।"

काव्यांश - (1)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

चंपा काले- काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है :
इन काले चीन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं
चंपा सुंदर की लड़की है
सुंदर ग्वाला है: गायें-भैंसें रखता है
चंपा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है
चंपा अच्छी है
चंचल है
नटखटभी है
कभी- कभी ऊधम करती है
कभी कभी वह कलम चुरा देती है
जैसे- तैसे उसे ढूँढ़ कर जब लाता हूँ
पाता हूँ अब कागज़ गायब
परेशान फिर हो जाता हूँ

1. चम्पा को किस बात पर हैरानी होती है?

(क) काले अक्षरों को देखकर
(ख) अक्षरों से प्रकट होते स्वरों को देखकर
(ग) काले अक्षरों के महत्व को जानकार
(घ) कवि को अक्षर पढ़ते देख

2. कवि के पढ़ने के समय चम्पा के आने से क्या स्पष्ट होता है?

(क) उसकी जिज्ञासा
(ख) उसका क्रोध
(ग) उसका आलस्य
(घ) उसका भय

3. कविता में 'काले-काले अच्छर' का अर्थ है–

(क) चित्र
(ख) अक्षर
(ग) समाचार
(घ) पुस्तकालय

4. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर सही विकल्प चुनिए-

कथन (A): चम्पा पढ़ी-लिखी नहीं है।

कारण (R): वह अक्षरों की पहचान नहीं कर पाती।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(ख) दोनों सत्य हैं पर R, A की व्याख्या नहीं है।
(ग) A सत्य, R असत्य
(घ) A असत्य, R सत्य

5. सत्य/असत्य चुनिए–

1. चम्पा अक्षरों को पहचानती है।
2. कवि पढ़ता है।
3. चम्पा पढ़ने के समय आती है।
4. चम्पा शहर में रहती है।

(क) केवल 2 और 3 सत्य
(ख) केवल 1 और 4 सत्य
(ग) सभी सत्य
(घ) सभी असत्य

उत्तरमाला: 1.(ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)

काव्यांश - 2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

चंपा कहती है :
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चंपा चुप हो जाती है
उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चंपा,तुम भी पढ़ लो
हारे-गाढ़े काम सरेगा

गाँधी बाबा की इच्छा है-
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने- लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी।

1. चम्पा के व्यक्तित्व का कौन-सा गुण उभरता है?

(क) कठोरता
(ख) चंचलता

(ग) स्वार्थ (घ) अहंकार

2. कवि चम्पा के प्रति कैसा भाव रखता है?

(क) उपेक्षा (ख) स्नेह

(ग) घृणा (घ) भय

3. 'चंचल' शब्द का अर्थ है–

(क) गंभीर (ख) गतिशील और चुलबुली

(ग) आलसी (घ) क्रोधित

4. कॉलम मिलान कीजिए

कॉलम A	**कॉलम B**
चम्पा	(i) चंचल
कवि	(ii) स्नेह
अशिक्षा	(iii) अक्षर ज्ञान का अभाव

सही विकल्प:

(क) चम्पा- i, कवि- ii, अशिक्षा- iii (ख) चम्पा- ii, कवि- i, अशिक्षा- iii

(ग) चम्पा- iii, कवि- ii, अशिक्षा- i (घ) सभी गलत

5. कथन (A): बच्चे पढना- लिखना नहीं चाहते |

कारण (R): उन्हें जबरदस्ती पढ़ाया लिखाया जाता है |

विकल्प:

(क) कथन (A) सही है और कारण (R) उसकी सही व्याख्या है |

(ख) कथन (A) गलत है और कारण (R) उसकी गलत व्याख्या है |

(ग) कथन (A) गलत है किंतु कारण (R) गलत है |

(घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या है |

उत्तरमाला 1. (ख) 2. **(ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (ख)**

अभ्यास प्रश्न उत्तर

1. कवि ने चम्पा के माध्यम से ग्रामीण जीवन की किन विशेषताओं को प्रस्तुत किया है?

उत्तर- कवि ने चम्पा के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सरलता, आत्मीयता, निष्कपटता और मानवीय संवेदनाओं को चित्रित किया है। गाँव के लोगों के बीच संबंधों में निकटता होती है। भौतिकता से दूर यह जीवन प्रेम, विश्वास और सहजता पर आधारित दिखाई देता है।

2. चम्पा पढ़ाई-लिखाई को क्यों महत्व नहीं देती? उसके दृष्टिकोण का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर- चम्पा पढ़ाई को मुख्यतः पत्र-लेखन का साधन मानती है। वह सोचती है कि पत्र तब लिखे जाते हैं जब लोग दूर चले जाते हैं। चूँकि वह अपने प्रियजनों से दूर नहीं रहना चाहती, इसलिए उसे पढ़ाई का महत्व समझ नहीं आता। यह उसकी भावनात्मक सोच को दर्शाता है।

3. कविता में शिक्षा और संवेदनशीलता के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कविता में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया है, किंतु यह भी दिखाया गया है कि संवेदनशीलता और मानवीय मूल्य केवल शिक्षा से नहीं आते। चम्पा अशिक्षित होते हुए भी प्रेम, आत्मीयता और मानवीय संबंधों की गहरी समझ रखती है। इससे शिक्षा और संवेदनशीलता के संतुलन का संदेश मिलता है।

4. कविता में अशिक्षा की समस्या किस प्रकार उभर कर सामने आती है?

उत्तर- चम्पा अक्षरों को नहीं पहचानती और शिक्षा के महत्व को भी पूरी तरह नहीं समझती। इससे ग्रामीण समाज में व्याप्त अशिक्षा की समस्या सामने आती है। कवि संकेत देता है कि शिक्षा का अभाव व्यक्ति की समझ और अवसरों को सीमित कर सकता है।

5. कवि ने चंपा की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- कवि ने चंपा की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है-

1. चंपा अनपढ़ है और इसी स्थिति में रहना चाहती है।
2. चंपा स्पष्टवक्ता है। वह अपनी बात घुमा-फिराकर नहीं कहती, स्पष्ट रूप में कहती है।
3. वह अपने भविष्य को सुरक्षित कर लेना चाहती है।
4. वह कामकाजी है, चरवाही का काम करती है।

6. "चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती" शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- शीर्षक कविता की मूल समस्या और मुख्य पात्र दोनों को सामने लाता है। "काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती" चम्पा की अशिक्षा का संकेत है। साथ ही यह शीर्षक ग्रामीण समाज की शिक्षा संबंधी स्थिति को भी उजागर करता है। इसलिए यह शीर्षक पूर्णतः सार्थक और प्रभावी है।

7. चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

उत्तर-चंपा नहीं चाहती कि उसका पति उसे छोडकर कलकत्ता चला जाए। जब कलकत्ता ही बजर गिरने से नष्ट हो जाएगा तब कलकत्ता उसके पति को नहीं बुला पाएगा। लाक्षणिक अर्थ में चंपा शोषक व्यवस्था के प्रतीक कलकत्ता विरोध में खड़ी हो जाती है। कलकत्ते पर वज्र गिरने की कामना जीवन के खुरदरेपन के प्रति चंपा के संघर्ष एवं जीवटता प्रकट करती है।

8. आपके विचार में चंपा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहीं पढ़ूँगी?

उत्तर- हमारे विचार में चंपा ने ऐसा इसलिए कहा होगा कि मैं नहीं पढ़ूँगी-

1. वह पढ़ने-लिखने को कोई बहुत अच्छा काम नहीं मानती।
2. यह पढ़ने-लिखने वाले लोग शोषक व्यवस्था का अंग बन जाते हैं।
3. वह अभी पढ़ाई-लिखाई का महत्त्व नहीं समझती।

9. चंपा को इस पर क्यों विश्वास नहीं होता कि गाँधी बाबा ने पढ़ने-लिखने की बात कही?

उत्तर- वह गाँधी बाबा को अच्छा आदमी मानती है और उसकी दृष्टि में पढ़ने-लिखने की बात कहने वाला अच्छा नहीं हो सकता। व्यंग्यार्थ यह है कि पढ़-लिखकर व्यक्ति अपनी सहजता खो बैठता है। तब वह शोषक व्यवस्था का एक अंग बन जाता है। शोषक कभी आम आदमी के भले की बात नहीं कह सकता |

10. इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की किस विडंबनात्मक स्थिति का वर्णन हुआ है?

उत्तर- इस कविता में पूर्वी प्रदेश की स्त्रियों की अनपढ़ता और उनके अपने प्रिय से दूर रहने की विवशता का वर्णन हुआ है। वे अनपढ़ हैं। उनके गाँवों में रोजगार नहीं है। अतः उनके पतियों को रोजगार के लिए कलकत्ता जैसे महानगरों में जाना पड़ता है। उनकी विडंबना यह है कि वे पति की चिट्ठी को पढ़ भी नहीं पातीं और अपना संदेश लिखकर भी नहीं भेज पातीं।

11. संदेश ग्रहण करने और भेजने में असमर्थ होने पर एक अनपढ़ लड़की को किस वेदना और विपत्ति को भोगना पड़ता है, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर- अनपढ़ लड़की को अनेक मानसिक विपत्तियों से गुजरना पड़ता है। वह अपने परिवार और पति से दूर रहने पर बेबस हो जाती है। वह न तो पत्र लिखकर अपने माता-पिता या पति को हालचाल दे सकती हैं, न ही उनकी चिट्ठी पढ़कर उनका हालचाल जान सकती हैं। यदि वह किसी और से चिट्ठी लिखवा ले तो भी अपने मन की सारी प्रेम - भरी बातें और वियोग के दुख को नहीं बतला सकती। अकेले में उसकी सबसे बड़ी पीड़ा तो अकेलेपन को लेकर होती है। वह उसे अन्य किसी के साथ नहीं बाँट सकती।

पाठ - 5

गज़ल (दुष्यंत कुमार)

गज़ल का सारांश

दुष्यंत कुमार की यह ग़ज़ल स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की विडंबनाओं, असमानताओं और राजनीतिक व्यवस्था की असफलताओं को उजागर करती है। कवि बताता है कि स्वतंत्रता के समय प्रत्येक घर तक सुख-समृद्धि पहुँचाने के जो सपने दिखाए गए थे, वे पूरे नहीं हुए। आज भी अनेक लोगों को मूलभूत सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं। कवि समाज में व्याप्त गरीबी, बेरोज़गारी, शोषण और अन्याय की ओर संकेत करता है। कवि निराशा के बीच भी आशा और परिवर्तन की संभावना बनाए रखता है। वह मानता है कि यदि आवाज़ में प्रभाव हो तो पत्थर जैसे कठोर हृदय भी पिघल सकते हैं। गज़ल में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर होने वाले नियंत्रण और सत्ता की दमनकारी प्रवृत्तियों की भी आलोचना की गई है। कवि सामाजिक परिवर्तन, मानवता, समानता और न्यायपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देता है। स्वतंत्रता के बाद टूटे हुए सपनों का चित्रण, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं पर प्रहार,आम जनता की समस्याओं को स्वर प्रदान करन, गरीबी, बेरोज़गारी और शोषण का चित्रण तथा व्यवस्था की कमियों और विसंगतियों को उजागर किया गया है।

काव्यांश-(1)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।
ना हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।

प्रश्न 1. 'कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए' पंक्ति में 'चिरागाँ' किसका प्रतीक है?

(A) त्योहारों का उत्सव
(B) विकास और खुशहाली
(C) धार्मिक अनुष्ठान
(D) प्राकृतिक प्रकाश

प्रश्न 2. 'यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है' पंक्ति से क्या भाव व्यक्त होता है?

(A) प्रकृति का सौंदर्य
(B) मौसम का परिवर्तन
(C) व्यवस्था की विसंगति और असुरक्षा
(D) वृक्षों का महत्व

प्रश्न 3. (कथन-कारण)

कथन (A): कवि समाज में व्याप्त असमानता और टूटे हुए वादों से असंतुष्ट है।
कारण (R): क्योंकि कवि को लगता है कि सभी सरकारी योजनाएँ पूर्णतः सफल हो चुकी हैं।

(A) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन और कारण दोनों असत्य हैं।

(C) कथन सत्य है, पर कारण असत्य है।

(D) कथन असत्य है, पर कारण सत्य है।

प्रश्न 4. (स्तंभ मिलान)

स्तंभ - A	**स्तंभ - B**
(क) चिरागाँ	(i) गरीबी और अभाव
(ख) धूप लगती है	(ii) विकास एवं समृद्धि
(ग) ना हो कमीज	(iii) व्यवस्था की विडंबना

सही मिलान चुनिए–

(A) क-iii, ख-ii, ग-i (B) क-ii, ख-iii, ग-i (C) क-i, ख-iii, ग-ii (D) क-ii, ख-i, ग-iii

प्रश्न 5. 'ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए' में किन लोगों की ओर संकेत करता है?

(A) धनी वर्ग की ओर

(B) राजनेताओं की ओर

(C) संघर्षशील एवं अभावग्रस्त की ओर

(D) सैनिकों की ओर

उत्तरमाला 1.(B) 2(C) 3 (C) उत्तर4 (B) 5 (C)

काव्यांश-(2)

1. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए।
तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।
जिये तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

प्रश्न 1.'मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए' पंक्ति में कवि किस बात के लिए बेचैन है?

(A) प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए

(B) धन अर्जित करने के लिए

(C) अपनी वाणी से परिवर्तन लाने के लिए

(D) यात्रा करने के लिए

प्रश्न 2. 'तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की' पंक्ति किस ओर संकेत करती है?

(A) शिक्षा व्यवस्था की ओर

(B) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर नियंत्रण की ओर

(C) प्रकृति संरक्षण की ओर

(D) धार्मिक आस्था की ओर

प्रश्न 3. (कथन-कारण)

कथन (A): कवि को विश्वास है कि प्रभावशाली आवाज़ समाज में परिवर्तन ला सकती है।

कारण (R): कवि मानता है कि पत्थर जैसे कठोर लोग भी कभी नहीं बदल सकते।

(A) कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

(B) कथन और कारण दोनों असत्य हैं।

(C) कथन असत्य है, पर कारण सत्य है।

(D) कथन सत्य है, पर कारण असत्य है।

प्रश्न 4. (स्तंभ मिलान)

स्तंभ - A	**स्तंभ - B**
(क) पत्थर	(i) अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध
(ख) जुबान सिल देना	(ii) कठोर व्यवस्था / जड़ सोच
(ग) गुलमोहर	(iii) सुंदर और आदर्श जीवन

सही विकल्प चुनिए–

(A) क-iii, ख-ii, ग-i (B) क-ii, ख-i, ग-iii (C) क-i, ख-iii, ग-ii (D) क-ii, ख-iii, ग-i

प्रश्न 5. 'गुलमोहर' का प्रयोग कवि ने किस रूप में किया है?

(A) संघर्ष के प्रतीक के रूप में

(B) क्रांति के प्रतीक के रूप में

(C) सुंदर, सुखद और सार्थक जीवन के प्रतीक के रूप में

(D) गरीबी के प्रतीक के रूप में

उत्तरमाला- 1. (C) 2. (B) 3. (A) 4. (B) 5. (C)

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि स्वतंत्रता के समय किए गए वादों की ओर संकेत करता है। प्रत्येक घर तक सुख-सुविधाएँ पहुँचाने का वादा था, परंतु आज भी अनेक लोग मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं।

प्रश्न 2. कवि 'आदमी का ख्वाब' को क्यों महत्व देता है?

उत्तर- कवि मानवता और मानवीय मूल्यों में विश्वास रखता है। वह मानता है कि बेहतर समाज का निर्माण मनुष्य के प्रयासों से ही संभव है, इसलिए 'आदमी का ख्वाब' महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 3. 'ना हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेंगे' पंक्ति किस वर्ग की स्थिति को दर्शाती है?

उत्तर- यह पंक्ति समाज के गरीब और वंचित वर्ग की दयनीय स्थिति को दर्शाती है। इसमें उनकी विवशता, संघर्षशीलता और अभावपूर्ण जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है।

प्रश्न 4. कवि अपनी आवाज़ में असर क्यों चाहता है?

उत्तर- कवि चाहता है कि उसकी वाणी समाज को जागरूक करे और परिवर्तन लाए। वह अन्याय और शोषण के विरुद्ध लोगों में चेतना उत्पन्न करना चाहता है।

प्रश्न 5. 'गुलमोहर' का प्रयोग कवि ने किस भाव को व्यक्त करने के लिए किया है ?

उत्तर- 'गुलमोहर' सुंदरता, जीवन, प्रेम और अपनेपन का प्रतीक है। इसके माध्यम से कवि अपने जीवन और मृत्यु दोनों को अर्थपूर्ण बनाने की इच्छा व्यक्त करता है।

प्रश्न 6. ग़ज़ल में स्वतंत्रता के बाद की सामाजिक स्थिति का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

उत्तर- कवि ने स्वतंत्रता के बाद की सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। जनता से किए गए वादे पूरे नहीं हुए। गरीबी, असमानता और अभाव आज भी मौजूद हैं। कवि व्यवस्था की विफलताओं पर व्यंग्य करते हुए सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देता है।

प्रश्न 7. गज़ल में आम आदमी की पीड़ा किस प्रकार व्यक्त हुई है?

उत्तर- कवि ने गरीब और संघर्षशील लोगों की कठिनाइयों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। 'ना हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेंगे' जैसी पंक्तियाँ उनकी विवशता और अभावग्रस्त जीवन को दर्शाती हैं। इससे आम आदमी की पीड़ा और संघर्ष उजागर होते हैं।

प्रश्न 8. दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल की दो प्रमुख भाषागत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- इस ग़ज़ल की भाषा सरल, सहज और जनसामान्य के निकट है। इसमें उर्दू शब्दावली का प्रभावी प्रयोग हुआ है। व्यंग्य, प्रतीक और बिंबों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 9. यदि आपके क्षेत्र में लोगों को मूलभूत सुविधाएँ नहीं मिल रही हों, तो एक जागरूक नागरिक के रूप में आप क्या करेंगे?

उत्तर- मैं संबंधित अधिकारियों को समस्या से अवगत कराऊँगा, जन-जागरूकता अभियान चलाऊँगा और लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करूँगा। आवश्यक होने पर सामूहिक प्रयासों और जनप्रतिनिधियों की सहायता से समस्या के समाधान का प्रयास करूँगा।

प्रश्न 10. कवि अन्याय और असमानता के विरुद्ध आवाज़ उठाने की बात करता है। वर्तमान समय में विद्यार्थी इस संदेश को अपने जीवन में कैसे अपनाएँ?

उत्तर- विद्यार्थी अन्याय, भेदभाव और गलत कार्यों का विरोध कर सकते हैं। वे सत्य, समानता और मानवता के मूल्यों को अपनाकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। जागरूकता, साहस और जिम्मेदारी से वे एक बेहतर समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

प्रश्न. 11. आखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह के फूलदार वृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है? समझाकर लिखें।

उत्तर- गुलमोहर एक फूलदार वृक्ष है। यह शांति प्रदान करने वाला है। कवि ने इस शब्द का यहाँ विशेष अर्थ के लिए प्रयोग किया है। मनुष्य अपने घर में शांति व मानवीय गुणों से युक्त होकर रहे। यदि उसे बाहर रहना पड़े तो भी वह शांति व मानवीय गुणों को बनाए रखे। इससे समाज की व्यवस्था बनी रहेगी तथा अराजकता की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी।

प्रश्न 12. पहले शेर में चिराग शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ एवं काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्त्व है?

उत्तर- जब कवि एक घर के लिए चिरागाँ (अनेक दीपक) तय था की बात करता है तो केवल योजनाओं में दिखाए गए सुनहरे ख्वाबों की ओर संकेत करता है। दूसरी पंक्ति में वह स्पष्ट करता है कि सब्जबाग दिखाने वाली इस योजना को कार्यान्वित करने के समय दशा यह है कि एक पूरे शहर

के हिस्से में एक चिराग भी नहीं आया। काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से चिरागाँ के बदले चिराग का न मिलना एक चमत्कारी प्रयोग है जो शाब्दिक कम और अर्थपूर्ण सौंदर्य अधिक बिखेर रहा है।

प्रश्न.13. गज़ल के तीसरे शेर को गौर से पढ़े। यहाँ दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तर- तीसरे शेर में कवि ने उत्साहहीन, दीन हीन लोगों की ओर संकेत किया है जो हर स्थिति को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। वे अन्याय का विरोध नहीं करते। उनकी प्रतिरोध शक्ति समाप्त प्राय: हो चुकी है। राजनेता व अफसरशाही जनता की इसी उदासीनता का लाभ उठाकर उसका शोषण करते रहते हैं।

पाठ - 6 अक्क महादेवी - वचन

पाठ-परिचय

पाठ में अक्क महादेवी के दो प्रसिद्ध वचन संकलित हैं। दोनों वचनों का अंग्रेज़ी से हिंदी अनुवाद केदारनाथ सिंह ने किया है। प्रथम वचन में इंद्रिय-निग्रह तथा आत्मसंयम का संदेश दिया गया है, जबकि दूसरे वचन में ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, वैराग्य और अहंकार-त्याग की भावना व्यक्त की गई है। **प्रथम वचन का सार** प्रथम वचन में कवयित्री भूख, प्यास, नींद, क्रोध, मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या जैसे मानवीय भावों को संबोधित करती हैं। वे उनसे अनुरोध करती हैं कि वे साधना के मार्ग में बाधा न बनें। कवयित्री का मानना है कि मनुष्य यदि अपनी इंद्रियों और मनोविकारों पर नियंत्रण प्राप्त कर ले तो वह ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है। अंत में वह समस्त चराचर जगत से कहती हैं कि वे इस दुर्लभ अवसर को न चूकें क्योंकि वह स्वयं चन्नमल्लिकार्जुन (शिव) का संदेश लेकर आई हैं।

द्वितीय वचन का सार दूसरे वचन में कवयित्री अपने आराध्य चन्नमल्लिकार्जुन के प्रति पूर्ण समर्पण व्यक्त करती हैं। वे ईश्वर को जूही के फूल के समान पवित्र, कोमल और सुगंधित बताती हैं। कवयित्री ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि उनका अहंकार पूर्णतः समाप्त हो जाए। वे चाहती हैं कि उनके जीवन में किसी प्रकार का मोह, स्वार्थ या संग्रह की भावना न रहे। उनकी इच्छा है कि संसार की कोई वस्तु उन्हें आकर्षित न कर सके और उनका समस्त अस्तित्व केवल ईश्वर-भक्ति में समर्पित हो जाए। इंद्रिय-नियंत्रण का संदेश कवयित्री भूख, प्यास, नींद, क्रोध, मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या को साधना में बाधक मानती हैं। आत्मसंयम का महत्व लक्ष्य-प्राप्ति तथा ईश्वर-प्राप्ति के लिए आत्मसंयम आवश्यक बताया गया है। पूर्ण आत्मसमर्पण दूसरे वचन में भक्त और भगवान के बीच पूर्ण समर्पण का भाव व्यक्त हुआ है। अहंकार का विनाश कवयित्री अपने 'स्व' या 'मैं' को समाप्त कर ईश्वर में लीन होना चाहती हैं। अक्क महादेवी साहित्य में स्त्री-स्वतंत्रता और विद्रोही चेतना की अग्रदूत मानी जाती हैं। उन्होंने पुरुष-प्रधान व्यवस्था तथा रूढ़ सामाजिक मान्यताओं का विरोध किया।

काव्यांश-1

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

हे भूख! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल-पुथल
हे मोह! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
हे मद! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत
ओ चराचर! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का।

(i) कवयित्री ने किन भावों को साधना में बाधक माना है?

क. प्रेम, दया, करुणा
ख. भूख, प्यास, क्रोध, लोभ आदि
ग. सत्य, अहिंसा, त्याग
घ. श्रद्धा, विश्वास, समर्पण

(ii) 'ओ चराचर! मत चूक अवसर' का आशय है–

क. समय का सदुपयोग करो
ग. संसार का त्याग करो
ख. धन का संचय करो
घ. यात्रा पर निकल जाओ

(iii) कथन (A) : कवयित्री ने भूख, प्यास और नींद को संबोधित किया है।

कारण (R) : कवयित्री इन भावों को साधना के मार्ग में सहायक मानती हैं।

क. A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

ख. A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R सही व्याख्या नहीं है।

ग. A सत्य है, R असत्य है।

घ. A असत्य है, R सत्य है।

(iv) **मिलान कीजिए–**

सूची-I	सूची-II
(A) मोह	(i) जलाना
(B) ईर्ष्या	(ii) उथल-पुथल
(C) क्रोध	(iii) पाश
(D) लोभ	(iv) ललचाना

क. A-(iii), B-(i), C-(ii), D-(iv)
ख. A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i)
ग. A-(iv), B-(ii), C-(i), D-(iii)
घ. A-(i), B-(iv), C-(iii), D-(ii)

(v) यदि कोई विद्यार्थी मोबाइल और सोशल मीडिया के आकर्षण में पढ़ाई से दूर हो रहा है, तो यह काव्यांश उसे क्या सीख देता है?

क. मनोरंजन को बढ़ावा देना चाहिए।
ग. पढ़ाई छोड़ देनी चाहिए।
ख. इच्छाओं और आकर्षणों पर नियंत्रण
घ. दूसरों की नकल करनी चाहिए।

उत्तर - (i) ख (ii) क (iii) ग (iv) क (v) ख

काव्यांश-2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर
मँगवाओ मुझसे भीख
और कुछ ऐसा करो
कि भूल जाऊँ अपना घर पूरी तरह।
झोली फैलाऊँ और न मिले भीख,
कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को
तो वह गिर जाए नीचे,
और यदि मैं झुकूँ उसे उठाने
तो कोई कुत्ता आ जाए
और उसे झपटकर छीन ले मुझसे।

(i) कवयित्री ने ईश्वर की तुलना किससे की है?

क. कमल के फूल से
ख. गुलाब के फूल से
ग. जूही के फूल से
घ. चंपा के फूल से

(ii) कवयित्री 'अपना घर' क्यों भूलना चाहती है?

क. नया घर बनाना चाहती है
ख. घर से नाराज़ है
ग. मोह-माया से मुक्त होना चाहती है
घ. यात्रा पर जाना चाहती है

(iii) कथन (A) : कवयित्री ईश्वर से भीख माँगने की इच्छा व्यक्त करती है।

कारण (R) : वह अपने अहंकार और स्वार्थ का पूर्ण त्याग करना चाहती है।

क. A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
ख. A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R सही व्याख्या नहीं है।
ग. A सत्य है, R असत्य है।
घ. A असत्य है, R सत्य है।

(iv) मिलान कीजिए–

सूची-I	**सूची-II**
(A) जूही का फूल	(i) अहंकार का त्याग
(B) भीख माँगना	(ii) ईश्वर
(C) अपना घर	(iii) मोह-माया
(D) निस्पृहता	(iv) वैराग्य

क. A-(ii), B-(i), C-(iii), D-(iv)
ख. A-(iii), B-(ii), C-(iv), D-(i)
ग. A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)
घ. A-(i), B-(iv), C-(iii), D-(ii)

(v) यदि किसी व्यक्ति को सफलता मिलने पर अत्यधिक अहंकार हो जाए, तो यह काव्यांश उसे क्या संदेश देता है?

क. अहंकार सफलता की पहचान है।
ख. दूसरों को छोटा समझना चाहिए।
ग. विनम्रता और आत्मसमर्पण महान गुण हैं।
घ. सफलता का प्रदर्शन करना चाहिए।

उत्तर- (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) क (v) ग

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. कवयित्री ने भूख, प्यास और नींद को क्यों संबोधित किया है?

उत्तर : कवयित्री ने भूख, प्यास और नींद को संबोधित करके उन्हें साधना के मार्ग में बाधा बनने से रोकने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि आत्मसंयम और इंद्रिय-नियंत्रण के बिना ईश्वर-प्राप्ति संभव नहीं है।

प्रश्न 2. कवयित्री ने ईश्वर की तुलना जूही के फूल से क्यों की है?

उत्तर : जूही का फूल श्वेत, कोमल, सुगंधित और पवित्र होता है। ईश्वर भी करुणामय, पवित्र तथा सब पर समान कृपा करने वाले हैं। इसी समानता के कारण कवयित्री ने ईश्वर की तुलना जूही के फूल से की है।

प्रश्न 3. 'अपना घर' से कवयित्री का क्या आशय है?

उत्तर : 'अपना घर' से आशय सांसारिक मोह-माया, पारिवारिक आसक्ति और भौतिक संबंधों से है। कवयित्री ईश्वर-प्राप्ति के लिए इन बंधनों से मुक्त होना चाहती है।

प्रश्न 4. चन्नमल्लिकार्जुन कौन हैं?

उत्तर : चन्नमल्लिकार्जुन भगवान शिव का एक रूप हैं। अक्क महादेवी उन्हें अपना आराध्य देव मानती थीं और उनकी अनन्य भक्त थीं।

प्रश्न 5. दूसरे वचन का मूल संदेश क्या है?

उत्तर : दूसरे वचन का मूल संदेश अहंकार का त्याग, वैराग्य और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण है।

प्रश्न 6. 'लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं'–इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इंद्रियाँ मनुष्य को सांसारिक सुखों और भोग-विलास की ओर आकर्षित करती हैं। भूख, प्यास, मोह, लोभ, क्रोध और ईर्ष्या जैसे विकार मन को विचलित कर देते हैं। इससे साधना और लक्ष्य-प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है। इसलिए ईश्वर-प्राप्ति और आत्मविकास के लिए इंद्रियों पर नियंत्रण आवश्यक है।

प्रश्न 7. 'ओ चराचर! मत चूक अवसर' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कवयित्री समस्त जड़ और चेतन प्राणियों को संबोधित करते हुए कहती हैं कि मानव जीवन अत्यंत दुर्लभ है। यदि इस जीवन का उपयोग ईश्वर-भक्ति और आत्मकल्याण के लिए नहीं किया गया तो यह अवसर व्यर्थ चला जाएगा। इसलिए मनुष्य को सांसारिक मोह में न फँसकर ईश्वर की ओर उन्मुख होना चाहिए।

प्रश्न 8. ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया हैं ? जूही के फूल से समानता का आधार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : जूही का फूल अपनी श्वेतता, कोमलता और सुगंध के कारण पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। ईश्वर भी पवित्र, करुणामय और सबके प्रति समान भाव रखने वाले हैं। जिस प्रकार

जूही का फूल बिना भेदभाव के अपनी सुगंध फैलाता है, उसी प्रकार ईश्वर भी सभी जीवों पर समान कृपा करते हैं।

प्रश्न 9. दूसरे वचन में कवयित्री ने अहंकार-त्याग की भावना को किस प्रकार व्यक्त किया है?

उत्तर : कवयित्री ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह ऐसी स्थिति प्राप्त करे जहाँ उसे भीख माँगनी पड़े और प्राप्त वस्तु भी उसके पास न टिके। इस प्रकार वह अपने 'स्व' और अहंकार का पूर्ण त्याग करना चाहती है। उसका उद्देश्य केवल ईश्वर की कृपा प्राप्त करना है।

प्रश्न 10. अक्क महादेवी की भक्ति-भावना की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : अक्क महादेवी की भक्ति निष्काम, समर्पणपूर्ण और वैराग्ययुक्त है। वे ईश्वर को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानती हैं। उनकी भक्ति में अहंकार-त्याग, आत्मसंयम तथा सांसारिक मोह-माया से मुक्ति की भावना दिखाई देती है।

प्रश्न 11. अक्क महादेवी को स्त्री-चेतना की अग्रदूत क्यों कहा जाता है?

उत्तर : अक्क महादेवी ने सामाजिक रूढ़ियों और पुरुष-प्रधान व्यवस्था का विरोध किया। उन्होंने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता को महत्त्व दिया तथा स्त्रियों को अपनी पीड़ा और संघर्ष व्यक्त करने की प्रेरणा दी। इसलिए उन्हें स्त्री-चेतना की अग्रदूत माना जाता है।

प्रश्न 12. कवयित्री ने लोभ, मोह और ईर्ष्या को त्यागने पर बल क्यों दिया है?

उत्तर : ये सभी मनोविकार मनुष्य को सत्य और आध्यात्मिक उन्नति से दूर ले जाते हैं। इनके कारण मन अशांत रहता है और ईश्वर-भक्ति में बाधा आती है। इसलिए कवयित्री इनके त्याग पर बल देती हैं।

पाठ 7 'सबसे खतरनाक'- अवतार सिंह संधू (उपनाम - 'पाश')

कविता का सार

'सबसे खतरनाक' कविता मूल रूप से पंजाबी भाषा से अनूदित है। यह कविता दिनोंदिन अधिक क्रूर, नृशंस और संवेदनहीन होती जा रही दुनिया की विद्रूपताओं (कमियों) को उजागर करती है। 'मेहनत की लूट', 'पुलिस की मार', 'गद्दारी और लोभ' जैसी स्थितियाँ बुरी और खतरनाक तो हैं, लेकिन ये 'सबसे खतरनाक' नहीं हैं; क्योंकि इनमें मनुष्य की आंतरिक चेतना और प्रतिरोध (लड़ने का जज्बा) ज़िंदा रहता है। 'सबसे खतरनाक' स्थिति वह है जब मनुष्य के भीतर की तड़प खत्म हो जाती है, वह 'मुर्दा शांति' यानी चरम संवेदनशून्यता से भर जाता है, उसके बेहतर भविष्य के सपने मर जाते हैं और वह एक लीकबद्ध यांत्रिक जीवन जीने लगता है। जब मनुष्य समाज में हो रहे क्रूर अत्याचारों और हत्याकाण्डों को देखकर भी मूकदर्शक बना रहता है, तब समाज पूरी तरह जड़ हो जाता है। पुलिस की मार या पैसों की लूट बाहरी है जिसे संघर्ष से बदला जा सकता है, पर आत्मा का मर जाना अपरिवर्तनीय है। सामाजिक अन्याय और दमन को बिना किसी विरोध के चुपचाप सह लेना ही मुर्दा शांति है। कविता में व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश है और यह पाठक की सोई हुई चेतना को जगाने का कार्य करती है।

काव्यांश - 1

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
न होना तड़प का सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे खतरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना

प्रश्न 1. काव्यांश में प्रयुक्त 'मुर्दा शांति से भर जाना' वाक्यांश किस सामाजिक विसंगति की ओर संकेत करता है?

(क) समाज में व्याप्त अहिंसा और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की अवस्था।

(ख) जनसामान्य में चेतना का लोप होना तथा अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध-क्षमता का पूर्णतः समाप्त हो जाना।

(ग) कठिन परिस्थितियों में भी मन को विचलित न होने देने की योग-साधना।

(घ) जीवन की आपाधापी से विरक्त होकर संन्यास ग्रहण करने की मानसिक प्रवृत्ति।

प्रश्न 2. "घर से निकलना काम पर और काम से लौटकर घर आना" – इन पंक्तियों के माध्यम से कवि किस प्रकार के जीवन की आलोचना कर रहा है ?

(क) श्रम की महत्ता और उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन-शैली की।

(ख) आर्थिक तंगी के कारण दिन-रात कठोर परिश्रम करने की विवशता की।

(ग) एक निश्चित, लीकबद्ध, और यांत्रिक दिनचर्या की, जो रूढ़िवादिता को बढ़ावा देती है।

(घ) पूँजीवादी व्यवस्था में श्रमिकों के अत्यधिक शोषण की।

प्रश्न 3. कवि 'सपनों के मर जाने' को ही चरम सीमा तक खतरनाक क्यों स्वीकार करता है?

(क) क्योंकि स्वप्न विहीन मनुष्य अनिद्रा जैसी गंभीर व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है।

(ख) क्योंकि सपने ही मनुष्य के भीतर भविष्य के नव-निर्माण की जिजीविषा और क्रांति की आकांक्षा को जीवित रखते हैं।

(ग) क्योंकि आर्थिक रूप से अक्षम व्यक्ति कभी अपने स्वप्न साकार नहीं कर पाता।

(घ) क्योंकि अवास्तविक स्वप्न देखना मानव मन को दिग्भ्रमित करता है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही विकल्प का चयन कीजिए:

कथन (I): बाह्य दमन (जैसे पुलिस की मार या आर्थिक लूट) मनुष्य को केवल भौतिक क्षति पहुँचाते हैं।

कथन (II): आंतरिक संवेदनशून्यता और निष्क्रियता मनुष्य की वैचारिक और सामाजिक सत्ता को नष्ट कर देती है।

(क) कथन (I) सही है परंतु कथन (II) गलत है।

(ख) कथन (II) सही है परंतु कथन (I) गलत है।

(ग) कथन (I) और (II) दोनों सही हैं और कथन (II), कथन (I) का तार्किक विस्तार है।

(घ) कथन (I) और (II) दोनों परस्पर विरोधी और गलत हैं।

प्रश्न 5. काव्यांश के शिल्प-सौंदर्य के विषय में कौन-सा कथन त्रुटिपूर्ण (गलत) है?

(क) कविता में किसी पारंपरिक छंद का निर्वाह नहीं है, अतः यह छंदमुक्त रचना है।

(ख) 'मुर्दा शांति' और 'सपनों का मर जाना' में लाक्षणिकता एवं बिम्ब-विधान का प्रयोग है।

(ग) भाषा अत्यधिक क्लिष्ट, अप्रचलित और संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से बोझिल है।

(घ) शैली में ओज गुण विद्यमान है जो पाठकों की वैचारिक चेतना को झकझोरता है।

उत्तरमाला 1 (ख), 2 (ग) ,3 (ख), 4 (ग) 5 (ग)

पठित काव्यांश - 2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

सबसे खतरनाक वह दिशा होती है
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
और उसकी मुर्दा धूप का कोई टुकड़ा
आपके जिस्म के पूर्व में चुभ जाए
मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती।

प्रश्न 1."जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए"–इस काव्यात्मक बिम्ब का अंतर्निहित अर्थ क्या है?

(क) संध्याकाल होने पर सूर्य का अस्त हो जाना।

(ख) मनुष्य के भीतर के विवेक, नैतिकता और सही-गलत को पहचानने की आंतरिक शक्ति का पूर्णतः नष्ट हो जाना।

(ग) धार्मिक अनुष्ठानों और पूजा-पाठ के प्रति अनास्था उत्पन्न होना।

(घ) अत्यधिक निराशा के कारण मानसिक अवसाद की स्थिति में चले जाना।

प्रश्न 2. कवि ने 'धूप' के साथ 'मुर्दा' विशेषण का प्रयोग किस सामाजिक या मानसिक अवस्था को दर्शाने के लिए किया है?

(क) शीतकाल की उस धूप को जो शरीर को तनिक भी गर्माहट नहीं देती।

(ख) ऐसी संवेदनशून्य विचारधारा या रूढ़िवादी सोच को, जो मनुष्य को भीतर से निर्जीव और संकीर्ण बना देती है।

(ग) प्रदूषण के कारण धुंधली हो चुकी सूर्य की किरणों को।

(घ) मृत्यु के पश्चात शव पर पड़ने वाले प्रकाश को।

प्रश्न 3. "मुर्दा धूप का कोई टुकड़ा आपके जिस्म के पूर्व में चुभ जाए" – इस पंक्ति के माध्यम से कवि किस ओर संकेत कर रहा है ?

(क) पूर्व दिशा से आने वाली ठंडी हवाओं के कारण शरीर में पीड़ा होने की ओर।

(ख) अतीत की किसी बुरी घटना की यादों से मन के विचलित होने की ओर।

(ग) किसी संकीर्ण, अमानवीय या रूढ़िवादी विचार को अपने जीवन का हिस्सा बना लेने की ओर,जिससे मनुष्य की प्रगति रुक जाती है।

(घ) सूर्योदय के समय सूर्य की तीखी किरणों से आँखों में होने वाली चुभन की ओर।

प्रश्न 4. कवि ने कविता का समापन भी उन्हीं पंक्तियों से किया है जिनसे शुरुआत की थी। ऐसा करने के पीछे मुख्य संरचनात्मक कारण क्या है?

(क) कवि के पास कविता को आगे बढ़ाने के लिए नए विचारों का अभाव था।

(ख) वह केवल कविता की पंक्तियों की संख्या बढ़ाना चाहता था।

(ग) कविता को एक चक्रीय पूर्णता प्रदान करना तथा बाह्य दमन की तुलना में आंतरिक दमन की भयंकरता को अंतिम रूप से स्थापित करना।

(घ) पाठकों को बार-बार यह याद दिलाना कि उन्हें पुलिस से डरने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 5. इस काव्यांश के संदर्भ में 'आत्मा का सूरज' में प्रयुक्त मुख्य अलंकार कौन-सा है?

(क) उपमा अलंकार, क्योंकि यहाँ आत्मा की तुलना सूर्य से की जा रही है।

(ख) रूपक अलंकार, क्योंकि यहाँ आत्मा पर सूरज का अभेद आरोप किया गया

(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार, क्योंकि यहाँ आत्मा में सूरज की संभावना व्यक्त की गई है।

(घ) अनुप्रास अलंकार, क्योंकि यहाँ स्वरों की बार-बार क्रमिक आवृत्ति हो रही है।

काव्यांश - 2 उत्तरमाला 1 (ख) 2 (ख) 3 (ग) , 4 (ग), 5(ख)

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "पुलिस की मार" और "मेहनत की लूट" को कवि खतरनाक तो मानता है, किंतु 'सबसे खतरनाक' की श्रेणी में क्यों नहीं रखता?

उत्तर- कवि इन्हें 'सबसे खतरनाक' इसलिए नहीं मानता क्योंकि ये दोनों परिस्थितियाँ बाह्य दमन और आर्थिक-शारीरिक शोषण से संबंधित हैं। इन स्थितियों में पीड़ित मनुष्य की आंतरिक चेतना, आत्मसम्मान और व्यवस्था को बदलने का संकल्प (प्रतिरोध क्षमता) नष्ट नहीं होता। संघर्ष द्वारा इन बाह्य परिस्थितियों को कभी भी बदला जा सकता है।

प्रश्न 2. कविता में प्रयुक्त 'सहमी-सी चुप' किस सामाजिक मानसिक विकृति की ओर संकेत करती है?

उत्तर- 'सहमी-सी चुप' समाज में व्याप्त उस आतंक, भय और लाचारी की मानसिकता को दर्शाती है जहाँ मनुष्य सत्ता या अपराधियों के डर से अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद नहीं कर पाता। यह चुप धीरे-धीरे आदत बन जाती है और समाज को संवेदनशून्य बना देती है।

प्रश्न 3. 'मुर्दा शांति से भर जाना' और 'सपनों का मर जाना' – इन दोनों कल्पचित्रों में क्या अंतःसंबंध है? आपकी दृष्टि में यह स्थिति समाज के लिए किस प्रकार आत्मघाती है?

उत्तर- 'मुर्दा शांति से भर जाने' का तात्पर्य है वैचारिक रूप से मृत हो जाना, जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य सामाजिक बुराइयों और तानाशाही के प्रति पूरी तरह उदासीन हो जाता. है। जब मनुष्य इस प्रकार निष्क्रिय हो जाता है, तो स्वाभाविक रूप से उसके 'सपने मर जाते हैं'–अर्थात एक समतावादी, सुंदर और न्यायपूर्ण भविष्य की आकांक्षाएँ नष्ट हो जाती हैं। सपने ही मनुष्य को यथास्थिति को बदलने और संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। जब समाज इन दोनों स्थितियों से घिर जाता है, तो वह 'जीवित लाशों का समूह' बन जाता है।

प्रश्न 4. "वह चाँद सबसे खतरनाक होता है जो हर हत्याकांड के बाद आपकी आँखों में मिर्चों की तरह नहीं गड़ता।" इस पंक्ति के माध्यम से सौंदर्यशास्त्र पर किए गए कवि के विचार को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- परंपरागत काव्य में 'चाँद' को सदैव शीतलता, प्रेम और सौंदर्य के प्रतिमान के रूप में देखा गया है। परंतु कवि पाश यहाँ इस पारंपरिक सौंदर्यबोध पर तीखा प्रहार करते हैं। उनका तर्क है कि यदि समाज में क्रूर मानवीय संहार (हत्याकांड) हो रहा हो, और कोई व्यक्ति उस विभीषिका से विचलित होने के बजाय चाँद की सौंदर्यपरक विलासिता में लीन रहे, तो वह चाँद और वह सौंदर्यबोध दोनों अमानवीय हैं। 'मिर्चों की तरह न गड़ना' इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य की नैतिक और मानवीय संवेदनाएँ मर चुकी हैं।

प्रश्न 5. सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है / अपनी कलाई पर चलती हुई भी जो / आपकी निगाह में रुकी होती है। इन पंक्तियों में 'घड़ी' शब्द की व्यंजना (गहरे अर्थ) से अवगत कराइए।

उत्तर- यहाँ 'घड़ी' शब्द के दो गहरे व्यंग्यात्मक अर्थ हैं:

1. वैचारिकता की जड़ता: कलाई पर बंधी घड़ी चल रही है, जिसका अर्थ है कि समय और दुनिया आगे बढ़ रहे हैं। परंतु यदि वह मनुष्य की निगाह में रुकी हुई है, तो इसका अर्थ है कि मनुष्य के विचार स्थिर, रूढ़िवादी और जड़ हो चुके हैं। वह समय के साथ खुद को बदल नहीं पा रहा है।
2. यांत्रिक दिनचर्या: यह उस यांत्रिक (मशीनी) जीवन को दर्शाती है जहाँ मनुष्य समय के चक्र में इस तरह बंध गया है कि उसके जीवन में कोई नयापन, उत्साह या रचनात्मकता नहीं बची है।

प्रश्न 6. कवि ने कविता का प्रारंभ 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती' से करके इसका समापन भी इन्हीं पंक्तियों से क्यों किया है? इसके पीछे कवि का क्या सोद्देश्यता है?

उत्तर- कविता का प्रारंभ और अंत एक ही पंक्ति से करने के पीछे कवि का उद्देश्य पाठक के मन पर एक गहरा वैचारिक प्रभाव छोड़ना और कविता को एक चक्रीय पूर्णता प्रदान करना है। कवि शुरुआत में ही यह स्थापना कर देता है कि आर्थिक और शारीरिक शोषण अत्यधिक दमनकारी होने के बावजूद 'सबसे खतरनाक' नहीं हैं। इसके बाद वह पूरी कविता में आंतरिक संवेदनशून्यता की विभीषिका का वर्णन करता है। अंत में पुनः उसी पंक्ति पर लौटकर वह अपने निष्कर्ष को अंतिम रूप से सत्यापित करता है कि जब तक हमारी चेतना जीवित है, तब तक बाहरी लूट हमें पूरी तरह नष्ट नहीं कर सकती।

प्रश्न 7. "गीत भी मरसिए पढ़कर सुनाए जाने लगे" – इस पंक्ति में निहित व्यंग्य और सामाजिक स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'गीत' उल्लास, उमंग, क्रांति और जीवन की गतिशीलता के प्रतीक होते हैं, जबकि 'मरसिए' मृत्यु पर गाए जाने वाले शोकगीत हैं। इस पंक्ति के माध्यम से कवि अत्यंत तीखा व्यंग्य कर रहा है कि जब समाज पर भय, आतंक और तानाशाही का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, तब कला, संस्कृति और गीत भी अपना क्रांतिकारी व उल्लासमय स्वभाव खो देते हैं। वे भी दबे-कुचले लोगों की लाचारी के शोकगीत (मरसिए) बनने को विवश हो जाते हैं।

पाठ - 8 आओ मिलकर बचाएँ कवयित्री : निर्मला पुतुल

कविता का सार

आओ मिलकर बचाएँ' कविता में कवयित्री निर्मला पुतुल आदिवासी समाज की संस्कृति, प्रकृति, परंपराओं और मानवीय मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल देती हैं। कवयित्री अनुभव करती हैं कि आधुनिकता, बाजारवाद और अंधाधुंध विकास के कारण आदिवासी जीवन से जुड़ी अनेक महत्वपूर्ण चीजें धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। जंगल कट रहे हैं, नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, लोकभाषाएँ और लोकगीत विलुप्त हो रहे हैं तथा लोगों के बीच प्रेम, अपनापन और सामूहिकता की भावना कमजोर पड़ती जा रही है। कवयित्री सभी लोगों से मिलकर इन अमूल्य धरोहरों को बचाने का आह्वान करती हैं। वह चाहती हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ भी प्रकृति की सुंदरता, सांस्कृतिक विविधता और मानवीय संवेदनाओं का अनुभव कर सकें। कविता केवल आदिवासी समाज की चिंता नहीं करती, बल्कि पूरे मानव समाज के भविष्य के प्रति चिंता व्यक्त करती है। यदि ये सभी तत्व नष्ट हो जाते हैं, तो मनुष्य अपनी पहचान और जड़ों से कट जाएगा। कवयित्री इस कविता के माध्यम से यह संदेश देती हैं कि विकास तभी सार्थक है जब वह प्रकृति और संस्कृति के संरक्षण के साथ हो। कविता हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि केवल आर्थिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत और पर्यावरण की रक्षा करना भी उतना ही आवश्यक है।

काव्यांश - (1)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

आओ मिलकर बचाएँ
अपनी बस्तियों को
नंगी होने से
शहर की आबो-हवा से बचाएँ उसे
बचाएँ डूबने से
पूरी की पूरी बस्ती को
हड़िया में
अपने चेहरे पर

संथाल परगना की माटी का रंग
भाषा में झारखंडीपन
ठंडी होती दिनचर्या में
जीवन की गर्माहट
मन का हरापन
भोलापन दिल का
अक्खड़पन, जुझारूपन भी

1. कवयित्री किसे बचाने का आह्वान कर रही हैं?

(क) कारखानों को (ख) बस्तियों को (ग) बाजारों को (घ) सड़कों को

2. 'नंगी होने' का आशय है–

(क) वस्त्रहीन होना
(ख) निर्धन होना
(ग) सांस्कृतिक पहचान खो देना
(घ) अकेला रह जाना

3. 'ठंडी होती दिनचर्या' का अर्थ है-

(क) उदासीन जीवन (ख) निराश जीवन (ग) शांत जीवन (घ) निष्क्रिय जीवन

4. कथन-कारण

कथन (A): कवयित्री बस्तियों को शहरों की आबो-हवा से बचाना चाहती हैं।

कारण (R): शहरीकरण के कारण स्थानीय संस्कृति और प्राकृतिक वातावरण प्रभावित होते हैं।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

5. सत्य / असत्य आधारित प्रश्न

निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

कवयित्री पशुओं के लिए हरी घास बचाना चाहती हैं।

कवयित्री केवल शहरों के विकास की बात करती हैं।

(क) दोनों सत्य (ख) दोनों असत्य (ग) केवल 1 सत्य (घ) केवल 2 सत्य

उत्तरमाला- 1.(ख) 2.(ग) 3.(घ) 4.(क) 5. (ग)

काव्यांश - (2)

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

आओ मिलकर बचाएँ
जंगल की ताज़ा हवा
नदियों की निर्मलता
पहाड़ों का मौन
गीतों की धुन
मिट्टी का सोंधापन
फसलों की लहलहाहट

नाचने के लिए खुला आँगन
गाने के लिए गीत
हँसने के लिए थोड़ी-सी खिलखिलाहट
रोने के लिए मुट्ठी भर एकांत
बच्चों के लिए मैदान
पशुओं के लिए हरी हरी घास
बूढ़ों के लिए पहाड़ों की शांति

1. कवयित्री किसकी निर्मलता बचाने की बात करती हैं?

(क) झीलों की (ख) नदियों की (ग) समुद्र की (घ) तालाबों की

2. 'पहाड़ों का मौन' प्रतीक है–

(क) शांति और प्राकृतिक संतुलन का
(ख) भय का
(ग) वीरता का
(घ) संघर्ष का

3. कविता का मुख्य विषय है–

(क) औद्योगिक विकास (ख) युद्ध (ग) संरक्षण एवं संवर्धन (घ) व्यापार

4. कॉलम मिलान आधारित प्रश्न

कॉलम A	कॉलम B
(i) जंगल	(a) निर्मलता
(ii) नदियाँ	(b) मौन
(iii) पहाड़	(c) ताज़ा हवा

सही मिलान है–

(क) i-c, ii-a, iii-b (ख) i-a, ii-b, iii-c (ग) i-b, ii-c, iii-a (घ) i-c, ii-b, iii-a

5. कथन-कारण आधारित प्रश्न

कथन (A): कविता प्रकृति संरक्षण का संदेश देती है।

कारण (R): प्रकृति मानव जीवन का आधार है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

उत्तरमाला- 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (क)

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

1. कवयित्री किन चीज़ों को बचाने का आह्वान करती हैं?

उत्तर- कवयित्री लोगों से मिलकर अपनी बस्तियों, जंगलों, नदियों, पहाड़ों, लोकसंस्कृति, लोकभाषाओं, लोकगीतों तथा मानवीय मूल्यों को बचाने का आह्वान करती हैं।

2. कविता में आदिवासी संस्कृति की चिंता क्यों व्यक्त की गई है?

उत्तर- कवयित्री को चिंता है कि आधुनिकता, बाज़ारवाद और शहरीकरण के प्रभाव से आदिवासी संस्कृति, भाषा, लोकगीत, रीति-रिवाज और परंपराएँ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। लोग अपनी सांस्कृतिक पहचान भूलते जा रहे हैं। यदि यह स्थिति जारी रही तो आदिवासी समाज की विशिष्टता और उसकी सांस्कृतिक धरोहर लुप्त हो जाएगी।

3. इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है' – से क्या आशय है?

उत्तर- **'इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है'**से कवयित्री का आशय यह है कि आधुनिकता, बाजारवाद और सांस्कृतिक प्रदूषण के बढ़ते प्रभाव के बावजूद हमारी प्रकृति, संस्कृति, भाषा, लोकपरंपराएँ और मानवीय मूल्य पूरी तरह नष्ट नहीं हुए हैं। अभी भी इन्हें सुरक्षित रखा जा सकता है। कवयित्री लोगों को निराश होने के बजाय जागरूक होकर इन अमूल्य धरोहरों के संरक्षण का प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। यह पंक्ति आशा, चेतना और सामूहिक उत्तरदायित्व का संदेश देती है।

4. कविता में प्रकृति संरक्षण का महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कविता में जंगल, नदियाँ, पहाड़, मिट्टी और स्वच्छ वातावरण को मानव जीवन का आधार बताया गया है। प्रकृति से ही मनुष्य को भोजन, जल, वायु और जीवन के आवश्यक संसाधन प्राप्त होते हैं। यदि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है तो मानव जीवन भी संकट में पड़ जाएगा। इसलिए कवयित्री प्रकृति के संरक्षण को मानव अस्तित्व के लिए अनिवार्य मानती हैं।

5. 'शहरों की आबोहवा' से कवयित्री का क्या आशय है?

उत्तर- 'शहरों की आबोहवा' से कवयित्री का आशय केवल शहरी वातावरण नहीं है, बल्कि उससे जुड़ी भौतिकवादी सोच, स्वार्थ, कृत्रिम जीवनशैली और सांस्कृतिक प्रदूषण से है। कवयित्री चाहती हैं कि आदिवासी और ग्रामीण समाज अपनी सरलता, सामूहिकता और प्राकृतिक जीवन शैली को बनाए रखे तथा इन नकारात्मक प्रभावों से बचा रहे।

6. प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?

उत्तर-प्रस्तुत कविता में कवयित्री आदिवासी समाज में बढ़ती सांस्कृतिक विस्मृति, अपनी भाषा और परंपराओं से दूर होते जाने, अशिक्षा, नशे की प्रवृत्ति तथा आधुनिकता के अंधानुकरण की ओर संकेत करती है। कुछ लोग अपनी लोकसंस्कृति, रीति-रिवाजों और सामुदायिक मूल्यों को छोड़कर शहरी जीवनशैली अपनाने लगे हैं। उनकी सांस्कृतिक पहचान कमजोर पड़ रही है।

7. कविता का शीर्षक 'आओ मिलकर बचाएँ' कितना सार्थक है?

उत्तर-कविता का शीर्षक अत्यंत सार्थक और प्रभावशाली है क्योंकि यह पूरी कविता के मूल भाव को व्यक्त करता है। कवयित्री प्रकृति, संस्कृति, भाषा और मानवीय मूल्यों को बचाने के लिए सभी लोगों को एकजुट होने का संदेश देती हैं। 'मिलकर' शब्द सामूहिक प्रयास की आवश्यकता को दर्शाता है। वास्तव में यही कविता का केंद्रीय संदेश भी है।

8. कविता में मानवीय मूल्यों की रक्षा का संदेश कैसे दिया गया है?

उत्तर- कवयित्री प्रेम, सहयोग, भाईचारा, संवेदना और सामूहिकता जैसे मानवीय मूल्यों को जीवन का आधार मानती हैं। वे अनुभव करती हैं कि आधुनिक जीवन में ये मूल्य कमजोर होते जा रहे हैं। इसलिए कविता के माध्यम से वे लोगों को इन मूल्यों को बचाने तथा मानवता को बनाए रखने का संदेश देती हैं, जिससे समाज में सद्भाव और सौहार्द बना रहे।

9. भाषा में 'झारखंडीपन' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- भाषा में **'झारखंडीपन'** से अभिप्राय झारखंड क्षेत्र की स्थानीय बोली, लोकसंस्कृति, जीवन-शैली, परंपराओं तथा वहाँ के जनजीवन की विशेषताओं से है कविता में झारखंड के आदिवासी समाज से जुड़े शब्दों, प्रतीकों, बिंबों और भावों का प्रयोग किया है, जिससे कविता में स्थानीय रंग उभरकर आता है। यही स्थानीयता और क्षेत्रीय संस्कृति की झलक भाषा में **'झारखंडीपन'** कहलाती है।

10. आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करें।

उत्तर- वर्तमान समय में आदिवासी समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। एक ओर आधुनिकता, शहरीकरण और बाजारवाद के प्रभाव से उनकी भाषा, संस्कृति, परंपराएँ तथा लोकजीवन प्रभावित हो रहे हैं, दूसरी ओर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी मूलभूत सुविधाओं की भी कमी है।

13. कविता किस चेतना को व्यक्त करती है?

उत्तर-कविता आदिवासी चेतना, पर्यावरणीय चेतना और सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करती है। कवयित्री समाज को अपनी जड़ों और विरासत के प्रति जागरूक बनाना चाहती हैं।

14. माटी का रंग' प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर- 'माटी का रंग' प्रयोग के माध्यम से कवयित्री ने **अपनी जन्मभूमि, स्थानीय संस्कृति, परंपराओं, जीवन-मूल्यों और सांस्कृतिक पहचान**की ओर संकेत किया है। यहाँ 'माटी' केवल मिट्टी का प्रतीक नहीं है, बल्कि उस भूमि से जुड़े लोगों के रहन-सहन, रीति-रिवाजों, लोकसंस्कृति और भावनात्मक संबंधों का प्रतीक है। कवयित्री कहना चाहती है कि मनुष्य को अपनी जड़ों, संस्कृति और मूल पहचान को नहीं भूलना चाहिए तथा उन्हें सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए।

गद्य खंड

पाठ -1 नमक का दारोगा (मुंशी प्रेमचंद)

पाठ का सारांश 'नमक का दारोगा' एक आदर्शवादी कहानी है, जिसमें ईमानदारी और नैतिकता की विजय को दर्शाया गया है। कहानी का प्रमुख पात्र **वंशीधर** एक शिक्षित, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ युवक है। उसके पिता उसे नौकरी में धन कमाने की सलाह देते हैं, परंतु वंशीधर अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करता। उसे नमक विभाग में दारोगा की नौकरी मिलती है। एक रात वह प्रभावशाली और धनी व्यापारी **पंडित अलोपीदीन** को नमक की तस्करी करते हुए पकड़ लेता है। अलोपीदीन रिश्वत देकर बचने का प्रयास करता है, किंतु वंशीधर ईमानदारी का परिचय देते हुए उसे गिरफ्तार कर लेता है। अदालत में धन और प्रभाव के कारण अलोपीदीन छूट जाता है तथा वंशीधर को पद से हटा दिया जाता है। किंतु अलोपीदीन वंशीधर की सत्यनिष्ठा से अत्यंत प्रभावित होता है और बाद में उसे अपनी सम्पूर्ण जायदाद का स्थायी प्रबंधक नियुक्त कर देता है।कहानी का मूल संदेश है कि **सत्य, ईमानदारी और चरित्र की शक्ति धन से कहीं अधिक मूल्यवान होती है।"नमक का दारोगा" ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और चरित्रबल की विजय की प्रेरणादायक कहानी है।**

(1) पठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वर-प्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई पूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ-बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था, जब अंग्रेज़ी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फ़ारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और श्रृंगार रस के काव्य पढ़कर फारसीदां लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे।

प्रश्न 1 - ईश्वर प्रदत्त वस्तु क्या हैं?

(क) नमक-विभाग (ख) नमक (ग) व्यापार (घ) शिक्षा

प्रश्न 2 - नमक के निषेध से क्या परिणाम हुआ?

(क) नमक के निर्माण पर प्रतिबंध लगा दिया

(ख) प्रतिबंध के कारण लोग चोरी छिपे इसका व्यापार करने लगे

(ग) इससे रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - नमक विभाग की नौकरी के आकर्षण का क्या कारण था?

(क) इसमें आराम से काम होता था

(ख) इसमें कोई रोक-टोक करने वाला नहीं था

(ग) इसमें ऊपर की कमाई होती थीं

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 -**कथन (A): वंशीधर ने पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार कर लिया था।**

कारण (R): वंशीधर अपने कर्तव्य और ईमानदारी को धन से अधिक महत्व देते थे।

विकल्प:

(क) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन सत्य है, परंतु कारण असत्य है।

(घ) कथन असत्य है, परंतु कारण सत्य है।

प्रश्न 5 -स्तंभ मिलान कीजिए

स्तंभ (क)	**स्तंभ (ख)**
(क) वंशीधर	(i) नमक के व्यापारी
(ख) पंडित अलोपीदीन	(ii) ईमानदार दरोगा
(ग) मुंशी जी	(iii) वंशीधर के पिता
(घ) नमक विभाग	(iv) सरकारी नौकरी

सही मिलान चुनिए–

(क) क-ii, ख-i, ग-iii, घ-iv

(ख) क-iii, ख-iv, ग-i, घ-ii

(ग) क-i, ख-ii, ग-iv, घ-iii

(घ) क-iv, ख-iii, ग-ii, घ-i

उत्तरमाला 1. (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (क)

(2) **पठित गद्यांश**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे-बेटा घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियां हैं यह घास फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ न मालूम कब गिर पड़े अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्ध नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी वारकरा होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर को देख उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरजवाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है, लेकिन बेगर को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्मभर की कमाई है।

प्रश्न 1 - ओहदे को पीर की मजार क्यों कहा गया है?

(क) क्योंकि जिस तरह पीर की मज़ार पर लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं, उसी तरह नौकरी में ऊपर की कमाई के रूप में चढ़ावा मिलता है

(ख) क्योंकि नौकरी में ऊपर की कमाई के रूप में चढ़ावा मिलता है

(ग) क्योंकि जिस तरह पीर की मज़ार पर लोग जाते हैं, उसी तरह नौकरी में भी लोग अधिकारियों से मिलने आते है

(घ) क्योंकि पीर की मज़ार की तरह नौकरी में भी सभी इज्जत करते हैं

प्रश्न 2 - वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

(क) क्योंकि यह जल्दी समाप्त हो जाता है

(ख) क्योंकि यह चाँद की तरह अच्छा लगता है

(ग) क्योंकि यह महीने में पूर्णमासी के चाँद की तरह एक बार मिलता है

(घ) क्योंकि यह एक बार घट कर बढ़ता जाता है

प्रश्न 3 - वेतन व ऊपरी आय में क्या अंतर हैं?

(क) वेतन पूर्णमासी के चाँद की तरह है जो एक दिन दिखता है और अंत में लुप्त हो जाता है

(ख) ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है। जिससे सदैव प्यास बुझती है

(ग) वेतन मनुष्य देता है इसलिए उसमें बढ़ोतरी नहीं होती, जबकि ऊपर की कमाई ईश्वर देता है इसलिए इसमें बरकत होती है

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 - कथन (A): न्यायालय ने वंशीधर की ईमानदारी की सराहना करते हुए पंडित अलोपीदीन को दंडित किया।

कारण (R): पंडित अलोपीदीन के प्रभाव और धन के कारण न्यायालय का निर्णय उनके पक्ष में गया।

विकल्प:

(क) कथन और कारण दोनों असत्य हैं।

(ख) कथन असत्य है, परंतु कारण सत्य है।

(ग) कथन सत्य है, परंतु कारण असत्य है।

(घ) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

प्रश्न 5 - स्तंभ मिलान कीजिये

स्तंभ (क)	**स्तंभ (ख)**
(क) रिश्वत	(i) कर्तव्यनिष्ठा
(ख) वंशीधर	(ii) धन का प्रलोभन
(ग) अलोपीदीन	(iii) प्रभावशाली व्यापारी
(घ) ईमानदारी	(iv) चरित्र की शक्ति

सही मिलान चुनिए–

(क) क-iii, ख-ii, ग-iv, घ-i

(ख) क-iv, ख-iii, ग-i, घ-ii

(ग) क-ii, ख-i, ग-iii, घ-iv

(घ) क-i, ख-iv, ग-ii, घ-iii

उत्तरमाला 1- (क) 2- (ग) 3- (घ) 4- (ख) 5- (ग)

अभ्यास प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1.वंशीधर ने पंडित अलोपीदीन की रिश्वत क्यों स्वीकार नहीं की?

उत्तर- वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी थे। उन्होंने अपने कर्तव्य और नैतिक मूल्यों को धन से अधिक महत्व दिया, इसलिए उन्होंने अलोपीदीन की रिश्वत स्वीकार नहीं की।

प्रश्न 2.पंडित अलोपीदीन समाज में किस रूप में प्रसिद्ध थे?

उत्तर- पंडित अलोपीदीन क्षेत्र के अत्यंत धनी, प्रभावशाली और प्रतिष्ठित जमींदार थे। उनका समाज और प्रशासन पर काफी प्रभाव था तथा लोग उनका सम्मान करते थे।

प्रश्न 3.वंशीधर के पिता ने नौकरी के संबंध में क्या सलाह दी थी?

उत्तर- वंशीधर के पिता ने उन्हें ऐसी नौकरी करने की सलाह दी थी जिसमें ऊपरी आय (रिश्वत) प्राप्त हो सके, क्योंकि वे धन को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण साधन मानते थे।

प्रश्न 4. अलोपीदीन वंशीधर से अंततः क्यों प्रभावित हुए?

उत्तर- वंशीधर की सत्यनिष्ठा, निडरता और कर्तव्यपरायणता देखकर अलोपीदीन प्रभावित हुए। उन्हें अनुभव हुआ कि धन से सब कुछ नहीं खरीदा जा सकता।

प्रश्न 5. कहानी का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर- कहानी का मुख्य संदेश है कि ईमानदारी, सत्य और कर्तव्यनिष्ठा अंततः सम्मान दिलाते हैं। धन और प्रभाव से अधिक मूल्यवान चरित्र और नैतिकता होती है।

प्रश्न 6.'नमक का दारोगा' कहानी में वंशीधर के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- वंशीधर ईमानदार, निडर, कर्तव्यनिष्ठ और आत्मसम्मानी व्यक्ति हैं। वे किसी भी परिस्थिति में अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते। उन्होंने रिश्वत के प्रलोभन को ठुकराकर सत्य और न्याय का साथ दिया, जिससे उनका आदर्श चरित्र सामने आता है।

प्रश्न 7.पंडित अलोपीदीन के चरित्र में आए परिवर्तन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रारंभ में अलोपीदीन धन और प्रभाव के बल पर सब कुछ प्राप्त करने में विश्वास रखते थे। लेकिन वंशीधर की अटूट ईमानदारी देखकर उनका दृष्टिकोण बदल गया। उन्होंने चरित्र और नैतिकता की श्रेष्ठता को स्वीकार किया तथा वंशीधर को अपनी संपत्ति का प्रबंधक नियुक्त किया।

प्रश्न 8. यदि आप वंशीधर की जगह होते और आपको बड़ी रिश्वत की पेशकश की जाती, तो आप क्या करते? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- मैं वंशीधर की तरह रिश्वत स्वीकार नहीं करता। ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा किसी भी अधिकारी का सबसे बड़ा गुण है। रिश्वत लेने से समाज का विश्वास टूटता है तथा भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। इसलिए सत्य और नैतिकता का पालन करना आवश्यक है।

प्रश्न 9. आज के समय में 'नमक का दारोगा' कहानी विद्यार्थियों को क्या प्रेरणा देती है?

उत्तर- यह कहानी विद्यार्थियों को ईमानदार, जिम्मेदार और सिद्धांतवादी बनने की प्रेरणा देती है। यह सिखाती है कि कठिन परिस्थितियों में भी सही मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। सच्चा सम्मान धन से नहीं, बल्कि अच्छे चरित्र और नैतिक मूल्यों से प्राप्त होता है।

10. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर- मुंशी वंशीधर बहुत ही ईमानदार और अपने कर्तव्य का पालन करने वाला व्यक्ति है। जो सबसे अमीर और प्रसिद्ध व्यक्ति अलोपीदीन दातागंज को जेल में भिजवा कर अपने कर्तव्य का

पालन करता है और अंत में अलोपीदीन दातागंज भी मुंशी वंशीधर के इमानदारी और कर्तव्यनिष्ठ को देखकर प्रभावित होते हैं ।इस कारण मुंशी वंशीधर हमें सबसे ज्यादा सर्वाधिक प्रभावित करते हैं।

11. कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन-से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?

उत्तर- अलोपीदीन एक भ्रष्ट और लोगों पर जुल्म करने वाला व्यक्ति है जो नियमों के विरुद्ध गलत तरीके से धन कमाता है। परंतु समाज में वह एक सफेदपोश व्यक्ति था और दूसरी तरफ कहानी के अंत मे उसका उज्जवल चरित्र सामने आता है जो लोगों के ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठ के गुणों की कदर करता है। इस तरह उसका दोगला चरित्र हमारे सामने उभर के आता है।

12. 'नमक का दारोगा' कहानी के अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 1) "धन का लोभी" - पंडित आलोपीदीन लक्ष्मी का उपासक था। 2) "ईमानदार और कर्तव्य निष्ठ दारोगा"-यह कहानी दारोगा वंशीधर के इर्द गिर्द घूमती है जो अपने कार्य के प्रति ईमानदार और कनिष्ठ है

पाठ - 2 मियाँ नसीरुद्दीन

पाठ का सारांश

'मियाँ नसीरुद्दीन' रेखाचित्र 'हम हशमत' संग्रह से लिया गया है। इसमें लेखिका ने दिल्ली के प्रसिद्ध खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, स्वभाव और उनके पेशे के प्रति समर्पण का सजीव चित्रण किया है। मियाँ नसीरुद्दीन दिल्ली के मटिया महल क्षेत्र में अपनी छोटी-सी दुकान चलाते हैं। वे छप्पन प्रकार की रोटियाँ बनाने में निपुण हैं और अपने खानदानी पेशे पर अत्यंत गर्व करते हैं। उनका मानना है कि किसी भी काम में निपुणता केवल मेहनत और अभ्यास से आती है, केवल उपदेशों से नहीं। वे बताते हैं कि उन्होंने रोटियाँ बनाने का हुनर अपने पिता और दादा से सीखा है। उनका विश्वास है कि किसी भी कला को सीखने के लिए उसके हर छोटे-बड़े कार्य को स्वयं करना आवश्यक होता है। वे अपने पूर्वजों की कला और प्रतिष्ठा का बड़े गर्व से उल्लेख करते हैं। मियाँ नसीरुद्दीन अपने काम को केवल रोजगार नहीं, बल्कि एक कला मानते हैं। वे मेहनत, अनुभव और परंपरा को सफलता का आधार मानते हैं। उनके व्यक्तित्व में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, विनोदप्रियता और अपने पेशे के प्रति गहरा लगाव दिखाई देता है। किसी भी कार्य में सफलता के लिए मेहनत, अभ्यास और समर्पण आवश्यक है।

(1) पठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

साहबों, उस दिन अपन मटियामहल की तरफ़ से न गुज़र जाते तो राजनीति, साहित्य और कला के हज़ारों-हजार मसीहों के धूम-धड़क्के में नानबाइयों के मसीहा मियाँ नसीरुद्दीन को कैसे तो पहचानते और कैसे उठाते लुत्फ उनके मसीही अदाज़ का! हुआ यह कि हम एक दुपहरी जामा मस्जिद के आड़े पड़े मटियामहल के गढ़ैया मुहल्ले की ओर निकल गए। एक निहायत मामूली अँधेरी-सी दुकान पर पटापट आटे का ढेर सनते देख ठिठके। सोचा, सेवइयों की तैयारी होगी, पर पूछने पर मालूम हुआ खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान पर खड़े हैं। मियाँ मशहूर हैं छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए।

प्रश्न 1 - 'हजारों-हज़ार मसीहों के धूम-धड़क्के' से क्या आशय हैं-

(क) दिल्ली में साहित्य और कला के हजारों प्रतिभाशाली लोग

(ख) दिल्ली में राजनीति, साहित्य और कला के हजारों प्रतिभाशाली लोग

(ग) दिल्ली में राजनीति के प्रतिभाशाली लोग

(घ) दिल्ली में कला के हजारों प्रतिभाशाली लोग

प्रश्न 2 - नानबाई किसे कहते हैं?

(क) जो कई तरह से बालों को काटने का काम करता है

(ख) जो कई तरह की सिलाई करने का काम करता है

(ग) जो कई तरह की रोटियाँ बनाने और बेचने का काम करता है

(घ) जो कई तरह की मिठाइयाँ बनाने और बेचने का काम करता है

प्रश्न 3 - (कथन-कारण)

कथन (A): मियाँ नसीरुद्दीन अपने खानदानी पेशे पर गर्व करते हैं।

कारण (R): उनका मानना है कि रोटियाँ बनाने का हुनर उन्होंने अपने पिता और दादा से प्राप्त किया है।

विकल्प:

(क) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन सत्य है, परंतु कारण असत्य है।

(घ) कथन असत्य है, परंतु कारण सत्य है।

प्रश्न 4 - मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान कहाँ स्थित थी?

(क) जामा मस्जिद के पास (ख) मुहल्ले में

(ग) जामा मस्जिद के गढ़ैया मुहल्ले में (घ) जामा मस्जिद के पास मटियामहल के गढ़ैया मुहल्ले में

प्रश्न 5 -स्तंभ मिलान

स्तंभ (क)	**स्तंभ (ख)**
(क) मियाँ नसीरुद्दीन	(i) 'हम हशमत'
(ख) कृष्णा सोबती	(ii) खानदानी नानबाई
(ग) हम हशमत	(iii) रेखाचित्र-संग्रह
(घ) काम करने से आता है	(iv) अनुभव का महत्व

सही मिलान चुनिए–

(क) क-ii, ख-i, ग-iii, घ-iv (ख) क-iii, ख-ii, ग-iv, घ-i

(ग) क-iv, ख-iii, ग-ii, घ-i (घ) क-i, ख-iv, ग-iii, घ-ii

उत्तरमाला 1- (ख) 2- (ग) 3- (क) 4- (घ) उत्तर 5- (क)

(2)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

मियाँ नसीरुद्दीन ने पंचहज़ारी अंदाज़ से सिर हिलाया-'निकाल लेंगे वक्त थोड़ा, पर यह तो कहिए, आपको पूछना क्या है? फिर घूरकर देखा और जोड़ा-'मियाँ, कहीं अख़बारनवीस तो नहीं हो? यह तो खोजियों की खुराफ़ात है। हम तो अख़बार बनानेवाले और अखबार पढ़नेवाले-दोनों को ही निठल्ला समझते हैं। हाँ-कामकाजी आदमी को इससे क्या काम है। खैर, आपने यहाँ तक आने की तकलीफ़ उठाई ही है तो पूछिए- क्या पूछना चाहते हैं!' 'पूछना यह था कि किस्म-किस्म की रोटी पकाने का इल्म आपने कहाँ से हासिल किया?' मियाँ नसीरुद्दीन ने आँखों के कंचे हम पर फेर दिए। फिर तरेरकर बोले-'क्या मतलब? पूछिए साहब- नानबाई इल्म लेने कहीं और जाएगा? क्या नगीनासाज़ के पास? क्या आईनासाज़ के पास? क्या मीनासाज़ के पास? या रफ़ूगर, रँगरेज़ या तेली-तंबोली से सीखने जाएगा? क्या फ़रमा दिया साहब-यह तो हमारा खानदानी पेशा ठहरा। हाँ, इल्म की बात पूछिए तो जो कुछ भी सीखा, अपने वालिद उस्ताद से ही। मतलब यह कि हम घर से न निकले कि कोई पेशा अख्तियार करेंगे। जो बाप-दादा का हुनर था, वही उनसे पाया और वालिद मरहूम के उठ जाने पर आ बैठे उन्हीं के ठीये पर!'

प्रश्न 1 - पंचहज़ारी अदाज़ से आशय है -

(क) मुगलों के समय में पचास हजार सिपाहियों के अधिकारी को पंचहज़ारी कहते थे

(ख) मुगलों के समय में पचपन हजार सिपाहियों के अधिकारी को पंचहज़ारी कहते थे

(ग) मुगलों के समय में पाँच हजार मुद्राओं के अधिकारी को पंचहज़ारी कहते थे

(घ) मुगलों के समय में पाँच हजार सिपाहियों के अधिकारी को पंचहज़ारी कहते थे

प्रश्न 2 - मियाँ ने लेखिका को घूरकर देखा, क्यों?

(क) अखबार वाली तो नहीं हैं

(ख) चित्रकार तो नहीं हैं

(ग) उनकी रिश्तेदार तो नहीं हैं

(घ) अखबार पढ़ने वाली तो नहीं हैं

प्रश्न 3 - अखबार वालों के बारे में मियाँ नसीरुद्दीन की क्या राय है -

(क) ईमानदार मानते हैं

(ख) मेहनती मानते हैं

(ग) बेकार मानते हैं

(घ) निठल्ला मानते हैं

प्रश्न 4 - मियाँ ने लेखिका को आँखें तरेरकर क्यों उत्तर दिया -

(क) जब लेखिका ने मियाँ से पूछा कि आपने नानबाई का काम किससे सीखा तो उन्हें क्रोध आ गया

(ख) मियाँ से जब लेखिका ने पूछा कि उन्हें अखबार वालों को निट्ठल्ला क्यों समझते हैं तो उन्हें क्रोध आ गया

(ग) मियाँ से जब लेखिका ने पूछा कि आपने चपातियाँ बनाने का काम किससे सीखा तो उन्हें क्रोध आ गया

(घ) मियाँ से जब लेखिका ने पूछा कि उनके पास कितने काम करने वाले हैं तो उन्हें क्रोध आ गया

प्रश्न 5 -स्तंभ मिलान

स्तंभ (क)	**स्तंभ (ख)**
(क) मटिया महल	(i) प्रशिक्षण का महत्व
(ख) तालीम की तालीम	(ii) पुरानी दिल्ली का क्षेत्र
(ग) कारीगर	(iii) आटा और मैदा गूँधने वाला
(घ) खानदानी नानबाई	(iv) परंपरागत हुनर वाला व्यक्ति

सही मिलान चुनिए–

(क) क-iv, ख-iii, ग-ii, घ-i (ख) क-ii, ख-i, ग-iii, घ-iv

(ग) क-iii, ख-iv, ग-i, घ-ii (घ) क-i, ख-ii, ग-iv, घ-iii

उत्तरमाला 1(घ). 2(क). 3. (घ) 4(घ) 5- (ख)

प्रश्न 1.मियाँ नसीरुद्दीन कौन थे और वे किस कारण प्रसिद्ध थे?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन दिल्ली के एक खानदानी नानबाई थे। वे छप्पन प्रकार की तंदूरी रोटियाँ बनाने में निपुण थे और अपने पेशे में अद्भुत कौशल तथा अनुभव के कारण प्रसिद्ध थे।

प्रश्न 2.मियाँ नसीरुद्दीन रोटियाँ बनाने का हुनर कहाँ से सीखने की बात करते हैं?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन बताते हैं कि उन्होंने रोटियाँ बनाने का हुनर अपने पिता और दादा से सीखा। यह उनका खानदानी पेशा था, जिसे उन्होंने मेहनत और अभ्यास से अपनाया।

प्रश्न 3. "काम करने से आता है, नसीहतों से नहीं" कथन का क्या आशय है?

उत्तर- इस कथन का आशय है कि किसी भी कार्य में दक्षता केवल उपदेश सुनने से नहीं आती। निरंतर अभ्यास, अनुभव और मेहनत से ही वास्तविक ज्ञान और कौशल प्राप्त होता है।

प्रश्न 4. मियाँ नसीरुद्दीन को अपने खानदान पर गर्व क्यों था?

उत्तर- उन्हें अपने खानदानी पेशे और पूर्वजों की कला पर गर्व था। उनके अनुसार उनके बुजुर्ग कुशल नानबाई थे और शाही रसोई में भी सम्मानपूर्वक कार्य कर चुके थे।

प्रश्न 5.मियाँ नसीरुद्दीन वर्तमान ग्राहकों से असंतुष्ट क्यों दिखाई देते हैं?

उत्तर- उनका मानना था कि पहले लोग उनकी रोटियों की कला और स्वाद की सराहना करते थे, जबकि अब लोग केवल खाकर चले जाते हैं और उनके हुनर की कद्र नहीं करते।

प्रश्न 6.मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:मियाँ नसीरुद्दीन आत्मसम्मानी, मेहनती, अनुभवी और विनोदी स्वभाव के व्यक्ति हैं। उन्हें अपने खानदानी पेशे पर गर्व है। वे अपने काम को कला मानते हैं तथा अनुभव और अभ्यास को सफलता का आधार मानते हैं। उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास और पेशे के प्रति समर्पण स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रश्न 7.मियाँ नसीरुद्दीन 'तालीम की तालीम' को क्यों महत्वपूर्ण मानते हैं?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन के अनुसार किसी भी हुनर को सीखने के लिए सही प्रशिक्षण और क्रमबद्ध शिक्षा आवश्यक है। जैसे विद्यार्थी पहली-दूसरी कक्षा पढ़े बिना तीसरी कक्षा का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता, वैसे ही किसी कला में निपुणता के लिए प्रारंभिक प्रशिक्षण अनिवार्य है।

प्रश्न 8. यदि आपको कोई नया कौशल सीखना हो, तो मियाँ नसीरुद्दीन के विचारों से आप क्या सीखेंगे?

उत्तर- मैं सीखूँगा कि किसी भी कौशल में सफलता के लिए धैर्य, अभ्यास और क्रमबद्ध प्रशिक्षण आवश्यक है। केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं होता। निरंतर मेहनत और अनुभव से ही व्यक्ति अपने कार्य में दक्ष बन सकता है।

प्रश्न 9. आज के समय में पारंपरिक कला और हस्तकौशल को संरक्षित रखना क्यों आवश्यक है?

उत्तर- पारंपरिक कला और हस्तकौशल हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं। इनके संरक्षण से हमारी पहचान बनी रहती है तथा कारीगरों को सम्मान और रोजगार मिलता है। इससे नई पीढ़ी को भी अपनी परंपराओं और कौशलों की जानकारी प्राप्त होती है।

प्रश्न. 10. मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा कहा गया है, क्योंकि वे मसीहाई अंदाज में रोटी पकाने की कला का बखान करते हैं। वे स्वयं भी छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका खानदान वर्षों से इस काम में लगा हुआ है। वे रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है। अन्य नानबाई सिर्फ रोटी पकाते हैं। वे नया कुछ नहीं कर पाते।

प्रश्न.11. लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास क्यों गई थीं?

उत्तर- लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास इसलिए गई थी क्योंकि वह रोटी बनाने की कारीगरी के

बारे में जानकारी हासिल करके दूसरे लोगों को बताना चाहती थी। मियाँ नसीरुद्दीन छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर थे। वह उनकी इस कारीगरी का रहस्य भी जानना चाहती थी।

प्रश्न. 12. बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही लेखिका की बातों में मियाँ नसीरुद्दीन की दिलचस्पी क्यों खत्म होने लगी?

उत्तर- सच्चाई यह थी कि वे किसी बादशाह का नाम नहीं जानते थे और न ही उनके परिवार का किसी बादशाह से संबंध था। बादशाह का बावची होने की बात उन्होंने अपने परिवार की बड़ाई करने के लिए कह दिया था। बादशाह का प्रसंग आते ही वे बेरुखी दिखाने लगे।

प्रश्न. 14. पाठ में मियाँ नसीरुद्दीन का शब्द-चित्र लेखिका ने कैसे खींचा है?

उत्तर:-**व्यक्तित्व** - वे बड़े ही बातूनी और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बननेवाले बुजुर्ग थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही साधारण-सा था, पर वे बड़े मसीहाई अंदाज़ में रोटी पकाते थे। **स्वभाव** - उनके स्वभाव में रुखाई अधिक और स्नेह कम था। वे सीख और तालीम के विषय में बड़े स्पष्ट थे। उनका मानना था कि काम तो करने से ही आता है। **रुचियाँ** - वे स्वयं को किसी पंचहज़ारी से कम नहीं समझते थे। बादशाह की बातें तो ऐसे बताते थे मानो अभी बादशाह के महल से ही आ रहे हों।

पाठ - 3 अपू के साथ ढाई साल (संस्मरण) लेखक का नाम- सत्यजित राय

पाठ का सारांश

"अपू के साथ ढाई साल" सत्यजित राय का संस्मरणात्मक लेख है। इसमें लेखक ने अपनी प्रसिद्ध फिल्म पाथेर पांचाली के निर्माण की प्रक्रिया तथा उससे जुड़े अनुभवों का अत्यंत रोचक वर्णन किया है। सत्यजित राय ने बांग्ला साहित्यकार विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय के उपन्यास 'पाथेर पांचाली' को पढ़ा। इस उपन्यास की संवेदनशीलता, यथार्थवाद और मानवीय भावनाओं ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने निश्चय किया कि इस उपन्यास पर फिल्म बनाई जानी चाहिए। फिल्म निर्माण का कार्य आसान नहीं था। उस समय सत्यजित राय के पास पर्याप्त धन नहीं था और न ही फिल्म निर्माण का कोई बड़ा अनुभव था। फिर भी उन्होंने साहस और दृढ़ निश्चय के साथ कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने ग्रामीण बंगाल के वास्तविक परिवेश में फिल्मांकन करने का निर्णय लिया ताकि फिल्म में जीवन की सच्चाई दिखाई दे सके। फिल्म के लिए कलाकारों का चयन भी एक चुनौती थी। अधिकांश कलाकार नए थे और उनमें से कई पेशेवर अभिनेता नहीं थे। विशेष रूप से 'अपू' की भूमिका निभाने वाले बाल कलाकार की खोज कठिन रही। अंततः उपयुक्त कलाकार मिल गया और फिल्म का कार्य आगे बढ़ा। धन की कमी के कारण फिल्म का निर्माण बार-बार रुकता रहा। कभी कैमरे की समस्या आती, कभी संसाधनों की। कई बार महीनों तक शूटिंग बंद रखनी पड़ी। इसके बावजूद सत्यजित राय और उनकी टीम ने धैर्य नहीं छोड़ा। वे लगातार मेहनत करते रहे। फिल्म के कई दृश्य प्रकृति और ग्रामीण जीवन से जुड़े थे। वर्षा, खेत, पेड़-पौधे, गाँव की पगडंडियाँ और साधारण लोगों का जीवन फिल्म का अभिन्न हिस्सा बने। लेखक बताते हैं कि इन दृश्यों को स्वाभाविक रूप से चित्रित करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ा। लगभग ढाई वर्षों के लंबे संघर्ष और परिश्रम के बाद फिल्म पूरी हुई। जब फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसे देश-विदेश में अभूतपूर्व सफलता मिली। अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित होकर यह फिल्म भारतीय सिनेमा की अमूल्य धरोहर बन गई। 'अपू के साथ ढाई साल' केवल एक फिल्म निर्माण की कहानी नहीं, बल्कि **संघर्ष, आत्मविश्वास, रचनात्मकता, समर्पण और सफलता की प्रेरणादायक गाथा** है, जो प्रत्येक विद्यार्थी को अपने जीवन में लक्ष्य के प्रति निष्ठावान रहने की प्रेरणा देती है।

पठित गद्यांश (1)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

शूटिंग की शुरुआत में ही एक गड़बड़ हो गई। अपू और दुर्गा को लेकर हम कलकत्ता' से सत्तर मील पर पालसिट नाम के एक गाँव गए। वहाँ रेल-लाइन के पास काशफूलों से भरा एक मैदान था। अपू और दुर्गा पहली बार रेलगाड़ी देखते हैं- इस सीन की शूटिंग हमें करनी थी। यह सीन बहुत ही बड़ा था। एक दिन में उसकी शूटिंग पूरी होना नामुमकिन था। कम-से-कम दो दिन लग सकते थे। पहले दिन जगद्धात्री पूजा का त्योहार था। दुर्गा के पीछे-पीछे दौड़ते हुए अपू काशफूलों के वन में पहुँचता है। सुबह शूटिंग शुरू करके शाम तक हमने सीन का आधा भाग चित्रित किया। निर्देशक, छायाकार, छोटे अभिनेता अभिनेत्री हम सभी इस क्षेत्र में नवागत होने के कारण थोड़े बौराए हुए ही थे, बाकी

का सीन बाद में चित्रित करने का निर्णय लेकर हम घर पहुँचे। सात दिन बाद शूटिंग के लिए उस जगह गए, तो वह जगह हम पहचान ही नहीं पाए लगा. ये कहाँ आ गए हैं हम? कहाँ गए वे सारे काशफूल। बीच के सात दिनों में जानवरों ने वे सारे काशफूल खा डाले थे! अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मैल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी नदारद हो जाती!

प्रश्न 1. पालसिट नाम का एक गाँव कलकत्ता' से कितनी दूर था -

(क) सत्तर मील पर (ग) साठ मील पर

(ख) पचहत्तर मील पर (घ) पच्चास मील पर

प्रश्न 2. पहले दिन सीन का केवल आधा भाग चित्रित क्यों हो पाया?

(क) फिल्मकार और गाँव भी नया था (ख) छायाकार, छोटे अभिनेता अभिनेत्री सभी नए थे

(ग) उन्हें अपने काम करने के स्थान का पता नहीं था (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3. लेखक ने रेलगाड़ी के दृश्य पर क्या निर्णय लिया?

(क) लेखक ने शेष आधा सीन बाद में चित्रित करने का निर्णय लिया

(ख) लेखक ने पूरा सीन बाद में दुबारा चित्रित करने का निर्णय लिया

(ग) लेखक ने शेष आधा सीन बाद में न चित्रित करने का निर्णय लिया

(घ) लेखक ने शेष सीन किसी और फ़िल्म में चित्रित करने का निर्णय लिया

प्रश्न 4. कथन-कारण

कथन (A):सत्यजित राय और उनकी टीम को 'अपू और दुर्गा के रेलगाड़ी देखने वाले दृश्य' की शूटिंग पूरी करने में कठिनाई हुई।

कारण (R):सात दिन बाद जब टीम पुनः शूटिंग स्थल पर पहुँची, तब तक जानवर काशफूलों को खा चुके थे और दृश्य की निरंतरता बनाए रखना संभव नहीं था।

विकल्प:

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, किन्तु R असत्य है।

(घ) A असत्य है, किन्तु R सत्य है

प्रश्न 5. सत्य-असत्य कथनों का चुनाव

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. अपू और दुर्गा के रेलगाड़ी देखने वाले दृश्य की शूटिंग एक ही दिन में पूरी हो गई थी।
2. शूटिंग स्थल कलकत्ता से लगभग सत्तर मील दूर पालसिट गाँव में था।
3. सात दिन बाद लौटने पर काशफूलों का मैदान पहले जैसा ही मिला।
4. काशफूलों के नष्ट हो जाने से दृश्य की निरंतरता प्रभावित होने का खतरा उत्पन्न हो गया।

सही विकल्प चुनिए–

(क) केवल 1 और 3 सत्य हैं। (ख) केवल 2 और 4 सत्य हैं।

(ग) केवल 1, 2 और 4 सत्य हैं। (घ) केवल 2, 3 और 4 सत्य हैं।

उत्तरमाला- 1. (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (ख)

पठित गद्यांश (2)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

इस श्रीनिवास के सीन में ही एक शॉट के वक्त हम बिलकुल तंग आ गए थे और वह भी उस भूलो कुत्ते की वजह से। छोटे से पुकुर के पार मिठाईवाला खड़ा है, और इस पार, अपने घर के पास अपू-दुर्गा मिठाईवाले की ओर ललचाई नज़र से देख रहे हैं। 'क्यों, मिठाई खरीदेंगे?' मिठाईवाले के इस सवाल का वे 'ना' में जवाब देते हैं, तब मिठाईवाला मुखर्जी के घर की ओर जाने लगता है। दुर्गा अपू से कहती है, 'चल, हम भी जाएँगे।' भाई-बहन दौड़ने लगते हैं और उसी समय पीछे झुरमुट में बैठा भूलो कुत्ता भी छलांग लगाकर उनके साथ दौड़ने लगता है। हमें ऐसा सीन लेना था, लेकिन मुश्किल यह कि यह कुत्ता कोई हॉलीवुड का सिखाया हुआ नहीं था। इसलिए यह बताना मुश्किल ही था कि वह अपू दुर्गा के साथ भागता जाएगा या नहीं। कुत्ते के मालिक से हमने कहा था, 'अपू-दुर्गा जब भागने लगते हैं, तब तुम अपने कुत्ते को उन दोनों के पीछे भागने के लिए कहना।' लेकिन शूटिंग के वक्त दिखाई दिया कि वह कुत्ता मालिक की आज्ञा का पालन नहीं कर रहा है। इधर हमारा कैमरा चालू ही था। कीमती फिल्म ज़ाया हो रही थी और मुझे बार-बार चिल्लाना पड़ रहा था-कट्! कट्!' अब यहाँ धीरज रखने के सिवा दूसरा उपाय नहीं था। अगर कुत्ता बच्चों के पीछे दौड़ा, तो ही वह उनका पालतू कुत्ता लग सकता था। आखिर मैंने दुर्गा से अपने हाथ में थोड़ी मिठाई छिपाने के लिए कहा, और वह कुत्ते को दिखाकर दौड़ने को कहा। इस बार कुत्ता उनके पीछे भागा, और हमें हमारी इच्छा के अनुसार शॉट मिला।

प्रश्न 1. लेखक को कैसा सीन लेना था?

(क) भाई-बहन के दौड़ने का सीन

(ख) भाई-बहन के भूलो कुत्ते को मिठाई खिलाने का सीन

(ग) भूलो कुत्ते के छलांग लगाकर दौड़ने का सीन

(घ) भूलो कुत्ते के छलांग लगाकर भाई-बहन के साथ दौड़ने का सीन

प्रश्न 2. लेखक को बार-बार चिल्लाना क्यों पड़ रहा था?

(क) कुत्ता वांछित प्रतिक्रिया ही नहीं दिखा रहा था

(ख) कुत्ता वांछित प्रतिक्रिया दिखा रहा था

(ग) कुत्ता इधर-उधर दौड़ रहा था

(घ) कुत्ता कहीं दिखाई नहीं दे रहा था

प्रश्न 3. लेखक ने अपनी इच्छा के अनुसार शॉट कैसे लिया?

(क) लेखक ने दुर्गा से अपने हाथ में थोड़ी मिठाई छिपाने तथा कुत्ते को दिखाकर दौड़ने को कहा

(ख) लेखक ने दुर्गा से अपने हाथ में थोड़ी मिठाई छिपाने को कहा

(ग) लेखक ने दुर्गा को कुत्ते को मिठाई दिखाते हुए दौड़ने को कहा

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4. कथन-कारण

कथन (A): भूलो कुत्ते वाला दृश्य फिल्माने में बार-बार कठिनाई का सामना करना पड़ा।

कारण (R): भूलो कोई प्रशिक्षित (ट्रेंड) कुत्ता नहीं था, इसलिए वह शूटिंग के दौरान अपेक्षित ढंग से बच्चों के पीछे नहीं दौड़ रहा था।

विकल्प:

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, किन्तु R असत्य है।

(घ) A असत्य है, किन्तु R सत्य है।

प्रश्न 5. सत्य-असत्य कथनों का चुनाव

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

भूलो एक प्रशिक्षित कुत्ता था, इसलिए उसने पहली बार में ही सही अभिनय कर दिया।

कुत्ते के अपेक्षित व्यवहार न करने के कारण कई बार शूटिंग रोकनी पड़ी।

सत्यजित राय ने दुर्गा के हाथ में मिठाई छिपाकर कुत्ते को आकर्षित करने की युक्ति अपनाई।

अंततः भूलो कुत्ता बच्चों के पीछे दौड़ा और इच्छानुसार शॉट प्राप्त हो गया।

सही विकल्प चुनिए–

(क) केवल 1 और 2 सत्य हैं।

(ख) केवल 2, 3 और 4 सत्य हैं।

(ग) केवल 1, 3 और 4 सत्य हैं।

(घ) केवल 3 और 4 सत्य हैं।

उत्तरमाला 1. (घ) 2. (क) 3. (क) **4.**(क) **5.**(ख)

अभ्यास प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1.'पथेर पांचाली' फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?

उत्तर - लेखक को पैसे का अभाव था। पैसों के अभाव के कारण शूटिंग को बार-बार रोकना पड़ता था। पैसे इकट्ठे होने पर ही वह शूटिंग करता था। वह विज्ञापन कंपनी में काम करता था। इसलिए काम से फ़ुर्सत होने पर ही लेखक तथा अन्य कलाकार फिल्म का काम करते थे। तकनीक के पिछड़ेपन के कारण पात्र, स्थान, दृश्य आदि की समस्याएँ आ जाती थीं। शूटिंग में होने वाली देरी के कारण कई स्थान और पात्र भी या तो बदल जाते थे या उनका देहांत हो जाता था जिस कारण लेखक को उनसे मिलते-जुलते पात्र व स्थान ढूँढना कठिन हो जाता था।

प्रश्न 2. अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती-इस कथन के पीछे क्या भाव है?

उत्तर - 'उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती' - इस कथन के पीछे भाव यह है कि कोई भी फिल्म हमें तभी प्रभावित कर पाती है जब उसमें निरंतरता हो। यदि एक दृश्य में ही एकरूपता नहीं होती तो फिल्म कैसे चल पाती। दर्शक भ्रमित हो जाता है। पथेर पांचाली फ़िल्म में काशफूलों के साथ शूटिंग पूरी करनी थी, परंतु एक दिन में पूरी शूटिंग होना संभव नहीं था और पैसों की भी कमी थी। इस कारण एक सप्ताह के अंतराल के बाद शूटिंग करना तय हुआ। परन्तु एक सप्ताह बाद काशफूलों को पशु खा गए। अत: उसी पृष्ठभूमि में दृश्य चित्रित करने के लिए एक वर्ष तक इंतजार

करना पड़ा। यदि यह आधा दृश्य काशफूलों के बिना चित्रित किया जाता तो दृश्य में निरंतरता नहीं बन पाती।

प्रश्न 3. किन दो दृश्यों में दर्शक यह पहचान नहीं पाते कि उनकी शूटिंग में कोई तरकीब अपनाई गई है?

उत्तर- प्रथम दृश्य - इस दृश्य में 'भूलो' नामक कुत्ते को अपू की माँ द्वारा गमले में डाले गए भात को खाते हुए चित्रित करना था, परंतु सूर्य के अस्त होने तथा पैसे खत्म होने के कारण यह दृश्य चित्रित न हो सका। छह महीने बाद लेखक पुन: उस स्थान पर गया तब तक उस कुत्ते की मौत हो चुकी थी। काफी प्रयास के बाद उससे मिलता-जुलता कुत्ता मिला और उसी से भात खाते हुए दृश्य को फ़िल्माया गया। यह दृश्य इतना स्वाभाविक था कि कोई भी दर्शक उसे पहचान नहीं पाया। **दूसरा दृश्य -** इस दृश्य में श्रीनिवास नामक व्यक्ति मिठाई वाले की भूमिका निभा रहा था। बीच में शूटिंग रोकनी पड़ी। दोबारा उस स्थान पर जाने से पता चला कि उस व्यक्ति का देहांत हो गया है, फिर लेखक ने उससे मिलते-जुलते व्यक्ति को लेकर बाकी दृश्य फ़िल्माया। पहला श्रीनिवास बाँस वन से बाहर आता है और दूसरा श्रीनिवास कैमरे की ओर पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर जाता है। इस प्रकार इस दृश्य में दर्शक अलग-अलग कलाकारों की पहचान नहीं पाते।

प्रश्न 4. बारिश का दृश्य चित्रित करने में क्या मुश्किल आई और उसका समाधान किस प्रकार हुआ?

उत्तर- फ़िल्मकार के पास पैसे का अभाव था, अत: बारिश के दिनों में शूटिंग नहीं कर सके। अक्टूबर माह तक उनके पास पैसे इकट्ठे हुए तो बरसात के दिन समाप्त हो चुके थे। शरद ऋतु में बारिश होना भाग्य पर निर्भर था। लेखक हर रोज अपनी टीम के साथ गाँव में जाकर बैठे रहते और बादलों की ओर टकटकी लगाकर देखते रहते। एक दिन उनकी इच्छा पूरी हो गई। अचानक बादल छा गए और धुआँधार बारिश होने लगी। फिल्मकार ने इस बारिश का पूरा फायदा उठाया और दुर्गा और अप्पू का बारिश में भीगने वाला दृश्य शूट कर लिया। इस बरसात में भीगने से दोनों बच्चों को ठंड लग गई, परंतु दृश्य पूरा हो गया।

प्रश्न 5. किसी फिल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर- किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है -

(क) धन की कमी।
(ख) कलाकारों का चयन।
(ग) कलाकारों के स्वास्थ्य, मृत्यु आदि की स्थिति।
(घ) पशु-पात्रों के दृश्य की समस्या।
(ङ) बाहरी दृश्यों हेतु लोकेशन ढूँढ़ना।
(च) प्राकृतिक दृश्य-मौसम पर निर्भरता।
(छ) स्थानीय लोगो का हस्तक्षेप व असहयोग।
(ज) संगीत।
(झ) दृश्यों की निरंतरता हेतु भटकना।
(ञ) फ़िल्म के अनुकूल वातावरण का होना।

प्रश्न 6. अप्पू नाम के लड़के के चयन के लिए सत्यजित ने क्या किया था और अप्पू के पात्र के लिए कैसे सही लड़का चुना गया?

उत्तर- अप्पू नाम के लड़के के पात्र के लिए 6 साल के लड़के की आवश्यकता थी। उस पात्र के लिए बच्चे की चयन के लिए सत्यजीत ने अखबार में विज्ञापन दिया एवं रासबिहारी में एक कमरा लेकर

बच्चों का इंटरव्यू लिया। परंतु कोई भी उनके हिसाब से अप्पू के पात्र के लिए सही नहीं बैठ रहा था। सत्यजित जब अप्पू के पात्र के लिए बच्चों का इंटरव्यू ले रहा था तब उसी समय एक व्यक्ति अपनी बेटी के बाल कटवा कर उसे इंटरव्यू के लिए ले आया लेकिन सत्यजीत ने उसकी गर्दन पर लगे पाउडर से यह बात समझ ली थी वह बाल कटवा कर यहाँ आया है। एक दिन उनकी पत्नी के कहने पर उन्होंने सामने वाले घर के लड़के सुबीर बनर्जी का अप्पू के पात्र के लिए इंटरव्यू लिया और पहली बार में ही उसे पसंद कर लिया।

प्रश्न 7. काश के फूल वाले दृश्य को एक साल बाद क्यों फिल्माया गया?

उत्तर- काश के फूल वाले दृश्य को एक साल बाद फिल्माया गया क्योंकि पहली बार में पूरा दृश्य एक साथ शूट नहीं किया जा सका और अगले शूटिंग को एक हफ्ते के बाद शूट किया गया उस एक हफ्ते में पशुओं ने काश के सारे फूल खा लिए जिसके कारण दृश्य में निरंतरता लाने के लिए इस दृश्य को एक साल बाद तब फिल्माया गया जब फिर से उस मैदान में काश के फूल खिले।

प्रश्न 8. 'वास्तुसर्प' क्या होता है? इससे लेखक का कार्य कब प्रभावित हुआ?

उत्तर- 'वास्तुसर्प' वह होता है जो घर में रहता है। लेखक ने एक गाँव में मकान शूटिंग के लिए किराए पर लिया। इसी मकान के कुछ कमरों में शूटिंग का सामान था। एक कमरे में साउंड रिकार्डिग होती थी जहाँ भूपेन बाबू बैठते थे। वे साउंड की गुणवत्ता बताते थे। एक दिन लेखक के पूछने पर भी उन्होंने उत्तर नहीं दिया। जब लोग कमरे में पहुँचे तो साँप, कमरे की खिड़की से नीचे उतर रहा था। इसी डर से भूपेन बाबू ने जवाब नहीं दिया।

पाठ - 4 विदाई संभाषण (व्यंग्यात्मक निबंध) लेखक : बालमुकुन्द गुप्त

पाठ का सारांश

"विदाई संभाषण" एक व्यंग्यात्मक निबंध है जो "शिवशंभु के चिट्ठे" से लिया गया है। इसमें लेखक ने शिवशंभु नामक पात्र के माध्यम से भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्ज़न को संबोधित करते हुए उनके भारत से विदा होने के अवसर पर अपनी बात कही है। ऊपरी रूप से देखने पर यह लेख विदाई के अवसर पर दिया गया सम्मानपूर्ण भाषण प्रतीत होता है, परंतु वास्तव में यह लॉर्ड कर्ज़न की नीतियों और कार्यों पर किया गया तीखा व्यंग्य है। लेखक बड़ी चतुराई से प्रशंसा के रूप में आलोचना प्रस्तुत करता है। लेखक बताता है कि जब लॉर्ड कर्ज़न भारत आए थे, तब भारतीय जनता उनके प्रति विशेष उत्साहित नहीं थी। उनके शासनकाल में अनेक ऐसे निर्णय लिए गए जिनसे भारतीय जनता असंतुष्ट थी। इसलिए लोग चाहते थे कि वे शीघ्र ही भारत छोड़कर चले जाएँ। लेकिन जब उनके जाने का समय आया, तब लेखक ने मानवीय संवेदना के आधार पर विदाई की करुणा का चित्रण किया। लेखक बिछड़ने की भावना को समझाने के लिए पशु-पक्षियों तक का उदाहरण देता है। वह बताता है कि बिछड़ने के समय शत्रुता भी कम हो जाती है और मन में कोमलता का भाव आ जाता है। इसी आधार पर वह लॉर्ड कर्ज़न के प्रति भी सहानुभूति व्यक्त करता हुआ दिखाई देता है। निबंध में लेखक लॉर्ड कर्ज़न की सत्ता, वैभव और अहंकार पर भी व्यंग्य करता है। वह दिल्ली दरबार की भव्यता का वर्णन करते हुए बताता है कि एक समय ऐसा था जब भारत में उनकी अत्यधिक प्रतिष्ठा थी। वे अपार शक्ति और सम्मान के स्वामी थे। किंतु बाद में परिस्थितियाँ बदल गईं और उन्हें पद छोड़कर जाना पड़ा। इस प्रकार लेखक सत्ता की अस्थिरता और अहंकार की निरर्थकता को उजागर करता है। लेख में लेखक ने कर्ज़न की कई नीतियों, उनके दंभ, प्रशासनिक व्यवहार तथा भारतीय जनता के प्रति उनके दृष्टिकोण की अप्रत्यक्ष आलोचना की है। व्यंग्य और विनोद के माध्यम से लेखक ने ब्रिटिश शासन की वास्तविकता को सामने रखा है।"विदाई संभाषण" हमें यह शिक्षा देता है किसत्ता से अधिक महत्वपूर्ण मानवीयता, न्याय, विनम्रता और जनहित हैं।जो व्यक्ति या शासक इन मूल्यों की उपेक्षा करता है, इतिहास उसे सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता।वहीं जो जनता के हित में कार्य करता है, वही वास्तविक सम्मान का अधिकारी बनता है।

पठित गद्यांश (1)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

बिछड़न समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। आपको बिछड़ते देखकर आज हृदय में बड़ा दुख है। माइ लॉर्ड ! आपके दूसरी बार इस देश में आने से भारतवासी किसी प्रकार प्रसन्न न थे। वे यही चाहते थे कि आप फिर न आवें। पर आप आए और उससे यहाँ के लोग बहुत ही दुखित हुए। वे दिन-रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान् यहाँ से पधारें। पर अहो !आज आपके जाने पर हर्ष की जगह विषाद होता है। इसी से जाना कि बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है, बड़ा पवित्र, बड़ा निर्मल और बड़ा कोमल होता है। वैर-भाव छूटकर शांत रस का आविर्भाव उस समय होता है। माइ लॉर्ड का देश देखने का इस दीन ब्राह्मण को कभी इस जन्म में सौभाग्य नहीं हुआ। इससे नहीं जानता कि वहाँ बिछड़ने के समय लोगों का क्या भाव होता है। पर इस देश के पशु-पक्षियों को भी बिछड़ने के समय

उदास देखा है। एक बार शिवशंभु के दो गायें थीं। उनमें एक अधिक बलशाली थी। वह कभी-कभी अपने सींगों की टक्कर से दूसरी कमजोर गाय को गिरा देती थी। एक दिन वह टक्कर मारने वाली गाय पुरोहित को दे दी गई। देखा कि दुर्बल गाय उसके चले जाने से प्रसन्न नहीं हुई, वरंच उस दिन वह भूखी खड़ी रही, चारा छुआ तक नहीं। माइ लॉर्ड! जिस देश के पशुओं की बिछड़ते समय यह दशा होती है, वहाँ मनुष्यों की कैसी दशा हो सकती है, इसका अंदाजा लगाना कठिन नहीं है।

प्रश्न 1. लेखक किसके बिछड़ने की बात कर रहा है ?

(क) लॉर्ड कर्जन के भारत से (ख) लॉर्ड कर्जन के इंग्लैंड से

(ग) शिवशंभु के अपनी गायों से (घ) शिवशंभु के दो गायों के

प्रश्न 2. लॉर्ड कर्जन कहाँ जा रहा है?

(क) इंग्लैंड वापस (ख) भारत वापस (ग) ब्रिटेन वापस (घ) इंग्लैंड से भारत

प्रश्न 3. बिछड़न का समय कैसा होता हैं ?

(क) करुणा उत्पन्न करने वाला

(ख) इस समय मन बड़ा पवित्र, निर्मल व कोमल हो जाता है

(ग) इस समय वैर भाव समाप्त होने लगता है और शांत रस अपने-आप आ जाता है

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4. कथन-कारण

कथन (A): बिछड़ने का समय मनुष्य के हृदय में कोमल और करुण भाव उत्पन्न कर देता है।

कारण (R): वैर-भाव कम होकर सहानुभूति, संवेदना और शांत भाव का उदय हो जाता है।

विकल्प:

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, किन्तु R असत्य है।

(घ) A असत्य है, किन्तु R सत्य है।

प्रश्न 5. सत्य-असत्य कथनों का चुनाव

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. लेखक के अनुसार भारतवासी लॉर्ड के पुनः भारत आने से अत्यंत प्रसन्न थे।
2. लेखक ने पशुओं के व्यवहार का उदाहरण देकर बिछड़न की करुणा को स्पष्ट किया है।
3. दुर्बल गाय दूसरी गाय के चले जाने पर प्रसन्न हुई और उसने भरपेट चारा खाया।
4. गद्यांश के अनुसार बिछड़न का समय मनुष्य और पशु दोनों में भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है।

सही विकल्प चुनिए

(क) केवल 1 और 3 सत्य हैं। (ग) केवल 1, 2 और 4 सत्य हैं।

(ख) केवल 2 और 4 सत्य हैं। (घ) केवल 2, 3 और 4 सत्य हैं।

उत्तरमाला 1. (क) 2. (क) 3. (घ)4. (क) 5. (ख)

पठित गद्यांश (2)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

विचारिए तो,क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई। कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे। अलिफ लैला के अलहदीन ने चिराग रगड़कर और अबुल हसन ने बगदाद के खलीफा की गद्दी पर आँख खोलकर वह शान न देखी, जो दिल्ली दरबार में आपने देखी। आपकी और आपकी लेडी की कुर्सी सोने की थी और आपके प्रभु महाराज के छोटे भाई और उनकी पत्नी की चाँदी की। आप दाहिने थे, वह बाएँ. आप प्रथम थे, वह दूसरे। इस देश के सब रईसों ने आपको सलाम पहले किया और बादशाह के भाई को पीछे। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा था;हौदा, चँवर, छत्र आदि सबसे बढ़- चढ़कर थे। सारांश यह है कि ईश्वर और महाराज एडवर्ड के बाद इस देश में आप ही का एक दर्जा था। किंतु अब देखते हैं कि जंगी लाट के मुकाबले में आपने पटखनी खाई, सिर के बल नीचेआ रहे! आपके स्वदेश में वही ऊँचे माने गए, आपको साफ़ नीचा देखना पड़ा! पदत्याग की धमकी से भी ऊँचे न हो सके।

प्रश्न 1 - 'कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरें' यह पंक्ति किसके लिए कही गई -

(क) अबुल हसन
(ख) अलिफ लैला के अलहदीन
(ग) लॉर्ड कर्ज़न
(घ) महाराज एडवर्ड

प्रश्न 2. कर्जन की भारत में कैसी शान-शौकत थी?

(क) उसकी व उसकी पत्नी की कुर्सी सोने की बनी थी

(ख) इन्हें इंग्लैंड के राजा के भाई से भी अधिक सम्मान मिलता था। जुलूस में इसका हाथी सबसे आगे व सबसे ऊँचा चलता था।

(ग) ईश्वर व महाराज एडवर्ड के बाद कर्जन को ही सर्वोपरि माना जाता था

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3. 'पदत्याग की धमकी से भी ऊँचे न हो सके' से आशय है-

(क) कर्जन ने वायसराय की कौंसिल में मनपसंद फौजी अफसर रखना चाहा। इसके लिए गैरकानूनी बिल भी पास किया।

(ख) गैरकानूनी बिल की हर जगह निंदा हुई। इस पर उसने पद त्याग की धमकी दी।

(ग) पद त्याग की धमकी को बादशाह ने मंजूर किया। कर्ज़न का पासा उलट गया। पद लेने के बजाय पद छोड़ना पड़ा।

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4. कथन (A):गद्यांश में लेखक ने लॉर्ड कर्ज़न की पूर्व प्रतिष्ठा और वर्तमान स्थिति के बीच तीव्र विरोधाभास प्रस्तुत किया है।

कारण (R):दिल्ली दरबार में उन्हें अत्यधिक सम्मान और महत्त्व प्राप्त था, किंतु बाद की परिस्थितियों में उनकी प्रतिष्ठा में गिरावट दिखाई देती है।

विकल्प:

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, किन्तु R असत्य है।
(घ) A असत्य है, किन्तु R सत्य है।

प्रश्न 5. सत्य-असत्य कथनों का चुनाव
निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. दिल्ली दरबार में लॉर्ड कर्ज़न को अत्यंत उच्च सम्मान और विशिष्ट स्थान प्राप्त था।
2. गद्यांश में लेखक ने अलिफ़ लैला के पात्रों का उल्लेख तुलना और व्यंग्य के उद्देश्य से किया है।
3. लेखक के अनुसार स्वदेश लौटने पर भी लॉर्ड कर्ज़न की प्रतिष्ठा पहले जैसी ही बनी रही।
4. गद्यांश में सत्ता और पद की अस्थिरता का संकेत मिलता है।

सही विकल्प चुनिए–
(क) केवल 1 और 2 सत्य हैं।
(ख) केवल 1, 2 और 4 सत्य हैं।
(ग) केवल 2, 3 और 4 सत्य हैं।
(घ) केवल 1, 3 और 4 सत्य हैं।

उत्तरमाला: 1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख)

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर- कहानी के माध्यम से बताना चाहते हैं कि भारत में मनुष्य तो मनुष्य, पशुओं में भी अपने साथ रहने वालों के प्रति लगाव होता है। वे स्वयं को दुख पहुँचाने वाले व्यक्ति के बिछुड़ने पर भी दुखी होते हैं। यहाँ भावनाएँ प्रधान होती हैं। शिवशंभु की मारने वाली गाय के जाने पर दुर्बल गाय ने चारा नहीं खाया। यहाँ बिछुड़ते समय वैर-भाव को भुला दिया जाता है। विदाई का समय करुणा उत्पन्न करने वाला होता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि लेखक शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से भारत के गौरव को प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रश्न 2.आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने जरा भी ध्यान नहीं दिया- यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर- आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने जरा भी ध्यान नहीं दिया- यहाँ लेखक ने बंगाल के विभाजन की ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया है। लार्ड कर्जन दो बार भारत के वायसराय बने। उन्होंने भारत में ब्रिटिश राज की मजबूती के लिए कार्य किया। भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलने के लिए उसने बंगाल का विभाजन किया। करोड़ों लोगों ने उनसे यह विभाजन रद्द करने के लिए प्रार्थना की, परंतु उन्होंने उनकी एक न सुनी। वे नादिरशाह से भी आगे निकल गए।

प्रश्न 3. कर्जन को इस्तीफा क्यों देना पड़ गया?

उत्तर- (क) कर्ज़न ने बंगाल विभाजन लागू किया। इसके विरोध में सारा देश खड़ा हो गया। कर्ज़न द्वारा राष्ट्रीय ताकतों को खत्म करने का प्रयास विफल रहा, उलटे ब्रिटिश शासन की जड़ें हिल गई। (ख) कर्ज़न इंग्लैंड में एक फौजी अफसर को इच्छित पद पर नियुक्त करवाना चाहता था। उसकी सिफारिश को नहीं माना गया। उसने इस्तीफे की धमकी से काम करवाना चाहा, परंतु ब्रिटिश सरकार ने उसका इस्तीफा ही मंजूर कर लिया।

प्रश्न 4. विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई! कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे। - आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई! कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे।' यह कथन लेखक द्वारा लार्ड कर्जन को संबोधित करते हुए कहा गया है। उस समय जबकि कौंसिल में मनपसंद सदस्यों की नियुक्ति करवाने के मुद्दे पर लॉर्ड को अपमानित होना पड़ा था, लेखक याद दिला रहे हैं कि आपको भारत में बादशाह के बराबर सोने की कुरसी मिली, आपको सबसे ऊँचा ओहदा मिला। आपकी सवारी में आपका हाथी सबसे ऊँचा होता था और कैसी विडंबना है कि आज आप न इंग्लैंड में मान पा सके, न ही भारत में उस पद पर रह सके। कहने का तात्पर्य यह है कि जिनका हुक्म मनवाने के लिए लार्ड कर्जन भारतीय जनता का शोषण करते रहे, आज उन्होंने ही लार्ड कर्जन को ठुकरा दिया। लार्ड कर्जन का मान-सम्मान सब मिट्टी में मिल गया।

प्रश्न 5. आपके और यहाँ के निवासियों के बीच में कोई तीसरी शक्ति और भी है - यहाँ तीसरी शक्ति किसे कहा गया है?

उत्तर- आपके और यहाँ के निवासियों के बीच में कोई तीसरी शक्ति और भी है - यहाँ 'तीसरी शक्ति' से अभिप्राय ब्रिटिश शासकों से है। इंग्लैंड में रानी विक्टोरिया का राज था। उन्हीं के आदेशों का पालन वायसराय करता था। वह ब्रिटिश हितों की रक्षा करता था। कर्ज़न की नियुक्ति भी इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई थी। जब ब्रिटिश शासकों को लगा कि कर्ज़न ब्रिटिश शासकों के हित नहीं बचा पा रहा तो उन्होंने उसे हटा दिया। उस समय कर्ज़न को भारत छोड़ने की आशा नहीं थी। परन्तु रानी विक्टोरिया के आदेश पर कर्ज़न को इंग्लैंड वापस बुलाया गया। इसी वजह से लेखक कर्ज़न को कह रहे हैं कि उसके और भारतियों के बीच में जो तीसरी शक्ति है उस पर कर्ज़न का भी कोई ज़ोर नहीं चलता।

प्रश्न 6. किन दो कहानियों और गीतों के माध्यम से लेखक लॉर्ड कर्ज़न को भारत की प्रजा की भावनाओं को समझाने का प्रयास करते हैं?

उत्तर- लेखक ने पहले तो **शिवशंभु की दो गायों** जिसमें एक बलवाली और दूसरी कमज़ोर जो बलवाली गाय से मार खाकर भी उसे स्नेह करने वाली है, उन गाय पर लघु कथा लिखी है। उसके बाद **एक लोकगीत के राजकुमार सुलतान ने नरवरगढ़** में रहने और फिर विनम्र अश्रुपूर्ण आज्ञा माँगने की भावपूर्ण स्थिति का वर्णन किया है। लेखक कर्जन को समझाना चाहते है कि भारत में पशु और लोग कितने भावुक हैं, पर तुमने उनकी भावनाओं को जरा-सा भी महत्त्व नहीं दिया।

प्रश्न 7. नरवरगढ़ से विदा होते समय नर सुल्तान ने नरवरगढ़ को क्या कहा?

उत्तर- नर सुल्तान ने कहा कि "प्यारे नरवरगढ़ ! मेरा प्रणाम ले। आज मैं तुमसे जुदा होता हूँ। तू मेरा अन्नदाता है। अपनी विपदा के दिन मैंने तुझमें काटे हैं। तेरे ऋण का बदला मैं गरीब सिपाही नहीं दे सकता। भाई नरवरगढ़! यदि मैंने जानबूझकर एक दिन भी अपनी सेवा में चूक की हो, यहां की प्रजा की शुभ चिंता ना की हो,यहाँ की स्त्रियों को माता और बहन दृष्टि से ना देखा हो तो मेरा प्रणाम ना ले, नहीं तो प्रसन्न होकर एक बार मेरा प्रणाम ले और मुझे जाने की आज्ञा दें।"

प्रश्न 8. लार्ड कर्जन की किन नीतियों से भारतीय परेशान थे?

उत्तर- लॉर्ड कर्जन निरंकुश सत्ता के पक्षधर थे। वे सुधारों के नाम पर विभिन्न आयोगों का गठन करते और हर तरह से अंग्रेज अधिकारियों का वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश करते थे। जनता की भलाई के लिए उन्होंने कभी एक काम भी नहीं किया। वे बड़े ही जिद्दी स्वभाव के थे। उनकी क्रूरता की पराकाष्ठा थी-बंगाल का विभाजन जिसे करोड़ों की प्रार्थना के बाद भी उनके अड़ियल स्वभाव ने अंजाम दिया। इन्हीं नीतियों के कारण भारत के लोग लॉर्ड कर्जन को नापसंद करते थे।

प्रश्न 9. कर्जन की तुलना तानाशाहों से की गई, क्यों?

उत्तर- कर्जन को क्रूरतम तानाशाह बताते हुए लेखक ने उसे कैसर, जार और नादिरशाह से भी अधिक क्रूर कहा है। उनका कहना है कि रोम के तानाशाह कैसर और ज़ार भी जनता के घेरने और घोटने से जनता की बात सुन लेते हैं, पर तुमने एक बार भी ऐसा नहीं किया। ईरान के क्रूर शासक नादिरशाह ने जब दिल्ली में कत्लेआम किया तो आसिफ़जाह की प्रार्थना पर उसे रोक दिया था। इन सब से ऊपर निरंकुश लॉर्ड कर्जन ने तो करोड़ों की प्रार्थना को ठुकराकर बंगाल पर आरी चलाई थी। अतः लेखक उसे संसार का क्रूरतम तानाशाह कहता है।

प्रश्न 10. 'विदाई-संभाषण तत्कालीन साहसिक लेखन का नमूना है। सिद्ध कीजिए।

उत्तर- विदाई-संभाषण जैसा व्यंग्यात्मक, विनोदप्रिय, चुलबुला, जोश भरा, ताजगीवाला गद्य पढ़कर ऐसा अहसास नहीं होता कि उस समय लॉर्ड कर्जन ने प्रेस पर पाबंदी लगाई हुई थी। इस गद्य में आततायी को पीड़ा की चुभन का अहसास कराया गया है जो अपने-आप में एक साहसिक कदम है। इस गद्य में इतने प्यारे व्यंग्यात्मक बाण छोड़े गए हैं कि कर्जन तो कर्जन है, आज भी कोई कठोर शासक घायल हुए बिना नहीं रह सकता। अतः इसे साहसिक लेखन को नमूना ही नहीं, आदर्श भी कहा जा सकता है। भारतीय जनता की लाचारी को कर्जन की विवशता से जोड़कर लिखना लेखन की कलात्मक प्रस्तुति है।

पाठ - 5 गलता लोहा (शेखर जोशी)

कहानी का सारांश

'गलता लोहा' कहानी सामाजिक भेदभाव, शिक्षा व्यवस्था और मानवीय प्रतिभा के प्रश्नों को उठाती है। कहानी के दो मुख्य पात्र **मोहन** और **धनराम** हैं।मोहन एक ब्राह्मण परिवार का बुद्धिमान बालक है। उसके गुरु त्रिलोक सिंह को विश्वास था कि वह आगे चलकर बड़ा अधिकारी बनेगा। दूसरी ओर धनराम लोहार जाति से है। उसे पढ़ाई में कमजोर समझा जाता है और मास्टर जी भी उसे विशेष महत्व नहीं देते। परिस्थितियों के कारण धनराम की पढ़ाई छूट जाती है और वह अपने पिता का लोहार का काम संभाल लेता है।मोहन भी आगे की पढ़ाई के लिए शहर जाता है, परंतु पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियों के कारण वह अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाता। वह तकनीकी शिक्षा लेकर नौकरी करने लगता है। वर्षों बाद गाँव आने पर वह धनराम की भट्टी पर जाता है। वहाँ धनराम लोहे की एक छड़ को गोल आकार देने का प्रयास कर रहा होता है। मोहन उसकी सहायता करता है और अपने कुशल हाथों से लोहे का सुंदर छल्ला बना देता है।इस घटना से स्पष्ट होता है कि प्रतिभा केवल पुस्तकीय शिक्षा तक सीमित नहीं होती। जीवन की परिस्थितियाँ व्यक्ति की दिशा तय करती हैं। कहानी यह भी बताती है कि जातिगत भेदभाव मनुष्य की वास्तविक क्षमता का सही मूल्यांकन नहीं कर पाता। **कहानी का केंद्रीय संदेश यह है कि** प्रतिभा किसी जाति या वर्ग की बपौती नहीं होती। शिक्षा और अवसरों की असमानता अनेक प्रतिभाओं को दबा देती है। श्रम का सम्मान होना चाहिए। सामाजिक भेदभाव मानव विकास में बाधक है। मनुष्य की पहचान उसके कर्म और कौशल से होती है, जन्म से नहीं। **"गलता लोहा" कहानी सामाजिक भेदभाव और अवसरों की असमानता के बीच मानवीय प्रतिभा, श्रम की गरिमा तथा कर्म की श्रेष्ठता को स्थापित करती है।**

मुख्य पात्र

(क) मोहन: ब्राह्मण परिवार का मेधावी छात्र। संवेदनशील और मेहनती। परिस्थितियों का शिकार।

- तकनीकी कार्यों में भी दक्ष। जातिगत अहंकार से मुक्त।

(ख) धनराम: लोहार परिवार का युवक। सरल, मेहनती और विनम्र। कुशल कारीगर।

- सामाजिक हीनता का अनुभव करता है।मोहन के प्रति सम्मान और स्नेह रखता है।

(ग) वंशीधर मोहन के पिता। रोहित और परंपरावादी। पुत्र के उज्ज्वल भविष्य के सपने देखते हैं।

(घ) मास्टर त्रिलोक सिंह विद्यालय के शिक्षक।अनुशासनप्रिय।मोहन की प्रतिभा के प्रशंसक।

(1)

पठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

औसत दफ़्तरी बड़े बाबू की हैसियत वाले रमेश के लिए मोहन को अपनी भाई-बिरादर बतलाना अपने सम्मान के विरुद्ध जान पड़ता था और उसे घरेलू नौकर से अधिक हैसियत नहीं देता था, इस बात को मोहन भी समझने लगा था। थोड़ी बहुत हीला-हवाली करने के बाद रमेश ने निकट के ही एक साधारण से स्कूल उसका नाम लिखवा दिया। लेकिन एकदम नए वातावरण और रात-दिन के काम के बोझ के कारण गाँव का वह मेधावी छात्र शहर के स्कूली जीवन में अपनी कोई पहचान नहीं बना

पाया। उसका जीवन एक बँधी बँधाई लीक पर। चलता रहा। साल में एक बार गर्मियों की छुट्टी में गाँव जाने का मौक भी तभी मिलता जब रमेश या उसके घर का कोई प्राणी गाँव जाने वाला होता वरना उन छुट्टयों को भी अगले दरजे की तैयारी के नाम पर उसे शहर में ही गुज़ार देना पड़ता था। अगले दरजे की तैयारी तो बहाना भर थी, सवाल रमेश और उसकी गृहस्थी की सुविधा-असुविधा का था। मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था, क्योंकि और कोई चारा भी नहीं था। घरवालों को अपनी वास्तविक स्थिति बतलाकर वह दुखी नहीं करना चाहता था। वंशीधर उसके सुनहरे भविष्य के सपने देख रहे थे।

प्रश्न 1 - रमेश मोहन को नौकर की हैसियत में क्यों रखता था -

(क) रमेश औसत दप्तरी बड़े बाबू की हैसियत का था,अतः वह मोहन को अपना भाई-बिरादर बताकर अपना अपमान नहीं करवाना चाहता था

(ख) रमेश बड़े बाबू की हैसियत का था, अतः वह मोहन को अपना भाई-बिरादर बताकर अपना अपमान नहीं करवाना चाहता था

(ग) रमेश बड़े बाबू की हैसियत का था, अतः वह मोहन को छोटा समझता था

(घ) रमेश की शहर में कभी जान पहचान थी अतः वह मोहन को अच्छा नहीं समझता था

प्रश्न 2 - मोहन स्कूल में अपनी पहचान क्यों नहीं बना पाया?

(क) घर के अत्यधिक काम के कारण (ख) नए वातावरण के कारण

(ग) घर के सदस्यों के व्यवहार के कारण (घ) घर के अत्यधिक काम और नए वातावरण के कारण

प्रश्न 3 - मोहन ने परिस्थितियों से समझौता क्यों कर लिया -

(क) वह अपनी वास्तविक स्थिति घर वालों को बताकर घर वापिस नहीं जाना चाहता था

(ख) वह अपनी वास्तविक स्थिति घर वालों को बताकर दुखी नहीं करना चाहता था

(ग) वह अपनी वास्तविक स्थिति किसी को बताकर रमेश का अपमान नहीं करना चाहता था

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4 : कथन एवं कारण

कथन (A): मोहन शहर में अपनी प्रतिभा के अनुरूप पहचान बनाने में सफल नहीं हो पाया।

कारण (R): नए वातावरण तथा घरेलू कार्यों के अत्यधिक बोझ के कारण वह अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान नहीं दे सका।

विकल्प :

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा कारण (R),कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परंतु कारण (R),कथन सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन (A) सत्य है, परंतु कारण (R) असत्य है।

(घ) कथन (A) असत्य है, परंतु कारण (R) सत्य है।

प्रश्न 5 : निम्नलिखित कथनों में से सत्य/असत्य कथन पहचानिए

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. रमेश मोहन को अपने भाई-बिरादर के रूप में सम्मानपूर्वक परिचित कराता था।

2. नए वातावरण और काम के बोझ के कारण मोहन शहर के विद्यालय में अपनी विशेष पहचान नहीं बना पाया।
3. मोहन को प्रत्येक वर्ष गर्मियों की छुट्टियों में गाँव जाने का अवसर मिल जाता था।
4. मोहन अपने घरवालों को अपनी स्थिति बताकर उन्हें चिंतित नहीं करना चाहता था।

विकल्प :

(क) केवल 1 और 3 असत्य हैं। (ग) केवल 1, 2 और 4 सत्य हैं।

(ख) केवल 2 और 4 सत्य हैं। (घ) केवल 3 और 4 असत्य हैं।

उत्तरमाला- 1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)

पठित गद्यांश (2)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

सामान्य तौर से ब्राह्मण टोले के लोगों का शिल्पकार टोले में उठना-बैठना नहीं होता था। किसी काम-काज के सिलसिले में यदि शिल्पकार टोले में आना ही पड़ा तो खड़े-खड़े बातचीत निपटा ली जाती थी। ब्राह्मण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। पिछले कुछ वर्षों से शहर में जा रहने के बावजूद मोहन गाँव की इन मान्यताओं से अपरिचित हो ऐसा संभव नहीं था। धनराम मन-ही-मन उसके व्यवहार से असमंजस में पड़ा था लेकिन प्रकट में उसने कुछ नहीं कहा और अपना काम करता रहा। लोहे की एक मोटी छड़ को भट्टी में गलाकर धनराम गोलाई में मोड़ने की कोशिश कर रहा था। एक हाथ से सँडसी पकड़कर जब वह दूसरे हाथ से हथौड़े की चोट मारता तो निहाई पर ठीक घाट में सिरा न फैसने के कारण लोहा उचित ढंग से मुड़ नहीं पा रहा था। मोहन कुछ देर तक उसे काम करते हुए देखता रहा फिर जैसे अपना संकोच त्यागकर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया और धनराम के हाथ से हथौड़ा लेकर नापी-तुली चोट मारते, अभ्यस्त हाथों से धौंकनी फेंककर लोहे को दुबारा भट्टी में गरम करते और फिर निहाई पर रखकर उसे ठोकते पीटते सुघड़ गोले का रूप दे डाला।

प्रश्न 1 - गाँव की सामान्य तौर पर क्या मान्यता थी -

(क) ब्राह्मण टोले के लोगों का शिल्पकार टोले में उठना-बैठना नहीं होता था

(ख) शिल्पकार टोले के लोगों का ब्राह्मण टोले में उठना-बैठना नहीं होता था

(ग) ब्राह्मण टोले के लोगों को शिल्पकार टोले के लोगों का अपमान करना आम बात थी

(घ) ब्राह्मण टोले के लोग अपने आप को शिल्पकार टोले के लोगों से ऊँचा मानते थे

प्रश्न 2 - धनराम मन-ही-मन किसके व्यवहार से असमंजस में पड़ा था -

(क) अध्यापक के (ख) मोहन के (ग) रमेश के (घ) गाँव के लोगों के

प्रश्न 3 - मोहन धनराम के आफर क्यों गया था?

(क) हँसुवे की धार तेज़ करवाने के लिए

(ख) उसका अपमान करवाने के लिए

(ग) उसके पिता के गुजर जाने का दुःख जताने

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 : कथन एवं कारण (Assertion-Reason)

कथन (A): मोहन ने धनराम की सहायता करके लोहे की छड़ को सुघड़ गोले का रूप दे दिया।

कारण (R): मोहन जातिगत भेदभाव और सामाजिक मान्यताओं से ऊपर उठकर श्रम तथा कौशल का सम्मान करता था।

विकल्प :

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा कारण,कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन (A) सत्य है, परंतु कारण (R) असत्य है।

(घ) कथन (A) असत्य है, परंतु कारण (R) सत्य है।

प्रश्न 5 : निम्नलिखित कथनों में से सत्य/असत्य कथन पहचानिए

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. ब्राह्मण टोले के लोग सामान्यतः शिल्पकार टोले में बैठकर बातचीत करते थे।
2. धनराम लोहे की छड़ को ठीक प्रकार से मोड़ने में कठिनाई अनुभव कर रहा था।
3. मोहन ने संकोच त्यागकर धनराम के कार्य में सहायता की।
4. मोहन लोहार के काम से पूरी तरह अपरिचित था।

विकल्प :

(क) केवल 1 और 4 असत्य हैं।

(ख) केवल 2 और 3 सत्य हैं।

(ग) केवल 1, 2 और 3 सत्य हैं।

(घ) केवल 4 सत्य है।

उत्तरमाला 1 (क) **2** (ख) **3** (क) **4** (क) **5** (क) हैं।

अभ्यास प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. 'गलता लोहा' शीर्षक का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

उत्तर- गलता हुआ लोहा उन मनुष्यों का प्रतीक है जिन्हें परिस्थितियाँ नए रूप में ढाल देती हैं। कहानी बताती है कि सामाजिक दबाव और अवसरों की कमी मनुष्य के जीवन को बदल देती है।

प्रश्न 2. कहानी में शिक्षा व्यवस्था की कौन-सी विडंबना सामने आती है?

उत्तर- कहानी में शिक्षा व्यवस्था की विडंबना यह है कि मेधावी छात्र मोहन भी उचित अवसरों के अभाव में आगे नहीं बढ़ पाता, जबकि धनराम को प्रारंभ से ही कमतर समझा जाता है। सामाजिक स्थिति और आर्थिक परिस्थितियाँ प्रतिभा के विकास में बाधा बनती हैं।

प्रश्न 3. धनराम के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- धनराम मेहनती, विनम्र और कुशल कारीगर है। वह जातिगत हीनता के बावजूद मोहन के प्रति आदर रखता है। अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने जिम्मेदारी संभाली और मेहनत से लोहार का काम सीखकर गाँव में सम्मान प्राप्त किया।

प्रश्न 4. कहानी में जातिगत भेदभाव किस प्रकार व्यक्त हुआ है?

उत्तर- ब्राह्मण टोले के लोग शिल्पकार टोले में बैठकर बातचीत नहीं करते थे। धनराम भी मोहन के व्यवहार से असमंजस में पड़ जाता है। यह दिखाता है कि समाज में जातिगत दूरी और श्रेष्ठता-बोध गहराई से मौजूद था। लेखक इन मान्यताओं पर प्रश्न उठाते हैं।

प्रश्न 5. यदि आप मोहन की स्थिति में होते, तो क्या करते?

उत्तर- यदि मैं मोहन की स्थिति में होता, तो अपनी वास्तविक परिस्थितियाँ परिवार को बताता और शिक्षा तथा काम के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता। साथ ही, अपने कौशल को विकसित करने के लिए अवसर खोजता और आत्मविश्वास बनाए रखता।

प्रश्न 6. कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है? उत्तर- जिस समय धनराम तेरह का पहाड़ा सुनाने में असमर्थ हो गया तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने जबान के चाबुक लगाते हुए कहा कि 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' यह सच है कि किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। उन्होंने बचपन में ही अपने पुत्र को धौंकनी फूंकने और सान लगाने के कामों में लगा दिया था। वे उसे धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगे। उपर्युक्त प्रसंग में किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है।

प्रश्न 7. धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था?

उत्तर- धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था क्योंकि वह स्वयं को नीची जाति का समझता था। यह बात बचपन से उसके मन में बैठा दी गई थी। मोहन कक्षा का सबसे होशियार लड़का था। वह हर प्रश्न का उत्तर देता था। उसे मास्टर जी ने पूरी पाठशाला का मॉनीटर बना रखा था। वह अच्छा गाता था। मास्टर जी को लगता था कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल तथा उनका नाम रोशन करेगा। इन्हीं कारणों की वजह से धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

प्रश्न 8. धनराम को मोहन के किस व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों?

उत्तर- मोहन ब्राहमण जाति का था और उस गाँव में ब्राहमण शिल्पकारों के यहाँ उठते-बैठते नहीं थे। यहाँ तक कि उन्हें बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन धनराम की दुकान पर काम खत्म होने के बाद भी काफी देर तक बैठा रहा। इस बात पर धनराम को हैरानी हुई। उसे अधिक हैरानी तब हुई जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा लेकर लोहे पर नपी-तुली चोटें मारी और धौंकनी फूंकते हुए भट्ठी में लोहे को गरम किया और ठोक-पीटकर उसे गोल रूप दे दिया। मोहन पुरोहित खानदान का पुत्र होने के बाद निम्न जाति के काम कर रहा था। धनराम शंकित दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।

प्रश्न 9. मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा है?

उत्तर- मोहन अपने गाँव का एक होनहार विद्यार्थी था। पाँचवीं कक्षा तक आते-आते मास्टर जी सदा उसे यही कहते कि एक दिन वह अपने गाँव का नाम रोशन करेगा। जब पाँचवीं कक्षा में उसे छात्रवृत्ति मिली तो मास्टर जी की भविष्यवाणी सच होती नज़र आने लगी। यही मोहन जब पढ़ने के लिए अपने रिश्तेदार रमेश के साथ लखनऊ पहुँचा तो उसने इस होनहार को घर का नौकर बना दिया। बाजार का काम करना, घरेलु काम-काज में हाथ बँटाना, इस काम के बोझ ने गाँव के मेधावी छात्र को शहर के स्कूल में अपनी जगह नहीं बनाने दी। इन्हीं स्थितियों के चलते लेखक ने मोहन के जीवन में आए इस परिवर्तन को जीवन का एक नया अध्याय कहा है।

प्रश्न 10 - मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर- जब धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने व्यंग्य वचन कहे 'तेरे

दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' लेखक ने इन व्यंग्य वचनों को ज़बान के 'चाबुक' कहा है। चमड़े की चाबुक शरीर पर चोट करती है, परंतु ज़बान की चाबुक मन पर चोट करती है। यह चोट कभी ठीक नहीं होती। इस चोट के कारण धनराम आगे नहीं पढ़ पाया और वह पढ़ाई छोड़कर पुश्तैनी काम में लग गया।

पाठ - 6 रजनी : मन्नू भंडारी

पाठ का सारांश

"रजनी" एक पटकथा है, जिसमें शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त निजी ट्यूशन के भ्रष्टाचार और उसके विरुद्ध एक जागरूक महिला रजनी के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।कहानी का आरंभ अमित नामक छात्र की समस्या से होता है। अमित गणित में होशियार छात्र है, फिर भी उसे अपेक्षा से कम अंक मिलते हैं क्योंकि उसने अपने शिक्षक की निजी ट्यूशन नहीं ली थी। इस अन्याय को रजनी गंभीरता से लेती है और इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का निर्णय करती है।रजनी शिक्षा बोर्ड के निदेशक से मिलती है और निजी ट्यूशन के नाम पर विद्यार्थियों के शोषण का मुद्दा उठाती है। निदेशक पहले इस समस्या को गंभीरता से नहीं लेते, परंतु रजनी हार नहीं मानती। वह अभिभावकों से संपर्क करती है, शिकायतें एकत्र करती है और लोगों को जागरूक बनाती है। इसके बाद रजनी समाचार-पत्र के संपादक का सहयोग प्राप्त करती है। समाचार-पत्र इस मुद्दे को प्रमुखता से प्रकाशित करता है तथा अभिभावकों की बैठक आयोजित की जाती है। इस आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन मिलता है। बैठक में रजनी प्रस्ताव रखती है कि कोई भी शिक्षक अपने ही विद्यालय के विद्यार्थियों को निजी ट्यूशन न पढ़ाए। सभी लोग इस प्रस्ताव का समर्थन करते हैं। अंततः शिक्षा बोर्ड इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है और नया नियम बना दिया जाता है। रजनी की दृढ़ता, साहस और सामाजिक चेतना के कारण शिक्षा व्यवस्था में सुधार संभव हो पाता है। **पाठ का केंद्रीय संदेश यह है कि** अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिए। जागरूक नागरिक समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। शिक्षा सेवा है, व्यवसाय नहीं। सामूहिक प्रयास से बड़ी समस्याओं का समाधान संभव है। दृढ़ निश्चय और साहस से व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है। **"रजनी" मन्नू भंडारी की एक प्रभावशाली पटकथा है, जिसमें निजी ट्यूशन की भ्रष्ट व्यवस्था के विरुद्ध एक जागरूक महिला के संघर्ष, साहस और सामाजिक परिवर्तन की शक्ति को प्रस्तुत किया गया है।**

मुख्य पात्र - रजनी, अमित, लीला बेन, शिक्षा निदेशक, संपादक

अपठित गद्यांश (1)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

लीला: हाफ-ईयरली में तो इसके नाइंटी-सिक्स नंबर आए थे...इसी ने बताया था कि क्लास में सबसे ज्यादा हैं।

रजनी: उसके बाद भी कहते थे कि ट्यूशन लो?

अमित: हाँ कॉपी लौटाते हुए कहा था कि तुमने किया तो अच्छा है पर यह तो हाफ़ ईयरली है बहुत आसान पेपर होता है इसका तो। अब अगर ईयरली में भी पूरे नंबर लेने हैं तो तुरंत ट्यूशन लेना शुरू कर दो। वरना रह जाओगे। सात लड़कों ने तो शुरू भी कर दिया था। पर मैंने जब मम्मी-पापा से कहा, हमेशा बस एक ही जवाब (मम्मी की नकल उतारते हुए मैथ्स में तो तू वैसे ही बहुत अच्छा है, क्या करेगा ट्यूशन लेकर? देख लिया अब? सिक्स्थ पोज़ीशन आई है मेरी। जो आज तक कभी नहीं आई थी।

प्रश्न 1. हाफ-ईयरली में तो अमित के ———- नंबर आए थे

(क) नाइंटी-सिक्स (ख) नाइंटी-फाइव (ग) नाइंटी-वन (घ) नाइंटी-सेवन

प्रश्न 2. अमित के अध्यापक ने उस क्या कहा?

(क) हाफ़-ईयरली परीक्षा में तुमने अच्छा किया है

(ख) अगर ईयरली में तुम्हें पूरे नंबर लेने हैं तो तुरंत यूशन लगवा लो

(ग) उसने ट्यूशन न लेने पर परिणाम भुगतने की धमकी भी दी

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3. अमित की मम्मी ने गणित का ट्यूशन लगाने से क्यों मना किया?

(क) अमित गणित में बहुत होशियार था

(ख) वह गणित में बिना ट्यूशन के ही अच्छे नंबर लाता था

(ग) इसके अलावा उन्हें अमित की प्रतिभा पर भी भरोसा था

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4. कथन एवं कारण आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

कथन (A): **अमित को वार्षिक परीक्षा में अपेक्षा से कम अंक प्राप्त हुए और उसकी कक्षा में छठी रैंक आई ।**

कारण (R): अमित ने गणित के शिक्षक की निजी ट्यूशन लेने से इंकार कर दिया था।

विकल्प :

(क) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, परंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन सत्य है, पर कारण असत्य है।

(घ) कथन असत्य है, पर कारण सत्य है।

प्रश्न 5. सत्य-असत्य कथनों पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

(1) अमित के हाफ-ईयरली परीक्षा में गणित में 96 अंक आए थे।

(2) शिक्षक ने अमित को ट्यूशन लेने की सलाह दी थी।

(3) अमित के माता-पिता ने तुरंत उसे ट्यूशन लगवा दिया था।

(4) सात विद्यार्थियों ने शिक्षक की ट्यूशन लेना शुरू कर दिया था।

सही विकल्प चुनिए :

(क) 1, 2 और 4 सत्य हैं; 3 असत्य है।

(ख) 1 और 3 सत्य हैं; 2 और 4 असत्य हैं।

(ग) केवल 2 और 3 सत्य हैं।

(घ) सभी कथन सत्य हैं।

उत्तरमाला- 1 (क) 2. (घ) **3** (घ) **4** (क) **5** (क)

पठित गद्यांश (2)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

हैडमास्टर: देखिए यह टीचर्स और स्टूडेंट्स का अपना आपसी मामला है, वो पढ़ने जाते हैं और वो पढ़ाते हैं। इसमें न स्कूल आता है, न स्कूल के नियम! इस बारे में हम क्या कर सकते हैं? रजनी: कुछ नहीं कर सकते आप? तो मेहरबानी करके यह कुर्सी छोड़ दीजिए। क्योंकि यहाँ पर कुछ कर सकने वाला आदमी चाहिए। जो ट्यूशन के नाम पर चलने वाली धाँधलियों को रोक सके, मासूम

और देगुनाह बच्चों को ऐसे टीचर्स के शिकंजों से बचा सके जो ट्यूशन न लेने पर बच्चों के नंबर काट लेते हैं. और आप हैं कि कॉपियाँ न दिखाने के नियम से उनके सारे गुनाह ढक देते हैं।

प्रश्न 1. 'इसमें न स्कूल आता है, न स्कूल के नियम! इस बारे में हम क्या कर सकते हैं?' यह वाक्य हैडमास्टर के कैसे व्यवहार को दर्शाता है-

(क) जिम्मेदारी (ख) गैरज़िम्मेदारी (ग) आलसी (घ) बेपरवाह

प्रश्न 2. 'कुछ नहीं कर सकते आप? तो मेहरबानी करके यह कुर्सी छोड़ दीजिए।' रजनी का यह कथन कहाँ तक उचित है -

(क) कथन पूर्णतया सत्य और उचित है, क्योंकि प्रधानाचार्य का पद जिम्मेदारी का पद है

(ख) कथन पूर्णतया असत्य और अनुचित है, क्योंकि प्रधानाचार्य का पद जिम्मेदारी का पद है

(ग) कथन पूर्णतया सत्य और उचित है,क्योंकि प्रधानाचार्य का पद कोई जिम्मेदारी का पद नहीं है

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. ट्यूशन के नाम पर क्या हो रहा है?

(क) बच्चों का शोषण किया जाता है

(ख) बच्चों को डराया धमकाया जाता है

(ग) जो बच्चे ट्यूशन नहीं पढ़ते, उन्हें कम अंक दिए जाते हैं

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4. कथन एवं कारण आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

कथन (A): रजनी ने हैडमास्टर की कार्यशैली पर प्रश्न उठाया।

कारण (R): हैडमास्टर ट्यूशन के नाम पर होने वाली अनियमितताओं को रोकने के लिए कोई ठोस कदम उठाने को तैयार नहीं थे।

विकल्प :

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परंतु कारण , कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन (A) सत्य है, पर कारण (R) असत्य है।

(घ) कथन (A) असत्य है, पर कारण (R) सत्य है।

प्रश्न 5. सत्य-असत्य कथनों पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. हैडमास्टर के अनुसार ट्यूशन का मामला विद्यालय और उसके नियमों से संबंधित नहीं था।
2. रजनी का मानना था कि हैडमास्टर ट्यूशन की धाँधलियों को रोक सकते हैं।
3. रजनी ने कहा कि शिक्षक ट्यूशन न लेने वाले विद्यार्थियों के अंक काट लेते हैं।
4. हैडमास्टर ने स्वीकार किया कि विद्यालय के नियमों में सुधार की आवश्यकता है।

विकल्प :

(क) केवल 1, 2 और 3 सत्य हैं।

(ख) केवल 2 और 4 सत्य हैं।

(ग) केवल 1 और 4 सत्य हैं।

(घ) सभी कथन सत्य हैं।

उत्तरमाला- 1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (क)

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. रजनी ने अमित के मामले को गंभीरता से क्यों लिया?

उत्तर- रजनी अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाली जागरूक महिला थी। उसे लगा कि ट्यूशन के नाम पर विद्यार्थियों का शोषण हो रहा है, इसलिए उसने अमित की समस्या को सामाजिक मुद्दा मानकर गंभीरता से लिया।

प्रश्न 2. रजनी के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- रजनी साहसी, न्यायप्रिय, संघर्षशील और सामाजिक चेतना से संपन्न महिला है। वह अन्याय के विरुद्ध निर्भीकता से आवाज़ उठाती है। उसकी नेतृत्व क्षमता, दृढ़ निश्चय और जनहित की भावना उसे एक प्रभावशाली सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 3. रजनी ने निजी ट्यूशन की समस्या के समाधान के लिए क्या कदम उठाए?

उत्तर- रजनी ने शिक्षा निदेशक से मुलाकात की, अभिभावकों से संपर्क किया, शिकायतें एकत्र कीं, समाचार-पत्र का सहयोग प्राप्त किया तथा अभिभावकों की बैठक आयोजित की। सामूहिक प्रयासों के माध्यम से उसने शिक्षा बोर्ड पर दबाव बनाया और समाधान प्राप्त किया।

प्रश्न 4. बैठक में रजनी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव क्या था?

उत्तर- रजनी ने प्रस्ताव रखा कि कोई भी शिक्षक अपने ही विद्यालय के विद्यार्थियों को निजी ट्यूशन न पढ़ाए। इससे विद्यार्थियों के साथ होने वाला पक्षपात और अंक काटने जैसी अनुचित प्रवृत्तियाँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी। सभा में उपस्थित लोगों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

प्रश्न 5. पाठ का केंद्रीय संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पाठ का केंद्रीय संदेश है कि अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध साहसपूर्वक संघर्ष करना चाहिए। जागरूक नागरिक सामूहिक प्रयासों से व्यवस्था में सुधार ला सकते हैं। शिक्षा सेवा का माध्यम है, न कि शोषण का साधन। रजनी का संघर्ष इसी संदेश को स्थापित करता है।

प्रश्न 6. यदि आपके विद्यालय में किसी शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के साथ पक्षपात किया जा रहा हो, तो आप क्या करेंगे?

उत्तर- मैं पहले तथ्य और प्रमाण एकत्र करूँगा। इसके बाद विद्यालय प्रशासन, अभिभावकों और संबंधित अधिकारियों को समस्या से अवगत कराऊँगा। शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक तरीके से शिकायत कर समाधान खोजने का प्रयास करूँगा, जैसा रजनी ने किया था।

प्रश्न 7. रजनी की तरह सामाजिक समस्या के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास क्यों आवश्यक हैं?

उत्तर- सामूहिक प्रयास से समस्या को व्यापक समर्थन मिलता है और संबंधित अधिकारियों पर सकारात्मक दबाव बनता है। इससे जनहित के मुद्दे अधिक प्रभावी ढंग से उठाए जा सकते हैं। रजनी ने भी अभिभावकों, समाचार-पत्र और समाज को साथ लेकर सफलता प्राप्त की, जो सामूहिक शक्ति का उदाहरण है।

प्रश्न 8. स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है?

उत्तर- रजनी आम स्त्रियों से अलग है। आम स्त्री सहनशील होती है, वह डरपोक होती है। वह अन्याय का विरोध नहीं करती तथा संघर्षों से दूर रहना चाहती है। रजनी इन सबके विपरीत जुझारू, संघर्षशील व बहादुर है। वह अपने सामने हो रहे अन्याय को नहीं सहन कर सकती। वह अपने पति तक को खरी-खोटी सुनाती है तथा अधिकारियों की खिंचाई करती है। यह ट्यूशन के विरोध में जन-आंदोलन खड़ा कर देती है।

प्रश्न 9. गणित के टीचर के खिलाफ अन्य बच्चों ने आवाज क्यों नहीं उठाई?

उत्तर- गणित का अध्यापक बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन पर आने के लिए कहता था। ऐसा न करने पर उनके अंक तक काट देता था। दूसरे बच्चों ने उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाई, क्योंकि उन्हें लगता था कि ऐसा करने पर अगली कक्षाओं में भी उनके साथ भेदभाव किया जाएगा। अध्यापक उनका भविष्य बिगाड़ देगा और उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस डर से अमित व उसकी माँ भी रजनी को विरोध करने से रोकना चाहते थे।

प्रश्न 10. रजनी संपादक से क्या सहायता माँगती है?

उत्तर- रजनी संपादक को ट्यूशन की समस्या बताती है तथा उसे अखबार में छापने का आग्रह करती है। वह उनसे कहती है कि 25 तारीख की पेरेंट्स मीटिंग की खबर भी प्रकाशित करें। इससे सब लोगों तक खबर पहुँच जाएगी। व्यक्तिगत तौर पर हम कम लोगों से संपर्क कर पाएँगे

पाठ - 7 जामुन का पेड़ : कृश्नचंदर

पाठ का सारांश

'जामुन का पेड़' कृश्नचंदर की प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कथा है। यह कहानी सरकारी कार्यालयों की लालफीताशाही, संवेदनहीनता और विभागीय टालमटोल पर तीखा व्यंग्य करती है।

एक दिन तेज़ आँधी के कारण सचिवालय के लॉन में लगा जामुन का पेड़ गिर जाता है और उसके नीचे एक आदमी दब जाता है। माली द्वारा सूचना देने पर अधिकारियों और कर्मचारियों की भीड़ तो जुट जाती है, लेकिन कोई भी तुरंत पेड़ हटाकर उस व्यक्ति को बचाने का निर्णय नहीं लेता। मामला एक विभाग से दूसरे विभाग में भेजा जाने लगता है। पहले फाइल व्यापार विभाग, फिर कृषि विभाग और उसके बाद हॉर्टिकल्चर विभाग पहुँचती है। हॉर्टिकल्चर विभाग 'पेड़ लगाओ' योजना का हवाला देकर पेड़ काटने से मना कर देता है। एक कर्मचारी पेड़ बचाने के लिए आदमी को ही काटने का सुझाव देता है। मेडिकल विभाग जाँच के बाद बताता है कि ऐसा करने पर आदमी मर जाएगा, इसलिए यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया जाता है। इसी बीच पता चलता है कि दबा हुआ व्यक्ति एक कवि है, जिसका नाम 'ओस' है। तब मामला सांस्कृतिक विभाग को भेज दिया जाता है। साहित्य अकादमी उसे सम्मानित करती है, पर उसकी जान बचाने की जिम्मेदारी लेने से इंकार कर देती है। बाद में फाइल वन विभाग पहुँचती है, लेकिन विदेश विभाग यह कहकर पेड़ काटने से रोक देता है कि यह पेड़ पिटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने लगाया था और इसे काटने से दोनों देशों के संबंध खराब हो सकते हैं। अंततः प्रधानमंत्री पेड़ काटने की अनुमति दे देते हैं, पर तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। दबा हुआ कवि मर चुका होता है। इस प्रकार कहानी यह दर्शाती है कि सरकारी लालफीताशाही, अनावश्यक नियमों और संवेदनहीन प्रशासन के कारण एक निर्दोष व्यक्ति की जान चली जाती है।

केंद्रीय संदेश: मानव जीवन सबसे मूल्यवान है। प्रशासनिक व्यवस्था का उद्देश्य जनता की सेवा होना चाहिए, न कि फाइलों और नियमों में उलझकर मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षा करना।

पठित गद्यांश-1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया, चपरासी ने क्लर्क को, क्लर्क ने हैड क्लर्क को। थोड़ी ही देर में सेक्रेटेरियंट में यह अफ़वाह फैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है। बस, फिर क्या था। लोगों का झुंड का झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली-गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। सेक्रेटेरियेट का लॉन भाँति-भाँति के कवियों से भर गया और दबे हुए आदमी के चारों ओर कवि सम्मेलन का-सा वातावरण उत्पन्न हो गया। सेक्रेटेरियेट के कई क्लर्क और अंडर-सेक्रेटरी तक जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हुए आदमी को अपनी कविताएँ और दोहे सुनाने लगे। कई क्लर्क उसको अपनी कविता पर-आलोचना करने को मजबूर करने लगे।जब यह पता चला कि दबा हुआ आदमी एक कवि है, तो सेक्रेटेरियेट की सब-कमेटी ने फैसला किया कि- चूँकि दबा हुआ आदमी एक कवि है, इसलिए इस फाइल का संबंध न

एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट से है, न हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट से, बल्कि सिर्फ कल्चरल डिपार्टमेंट से है। कल्चरल डिपार्टमेंट से अनुरोध किया गया कि जल्द से जल्द मामले का फैसला करके अभागे कवि को इस फलदार पेड़ से छुटकारा दिलाया जाए।

प्रश्न 1. सचिवालय (सेक्रेटेरियेट) के लॉन में "कवि सम्मेलन का-सा वातावरण उत्पन्न हो गया"– लेखक का इस कथन के माध्यम से किस सामाजिक मानसिकता पर व्यंग्य है?

(क) समाज के लोग कवियों और कलाकारों का अत्यधिक आदर-सत्कार करते हैं।

(ख) लोग किसी पीड़ित व्यक्ति की सहायता करने के बजाय अपनी आत्म-प्रशंसा और मनोरंजन को अधिक महत्व देते हैं।

(ग) सचिवालय के अधिकारी और कर्मचारी अपना प्रशासनिक कार्य बड़ी निष्ठा से करते थे।

(घ) सरकारी दफ्तरों में साहित्यिक गतिविधियों को सदैव बढ़ावा दिया जाता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए: [कथन और कारण]

कथन (A): सब-कमेटी ने दबे हुए आदमी के मामले की फाइल को तुरंत 'कल्चरल डिपार्टमेंट' (सांस्कृतिक विभाग) को सौंपने का निर्णय लिया।

कारण (R): सब-कमेटी का मानना था कि चूँकि दबा हुआ व्यक्ति एक कवि है, इसलिए उसका संबंध कृषि या उद्यान विभाग से नहीं बल्कि केवल सांस्कृतिक विभाग से हो सकता है।

(क) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की बिल्कुल सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 3. गद्यांश के संदर्भ में स्तंभ I (शब्द) का स्तंभ II (सटीक अर्थ) से सही मिलान करने वाले विकल्प का चयन कीजिए:

स्तंभ I (शब्द)	**स्तंभ II (गद्यांश के अनुसार सटीक अर्थ)**
(1) अफ़वाह	(X) गुण-दोषों का विवेचन या परख करना
(2) झुंड	(Y) कला, साहित्य और सभ्यता से संबंधित
(3) आलोचना	(Z) उड़ती हुई या बिना प्रामाणिकता की खबर
(4) कल्चरल	(W) लोगों का समूह या इकट्ठा होना

(क) 1-Z, 2-W, 3-X, 4-Y (ख) 1-X, 2-Y, 3-Z, 4-W

(ग) 1-Z, 2-X, 3-W, 4-Y (घ) 1-W, 2-Z, 3-Y, 4-X

प्रश्न 4. गद्यांश के अनुसार, जब यह पता चला कि दबा हुआ आदमी शायर है, तो सचिवालय के क्लर्कों और अन्य कवियों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

(I) लोगों का बहुत बड़ा समूह उस शायर को केवल देखने के लिए उमड़ पड़ा।

(II) कुछ शायर और क्लर्क अपनी कविताएँ व दोहे सुनाकर उस पर जबरन आलोचना करने का दबाव बनाने लगे।

(III) सभी ने मिलकर बिना किसी विभागीय अनुमति के तुरंत जामुन का पेड़ हटाकर उस आदमी को आज़ाद कर दिया।

(क) केवल कथन I और III ठीक हैं। (ख) केवल कथन II और III ठीक हैं।

(ग) केवल कथन I और II ठीक हैं। (घ) कथन I, II और III तीनों ठीक हैं।

प्रश्न 5. इस गद्यांश में दिखाई गई 'सब-कमेटी' की कार्यप्रणाली सरकारी तंत्र के किस अवगुण को उजागर करती है?

(क) अधिकारियों की त्वरित निर्णय लेने की क्षमता और संवेदनशीलता को।

(ख) नियमों की आड़ में जिम्मेदारी से बचने, काम टालने और संवेदनशून्यता की प्रवृत्ति को।

(ग) प्रशासनिक व्यवस्था में तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति के समावेश को।

(घ) आपातकालीन परिस्थितियों में मानव जीवन की रक्षा को सर्वोपरि मानने की सोच को।

उत्तरमाला- 1. ख 2. घ 3. क 4. ग 5. ख

पठित गद्यांश-2

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

"मगर मुझे इस पेड़ के नीचे से तो निकालो!'' दबे हुए आदमी ने कराहकर कहा। उसकी साँस बड़ी मुश्किल से चल रही थी और उसकी आँखों से मालूम होता था कि वह घोर पीड़ा और दुःख में पड़ा है।'यह हम नहीं कर सकते।' सेक्रेटरी ने कहा, 'और जो हम कर सकते थे, वह हमने कर दिया है, बल्कि हम तो यहाँ तक कर सकते हैं कि अगर तुम मर जाओ, तो तुम्हारी बीवी को वजीफा दे सकते हैं, अगर तुम दरख्वास्त दो, तो हम वह भी कर सकते हैं।''मैं अभी जीवित हूँ।" कवि रुक रुककर बोला, 'मुझे जिंदा रखो।' 'मुसीबत यह है, सरकारी साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी हाथ मलते हुए बोला, 'हमारा विभाग सिर्फ कल्चर से संबंधित है। पेड़ काटने का मामला कलम दवात से नहीं, आरी कुल्हाड़ी से संबंधित है। उसके लिए हमने फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया है और अर्जेन्ट लिखा है।

इस गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न -

प्रश्न 1. "अगर तुम मर जाओ, तो तुम्हारी बीवी को वज़ीफ़ा दे सकते हैं"- सेक्रेटरी के इस कथन से सरकारी तंत्र की किस क्रूर मानसिकता का पता चलता है?

(क) वह पीड़ित व्यक्ति की सहायता करने के लिए अत्यधिक दयालु और तत्पर है।

(ख) वह नियमों की आड़ में एक जीवित इंसान को बचाने की जिम्मेदारी से भाग रहा है।
(ग) वह सरकारी धन का सदुपयोग करने की नीति का पालन कर रहा है।
(घ) वह केवल साहित्य अकादमी के कड़े नियमों से पूरी तरह बँधा हुआ है।

प्रश्न 2. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

कथन (A): साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी दबे हुए आदमी को पेड़ के नीचे से निकालने में अपनी असमर्थता जताता है।

कारण (R): सेक्रेटरी का कार्यक्षेत्र केवल सांस्कृतिक गतिविधियों (कल्चर) तक सीमित है और पेड़ काटने का संबंध वन विभाग (फॉरेस्ट डिपार्टमेंट) से है।

(क) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की बिल्कुल सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 3. गद्यांश के संदर्भ में स्तंभ I (शब्द/पात्र) का स्तंभ II (गद्यांश के अनुसार सटीक अर्थ / विवरण) से सही मिलान करने वाले विकल्प का चयन कीजिए:

स्तंभ I (शब्द/पात्र)	स्तंभ II (गद्यांश के अनुसार सटीक अर्थ/विवरण)
(1) दबा हुआ आदमी	(X) अति आवश्यक पत्र लिखकर पेड़ काटने का अनुरोध करना
(2) कल्चरल डिपार्टमेंट	(Y) घोर पीड़ा में होना और रुक-रुककर बोलना
(3) फॉरेस्ट डिपार्टमेंट	(Z) केवल कलम-दवात से संबंध रखना, आरी-कुल्हाड़ी से नहीं
(4) दरख्वास्त	(W) लिखित रूप में की जाने वाली प्रार्थना या आवेदन

(क) 1-Y, 2-Z, 3-X, 4-W (ख) 1-X, 2-Y, 3-Z, 4-W
(ग) 1-Y, 2-X, 3-W, 4-Z (घ) 1-W, 2-Z, 3-Y, 4-X

प्रश्न 4. गद्यांश के अनुसार, पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी की शारीरिक और मानसिक स्थिति के विषय में कौन-से कथन सत्य हैं?

(I) वह अत्यंत घोर पीड़ा और दुःख का सामना कर रहा था।
(II) उसकी साँस बहुत ही कठिनाई और मुश्किल से चल रही थी।
(III) वह स्वयं को पूरी तरह सुरक्षित महसूस कर रहा था।
(क) केवल कथन I और III ठीक हैं। (ख) केवल कथन I और II ठीक हैं।

(ग) केवल कथन II और III ठीक हैं। (घ) कथन I, II और III तीनों ठीक हैं।

प्रश्न 5. गद्यांश में सेक्रेटरी द्वारा प्रयुक्त शब्द 'दरख्वास्त' और 'वज़ीफ़ा' का क्रमानुसार क्या सही अर्थ है?

(क) आदेश और पुरस्कार (ख) शिकायत और जुर्माना

(ग) प्रार्थना-पत्र और पेंशन (घ) सूचना और वेतन

उत्तरमाला- 1. ख 2.घ 3. क 4. ख 5. ग

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. रात की आँधी में गिरे जामुन के पेड़ के नीचे दबे आदमी को देखकर माली और क्लर्कों की सोच में क्या अंतर दिखाई देता है?

उत्तर- माली के मन में मानवीय करुणा थी, वह तुरंत पेड़ हटाकर दबे आदमी की जान बचाना चाहता था। इसके विपरीत, क्लर्क पूरी तरह संवेदनशून्य और स्वार्थी थे; उन्हें मरते हुए आदमी की कोई चिंता नहीं थी, वे केवल पेड़ के रसीले जामुन न मिल पाने का अफ़सोस मना रहे थे।

प्रश्न 2. पेड़ हटाने की फाइल को कृषि विभाग ने उद्यान-कृषि (हॉर्टिकल्चर) विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिया?

उत्तर- कृषि-विभाग ने तर्क दिया कि उनका विभाग केवल अनाज और पारंपरिक खेती-बाड़ी के मामलों का फैसला करता है। चूँकि जामुन का पेड़ एक फलदार पेड़ है, इसलिए यह मामला उनके कार्यक्षेत्र में नहीं आता; यह पूरी तरह से उद्यान-कृषि (हॉर्टिकल्चर) विभाग के अंतर्गत आता है।

प्रश्न 3. उद्यान-कृषि (हॉर्टिकल्चर) विभाग के सचिव का जवाब किस प्रकार अमानवीय और व्यंग्यपूर्ण था?

उत्तर- हॉर्टिकल्चर विभाग के सचिव ने जवाब दिया कि इस समय पूरे देश में 'पेड़ लगाओ' अभियान ज़ोर-शोर से चल रहा है। ऐसे में किसी फलदार जामुन के पेड़ को काटने की अनुमति कदापि नहीं दी जा सकती। यह जवाब दिखाता है कि अफ़सरों को अपनी सरकारी नीतियों की चिंता थी, मनुष्य की जान की नहीं।

प्रश्न 4. "बेचारा जामुन का पेड़! कितना फलदार था।" और "इसकी जामुनें कितनी रसीली होती थीं!" क्लर्कों के इस संवाद में निहित संवेदनशीलता और क्रूरता को रेखांकित कीजिए।

उत्तर- क्लर्कों का यह संवाद आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था की संवेदनशून्यता और क्रूरता को उजागर करता है। उनके सामने एक जीवित मनुष्य पेड़ के नीचे दबा हुआ अपनी आखिरी साँसें गिन रहा था, परंतु क्लर्कों को उसकी घोर पीड़ा की रत्ती भर भी चिंता नहीं थी। वे केवल अपने स्वाद और स्वार्थ के लिए रसीले जामुनों के नुकसान पर दुखी हो रहे थे, जो दिखाता है कि उनके भीतर मानवीय संवेदनाएँ मर चुकी हैं।

प्रश्न 5. कहानी में दो प्रसंग ऐसे कौन-से हैं, जहाँ लोग पेड़ के नीचे दबे आदमी को निकालने के लिए कटिबद्ध (तैयार) होते हैं, परंतु उनका संकल्प भंग हो जाता है?

उत्तर- कहानी में निम्नलिखित दो अवसरों पर लोगों का संकल्प प्रशासनिक नियमों के कारण भंग हुआ। **पहला प्रसंग:** पेड़ गिरने के तुरंत बाद सुबह माली के कहने पर वहाँ जमा भीड़ सामूहिक ज़ोर लगाकर पेड़ हटाने के लिए तैयार हो गई थी, परंतु सुपरिटेंडेंट ने उच्च अधिकारी से पूछने की बात कहकर उन्हें रोक दिया। **दूसरा प्रसंग:** दोपहर के भोजन के समय कुछ मनचले क्लर्क सरकारी फैसले का इंतज़ार किए बिना स्वयं पेड़ हटा देना चाहते थे, परंतु उसी समय सुपरिटेंडेंट फाइल लेकर आया और कृषि विभाग का मामला बताकर उन्हें रोक दिया।

प्रश्न 6. जब यह पता चला कि दबा हुआ व्यक्ति एक कवि है, तो सांस्कृतिक विभाग (कल्चरल डिपार्टमेंट) के सचिव ने उसके प्रति क्या संवेदनहीन व्यवहार किया? अथवा साहित्य अकादमी के सचिव ने दबे हुए शायर को क्या आश्वासन दिया और उसकी क्या मजबूरी थी?

उत्तर- सांस्कृतिक विभाग का सचिव दबे हुए कवि (उपनाम 'ओस') को अपनी साहित्य अकादमी का सदस्य चुनकर बधाई देता है और आश्वासन देता है कि मरने के बाद उसकी पत्नी को वज़ीफ़ा (पेंशन) दिला दिया जाएगा। परंतु उसकी अमानवीय मजबूरी यह थी कि उसका विभाग केवल संस्कृति से जुड़ा था, जबकि पेड़ काटने का काम आरी-कुल्हाड़ी का था जो वन विभाग के अधीन आता था; इसलिए उसने जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लिया।

प्रश्न 7. वन विभाग (फॉरेस्ट डिपार्टमेंट) के लोग जब पेड़ काटने आए, तो विदेश विभाग ने उस पर रोक क्यों लगा दी? इसके पीछे क्या कूटनीतिक कारण था?

उत्तर- विदेश विभाग ने पेड़ काटने पर इसलिए रोक लगाई क्योंकि इस जामुन के पेड़ को दस साल पहले पिटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने लगाया था। उनका तर्क था कि यदि यह पेड़ काटा गया, तो पिटोनिया सरकार से हमारे कूटनीतिक संबंध हमेशा के लिए बिगड़ जाएंगे और वहाँ से भारत को मिलने वाली भारी वित्तीय सहायता बंद हो जाएगी। उन्होंने दो देशों के संबंधों के नाम पर एक आम आदमी के जीवन की बलि चढ़ाना उचित समझा।

प्रश्न 8. "जामुन का पेड़" कहानी में निहित मुख्य व्यंग्य क्या है? कहानी में बार-बार फाइल का ज़िक्र करके व्यवस्था की किस अविवेकशीलता को दिखाया गया है?

उत्तर- इस कहानी का मुख्य व्यंग्य सरकारी कार्यालयों की लालफीताशाही, संवेदनशून्यता और निरर्थक पदानुक्रम पर है। पूरी कहानी में एक जीवित मनुष्य पेड़ के नीचे दबा तड़प रहा है, लेकिन अंधी प्रशासनिक व्यवस्था उसे बाहर निकालने के बजाय फाइल को एक विभाग से दूसरे विभाग घुमाती रहती है। अंत में जब पेड़ काटने का आदेश आता है, तब तक कवि मर चुका होता है। 'जीवन की फाइल पूरी होना' दिखाता है कि व्यवस्था मनुष्य को न्याय तब देती है जब उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 9. यह कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है कि इस कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी एक गहन अंतर्धारा प्रवाहित हो रही है?

उत्तर- यह कहना बिल्कुल सही है क्योंकि कहानी में ऊपरी तौर पर अफ़सरों की मूर्खतापूर्ण बातें हास्य पैदा करती हैं, लेकिन इसके पीछे एक मरते हुए इंसान की लाचारी पर गहरी करुणा छिपी है। क्लर्कों का मीठे जामुन याद करना, डॉक्टर का आदमी काटने की सलाह देना और विदेश विभाग का कूटनीति के नाम पर इंसान की जान दांव पर लगाना व्यवस्था की चरम क्रूरता को दर्शाता है, जो पाठक को भीतर तक दुखी कर देता है।

प्रश्न 10. "जामुन का पेड़" कहानी में घटनाओं को अनुपात से ज़्यादा फैला-फुलाकर (अतिशयोक्तिपूर्ण) दिखाया गया है। क्या ऐसी रचनाओं के मूल्यांकन की कसौटी 'विश्वसनीयता' हो सकती है ?

उत्तर- ऐसी हास्य-व्यंग्य रचनाओं के मूल्यांकन की कसौटी 'विश्वसनीयता' बिल्कुल नहीं हो सकती। व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य यथार्थ की हूबहू नकल करना नहीं, बल्कि समाज के कड़वे सच को सामने लाना होता है। भले ही कहानी की घटनाएँ काल्पनिक या अतिशयोक्तिपूर्ण लगें, लेकिन वे सरकारी दफ़्तरों में होने वाली वास्तविक देरी, टालमटोल की प्रवृत्ति और मानवीय संवेदनाओं के पूर्ण अभाव को बिल्कुल सटीक रूप से प्रमाणित करती हैं।

पाठ - 8 भारत माता - जवाहरलाल नेहरू

पाठ का सारांश

"भारत माता" जवाहरलाल नेहरू की प्रसिद्ध पुस्तक हिंदुस्तान की कहानी का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। इस पाठ में भारत की विविधता में निहित एकता तथा राष्ट्र की वास्तविक पहचान को स्पष्ट किया गया है। नेहरू जी देश के विभिन्न भागों में आयोजित सभाओं में किसानों और ग्रामीणों से भारत के बारे में चर्चा करते थे। उन्होंने खैबर दर्रे से कन्याकुमारी तक यात्रा करके देखा कि पूरे देश के किसानों की समस्याएँ लगभग समान थीं। वे गरीबी, कर्ज, जमींदारों और सूदखोरों के शोषण तथा सरकारी अत्याचारों से पीड़ित थे। नेहरू जी किसानों की सोच को व्यापक बनाना चाहते थे। वे उन्हें बताते थे कि भारत विश्व का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और अन्य देशों की घटनाएँ भी हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। ग्रामीण लोग रामायण, महाभारत, तीर्थयात्राओं और युद्ध के अनुभवों के कारण इन बातों को आसानी से समझ लेते थे।जब लोग "भारत माता की जय" का नारा लगाते थे, तब नेहरू जी उनसे इसका अर्थ पूछते थे। वे समझाते थे कि केवल धरती, नदियाँ, पर्वत और खेत ही भारत माता नहीं हैं, बल्कि भारत के करोड़ों नागरिक ही वास्तविक भारत माता हैं। इस प्रकार पाठ राष्ट्रीय एकता, लोकतांत्रिक चेतना, मानव-सम्मान और जन-केंद्रित राष्ट्रप्रेम का संदेश देता है।

पठित गद्यांश-1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

अकसर जब मैं एक जलसे में दूसरे जलसे में जाता होता, और इस तरह चक्कर काटता रहता होता था, तो इन जलसों में मैं अपने सुनने वालों से अपने इस हिंदुस्तान या भारत की चर्चा करता। भारत एक संस्कृत शब्द है और इस जाति के परंपरागत संस्थापक के नाम से निकला हुआ है। मैं शहरों में ऐसा बहुत कम करता, क्योंकि वहाँ के सुनने वाले कुछ ज्यादा सयाने थे और उन्हें दूसरे ही किस्म के गिज़ा की जरूरत थी। लेकिन किसानों से जिनका नजरिया महदूद था, मैं इस बड़े देश की चर्चा करता, जिसकी आज़ादी के लिए हम लोग कोशिश कर रहे थे और बताता कि किस तरह देश का एक हिस्सा दूसरे से जुदा होते हुए भी हिंदुस्तान एक था। मैं उन मसलों का जिक्र करता, उत्तर से लेकर दक्खिन तक और पूरब से लेकर पच्छिम तक किसानों के लिए यक-साँ थे, और स्वराज्य का भी जिक्र करता, जो थोड़े लोगों के लिए नहीं बल्कि सभी के फायदे के लिए हो सकता था।'

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. नेहरू जी के अनुसार "शहरों के सुनने वाले कुछ ज़्यादा सयाने थे और उन्हें दूसरे ही किस्म के गिज़ा की जरूरत थी।" इस कथन का अंतर्निहित भाव क्या है?

(क) शहरों के लोग शारीरिक रूप से अधिक मजबूत थे और उन्हें अधिक पौष्टिक भोजन की आवश्यकता थी।

(ख) शहरों के लोग वैचारिक रूप से अधिक चालाक और राजनीति से विमुख थे, इसलिए उन्हें भाषण पसंद नहीं थे।

(ग) शहरों के प्रबुद्ध वर्ग की बौद्धिक क्षमता, आवश्यकताएँ और समस्याएँ ग्रामीणों से भिन्न व अधिक जटिल थीं।

(घ) शहरों के लोग केवल अपनी स्थानीय समस्याओं के विषय में ही सुनना पसंद करते थे।

प्रश्न 2. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए: [कथन और कारण]

कथन (A): नेहरू जी किसानों के बीच पूरे हिंदुस्तान की एकता और उसके सुदूर हिस्सों की चर्चा खुलकर करते थे।

कारण (R): ग्रामीण किसानों का दृष्टिकोण अपने गाँव या क्षेत्र तक सीमित (महदूद) था, इसलिए उन्हें व्यापक राष्ट्रीय चेतना से जोड़ना आवश्यक था।

(क) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की बिल्कुल सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 3. गद्यांश के संदर्भ में स्तंभ I (शब्द) का स्तंभ II (सटीक अर्थ) से सही मिलान करने वाले विकल्प का चयन कीजिए: [मिलान आधारित प्रश्न]

स्तंभ I (शब्द)	**स्तंभ II (गद्यांश के अनुसार सटीक अर्थ)**
(1) सयाने	(X) सीमित या संकुचित
(2) गिज़ा	(Y) एक समान या बराबर
(3) महदूद	(Z) समझदार या चतुर
(4) यक-साँ	(W) बौद्धिक खुराक या मानसिक सामग्री

(क) 1-X, 2-Y, 3-Z, 4-W (ख) 1-Z, 2-W, 3-X, 4-Y

(ग) 1-Z, 2-X, 3-W, 4-Y (घ) 1-W, 2-Z, 3-Y, 4-X

प्रश्न 4. लेखक के अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 'स्वराज्य' की वास्तविक संकल्पना क्या थी?

(I) स्वराज्य का लाभ समाज के केवल कुछ गिने-चुने प्रबुद्ध और सयाने लोगों तक पहुँचना चाहिए।

(II) स्वराज्य ऐसा होना चाहिए जो देश के सभी वर्गों और विशेषकर किसानों के हित में हो।

(III) स्वराज्य के माध्यम से संपूर्ण देश को राजनीतिक और वैचारिक रूप से एक सूत्र में पिरोना था।

(क) केवल कथन II और III ठीक हैं। (ख) केवल कथन I और III ठीक हैं।

(ग) केवल कथन I और II ठीक हैं। (घ) कथन I, II और III तीनों ठीक हैं।

प्रश्न 5. "भारत" शब्द की उत्पत्ति व उसके ऐतिहासिक संदर्भ से क्या सिद्ध होता है?

(क) यह एक आधुनिक काल का शब्द है जिसे विदेशी शासकों ने गढ़ा था।

(ख) संस्कृत शब्द है जो इस जाति के परंपरागत संस्थापक (राजा भरत) के नाम से संबंधित है।

(ग) यह केवल भारत के उत्तरी हिस्से के निवासियों की सांस्कृतिक पहचान को प्रकट करता है।

(घ) यह शब्द केवल शहरी क्षेत्रों के सयाने लोगों के बीच ही प्रचलित था।

उत्तर- **1.** ग **2.** घ **3.** ख **4.** क **5.** ख

पठित गद्यांश-2

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

कभी ऐसा भी होता कि जब मैं किसी जलसे में पहुँचता, तो मेरा स्वागत 'भारत माता की जय!' इस नारे से जोर के साथ किया जाता। मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता कि इस नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते हैं। मेरे सवाल से उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और कुछ जवाब न बन पड़ने पर वे एक-दूसरे की तरफ या मेरी तरफ देखने लग जाते। मैं सवाल करता ही रहता। आखिर एक हट्टे-कट्टे जाट ने, जो अनगिनत पीढ़ियों से किसानी करता आया था, जवाब दिया कि भारत माता से उनका मतलब धरती से है। कौन-सी धरती? खास उनके गाँव की धरती या जिले की या सूबे की या सारे हिंदुस्तान की धरती से उनका मतलब है। इस तरह सवाल-जवाब चलते रहते, यहाँ तक कि वे ऊबकर मुझसे कहने लगते कि मैं ही बताऊँ। मैं इसकी कोशिश करता और बताता कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है, जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। हिंदुस्तान के नदी और पहाड़, जंगल और खेत, जो हमें अन्न देते हैं, ये सभी हमें अजीज हैं, लेकिन आखिरकार जिनकी गिनती है, वे हैं हिंदुस्तान के लोग, उनके और मेरे जैसे लोग, जो इस सारे देश में फैले हुए हैं। भारत माता दरअसल यही करोड़ों लोग हैं, और 'भारत माता की जय!' से मतलब हुआ इन लोगों की जय का। मैं उनसे कहता कि तुम इस भारत माता के अंश हो, एक तरह से तुम ही भारत माता हो, और जैसे जैसे ये विचार उनके मन में बैठते, उनकी आँखों में चमक आ जाती, इस तरह, मानो उन्होंने कोई बड़ी खोज कर ली हो।

प्रश्न 1. नेहरू जी द्वारा 'भारत माता की जय' का अर्थ पूछने पर ग्रामीण किसान प्रारंभ में निरुत्तर क्यों हो जाते थे?

(क) क्योंकि वे नेहरू जी के राष्ट्रीय विचारों और भाषणों के घोर विरोधी थे।

(ख) क्योंकि वे इस नारे को केवल एक पारंपरिक प्रथा के रूप में लगाते थे और इसके वास्तविक अर्थ से अनभिज्ञ थे।

(ग) क्योंकि वे केवल अपने गाँव की सीमा को ही स्वतंत्र देश मानते थे।

(घ) क्योंकि वे शहरी लोगों के सामने अपनी बात रखने में संकोच करते थे।

प्रश्न 2. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए: [कथन और कारण]

कथन (A): नेहरू जी ने देश के नदी, पहाड़, जंगलों और खेतों को प्रिय मानते हुए भी 'हिंदुस्तान के लोगों' को सर्वोपरि माना।

कारण (R): नेहरू जी का दृष्टिकोण मानवतावादी था, जिसके अनुसार किसी भी देश की वास्तविक पहचान और उसकी आत्मा वहाँ के नागरिक ही होते हैं।

(क) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की बिल्कुल सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 3. गद्यांश के संदर्भ में स्तंभ I (शब्द) का स्तंभ II (सटीक अर्थ) से सही मिलान करने वाले विकल्प का चयन कीजिए:

स्तंभ I (शब्द)	**स्तंभ II (गद्यांश के अनुसार सटीक अर्थ)**
(1) कुतूहल	(X) प्रिय या प्यारा
(2) ताज्जुब	(Y) वास्तव में
(3) अजीज	(Z) उत्सुकता
(4) दरअसल	(W) आश्चर्य

(क) 1-X, 2-Y, 3-Z, 4-W (ख) 1-Z, 2-W, 3-X, 4-Y

(ग) 1-Z, 2-X, 3-W, 4-Y (घ) 1-W, 2-Z, 3-Y, 4-X

प्रश्न 4. जब नेहरू जी ने किसानों को यह समझाया कि "तुम ही भारत माता हो", तब उनकी मानसिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा?

(I) किसानों के मन का असमंजस दूर हुआ और उनकी आँखों में एक अनोखी चमक आ गई।

(II) उन्हें अपनी वास्तविक शक्ति और राष्ट्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का अहसास हुआ।

(III) वे नेहरू जी के इस नए विचार को सुनकर अत्यधिक ऊब गए और वहाँ से चले गए।

(क) केवल कथन I और II ठीक हैं। (ख) केवल कथन I और III ठीक हैं।

(ग) केवल कथन II और III ठीक हैं। (घ) कथन I, II और III तीनों ठीक हैं।

प्रश्न 5. "भारत माता की जय!" इस नारे का वास्तविक और अंतिम संदेश क्या है ?

(क) देश के केवल विशेष और संपन्न वर्गों की उन्नति होना।

(ख) भारत की भौगोलिक सीमाओं और नक्शे का विस्तार करना।

(ग) इस देश में रहने वाले करोड़ों-करोड़ सामान्य नागरिकों की विजय और कल्याण होना।

(घ) केवल पुराने महाकाव्यों में वर्णित धरती की पूजा करना।

उत्तरमाला- 1. ख 2. घ 3. ख 4. क 5. ग

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. नेहरू जी देश के विभिन्न हिस्सों में आयोजित जलसों में जाकर क्या करते थे और भारत की चर्चा किससे करते थे? अथवा नेहरू जी देश के किसी कोने में आयोजित समारोह में जाते थे तो उनका क्या मुख्य उद्देश्य रहता था? संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर- नेहरू जी जब देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों (समारोहों) में भाग लेने के लिए यात्राएँ करते थे, तो वे वहाँ उपस्थित जनसामान्य और विशेषकर ग्रामीण किसानों से 'हिंदुस्तान' या 'भारत' की चर्चा अवश्य करते थे। उनका मुख्य उद्देश्य किसानों के सीमित दृष्टिकोण को व्यापक बनाना, उन्हें 'स्वराज' के प्रति जागरूक करना और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए संगठित करना था।

प्रश्न 2. नेहरू जी ने शहरों की तुलना में गाँवों में भारत की चर्चा करना अधिक आवश्यक क्यों समझा? अथवा नेहरू जी अपने भाषणों में शहरों और गाँवों में क्या अंतर रखते थे और क्यों?

उत्तर- नेहरू जी शहरों में भारत की चर्चा बहुत कम करते थे क्योंकि शहरों के सुनने वाले लोग अधिक शिक्षित, जागरूक और 'सयाने' (समझदार) थे, जिन्हें दूसरी तरह की 'गिज़ा' (बौद्धिक खुराक) की आवश्यकता थी। इसके विपरीत, गाँवों के किसानों का दृष्टिकोण 'महदूद' (सीमित) था, जो केवल अपने गाँव या सूबे तक सोचते थे। इसलिए देश की अखंडता समझाने के लिए नेहरू जी गाँवों में ही भारत की चर्चा अधिक करते थे।

प्रश्न 3. 'भारत' शब्द की व्युत्पत्ति और उसके ऐतिहासिक संदर्भ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'भारत' एक मूल संस्कृत शब्द है। इस शब्द की व्युत्पत्ति इस जाति के परंपरागत संस्थापक (ऋग्वेद काल के राजा भरत) के नाम से हुई है। नेहरू जी ग्रामीणों को यह बात इसलिए बताते थे ताकि वे अपने देश के गौरवशाली इतिहास और उसकी प्राचीन एकता को समझ सकें।

प्रश्न 4. आज़ादी से पूर्व भारतीय किसानों को किन-किन मुख्य समस्याओं का सामना करना पड़ता था? अथवा नेहरू जी को उत्तर-पश्चिम से लेकर कन्याकुमारी तक की यात्रा में किसानों के बारे में क्या पता चला और उनकी परेशानियाँ आपस में कैसे गुँथी हुई थीं?

उत्तर- नेहरू जी को उत्तर-पश्चिम में खैबर दर्रे से लेकर धुर दक्षिण में कन्याकुमारी तक की यात्रा में यह पता चला कि पूरे देश के किसानों की समस्याएँ बिल्कुल एक जैसी ('यक-साँ') थीं। **आर्थिक शोषण:** घोर गरीबी, भारी कर्ज का बोझ और पूँजीपतियों, ज़मींदारों व महाजनों के कड़े शिकंजे में फँसकर भारी सूद (ब्याज) चुकाना। **प्रशासनिक जुल्म:** अंग्रेज सरकार द्वारा मनमाना व कड़ा लगान वसूलना और विरोध करने पर पुलिस के बर्बर अत्याचारों को सहना। **औपनिवेशिक ढांचा:** ये सभी समस्याएँ उस

विदेशी प्रशासनिक 'ढड्ढे' (बोझ/ढांचे) के साथ जुड़ी हुई थीं जिसे ब्रिटिश सरकार ने हम पर लाद रखा था, जिससे छुटकारा पाना ही स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य लक्ष्य था।

प्रश्न 5. दुनिया (विदेशों) के बारे में किसानों को बताना नेहरू जी के लिए क्यों आसान था? इसके क्या कारण थे? अथवा

नेहरू जी के पास दुनिया भर के किसानों की जानकारी कैसे थी और ग्रामीण इसे आसानी से कैसे समझ जाते थे?

उत्तर- नेहरू जी ने भारत के इतिहास, पुराण और महाकाव्य पढ़े थे और वे स्वयं विभिन्न देशों की यात्राएँ कर चुके थे। ग्रामीणों को वैश्विक संदर्भों (जैसे सोवियत यूनियन के बदलाव और अमेरिका की तरक्की) के बारे में समझाना उनके लिए निम्नलिखित कारणों से आसान था:

1. **सांस्कृतिक पृष्ठभूमि:** किसान हमारे पुराने महाकाव्यों (रामायण, महाभारत) और पुराणों की कथा-कहानियों से पहले से परिचित थे, जिसने उन्हें देश की एक मुकम्मल (पूर्ण) कल्पना दे दी थी।
2. **देश भ्रमण व तीर्थयात्राएँ:** जलसों में हमेशा कुछ ऐसे लोग मिल जाते थे जिन्होंने देश के चारों कोनों में स्थित बड़े-बड़े तीर्थों की यात्राएँ कर रखी थीं।
3. **सैन्य और व्यावसायिक अनुभव:** कुछ पुराने सिपाही थे जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के सिलसिले में विदेशों में काम किया था और कुछ लोग विदेशों में नौकरियाँ करते थे। इसके अतिरिक्त, 1930 की वैश्विक आर्थिक मंदी के असर के कारण भी वे बाहरी दुनिया के हालातों को समझ पाते थे।

प्रश्न 6. नेहरू जी अपनी बातचीत में किन-किन देशों में होने वाले कशमकशों के बारे में किसानों को बताते थे और क्यों?

उत्तर- नेहरू जी अपने भाषणों में किसानों को चीन, स्पेन, अबीसिनिया, मध्य यूरोप, मिस्र और पश्चिमी एशिया में होने वाले संघर्षों और परिवर्तनों के बारे में बताते थे। वे उन्हें रूस (सोवियत यूनियन) में होने वाले अचरज भरे बदलावों और अमेरिका की तरक्की का हाल भी सुनाते थे। वे ऐसा इसलिए करते थे ताकि अशिक्षित किसानों का दृष्टिकोण व्यापक हो सके और वे समझ सकें कि भारत की आज़ादी की लड़ाई कोई अलग थलग घटना नहीं है, बल्कि यह पूरे विश्व में साम्राज्यवाद के खिलाफ चल रहे संघर्ष का एक हिस्सा है।

प्रश्न 7. 'भारत माता' पाठ का मूल प्रतिपाद्य (संदेश) स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'भारत माता' लेख नेहरू जी की पुस्तक 'हिंदुस्तान की कहानी' का पाँचवाँ अध्याय है। इसका मुख्य प्रतिपाद्य यह सिद्ध करना है कि भौगोलिक रूप से विशाल और अनेक विविधताओं में बँटा होने के बाद भी हिंदुस्तान राजनीतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से बुनियादी तौर पर एक अखंड देश है। इसके सभी हिस्सों की नियति और समस्याएँ एक ही तरीके से बनती-बिगड़ती हैं। इसके साथ ही यह पाठ राष्ट्रवाद की एक मानवतावादी परिभाषा प्रस्तुत करता है कि देश की असली पहचान उसकी सीमाओं या नक्शों से नहीं, बल्कि वहाँ के नागरिकों से होती है।

प्रश्न 8. नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे? किसान सामान्यतः भारत माता का क्या अर्थ लेते थे और इसके प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी? अथवा किसानों के अनुसार "भारत माता" कौन है? भारत माता के बारे में नेहरू जी उन्हें क्या समझाते थे और इस पर नेहरू जी के मानवतावादी दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए।

उत्तर- नेहरू जी किसानों से बार-बार पूछते थे कि "भारत माता" कौन है। किसान सामान्यतः भारत माता का अर्थ केवल धरती या मिट्टी से लेते थे। नेहरू जी ने समझाया कि नदियाँ, पर्वत, खेत आदि भारत माता हैं, पर सबसे बढ़कर यहाँ रहने वाले करोड़ों लोग ही भारत माता हैं। उनका दृष्टिकोण मानवतावादी और जन-केंद्रित था।

प्रश्न 9. आज़ाद भारत के लिए नेहरू जी के क्या-क्या सपने थे? वर्तमान समय के संदर्भ में क्या वे सपने साकार हुए हैं? चर्चा कीजिए।

उत्तर- नेहरू जी आज़ाद भारत को गरीबी, भुखमरी और अशिक्षा से मुक्त, आत्मनिर्भर तथा प्रगतिशील राष्ट्र बनाना चाहते थे। वे किसानों के शोषण का अंत, औद्योगिक एवं वैज्ञानिक विकास, रोजगार सृजन और लोकतांत्रिक व्यवस्था का सपना देखते थे। वर्तमान में इन सपनों की दिशा में काफी प्रगति हुई है, परंतु गरीबी, बेरोज़गारी और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं।

वितान भाग-1 (पूरक पुस्तक)

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर लेखक कुमार गंधर्व

पाठ का सारांश

"भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर" में लेखक कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर के गायन की विशिष्टताओं और भारतीय संगीत जगत में उनके योगदान का वर्णन किया है। लेखक बताते हैं कि बीमारी के दौरान रेडियो पर पहली बार लता मंगेशकर का गीत सुनकर वे अत्यंत प्रभावित हुए। उनकी मधुर, कोमल और निर्मल आवाज़ ने लेखक के मन को गहराई से स्पर्श किया। लेखक को लता के स्वर में उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर की गायकी की झलक दिखाई दी।लेखक के अनुसार भारतीय गायिकाओं में लता मंगेशकर का कोई मुकाबला नहीं है। उन्होंने चित्रपट (फिल्म) संगीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं तथा सामान्य लोगों में संगीत के प्रति रुचि विकसित की। उनके गीतों ने लोगों के स्वरज्ञान, लयबोध और संगीत की समझ को समृद्ध किया।लेखक लता के गायन की प्रमुख विशेषताओं–**गानपन, स्वरों की निर्मलता, कोमलता, मुग्धता, नादमय उच्चारण तथा भावपूर्ण प्रस्तुति**– का उल्लेख करते हैं। वे मानते हैं कि लता का प्रत्येक गीत एक संपूर्ण कलाकृति है जिसमें स्वर, लय और शब्दों का सुंदर समन्वय मिलता है।कुमार गंधर्व का मत है कि शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत की तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि दोनों की प्रकृति अलग है। फिर भी चित्रपट संगीत को लोकप्रिय बनाने तथा संगीत के प्रति जनसामान्य की अभिरुचि विकसित करने में लता मंगेशकर का योगदान अतुलनीय है। अंत में लेखक लता मंगेशकर को चित्रपट संगीत की **"अनभिषिक्त सम्राज्ञी"** कहते हैं और उन्हें शताब्दियों में जन्म लेने वाली विलक्षण प्रतिभा मानते हैं।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. लेखक पहली बार लता मंगेशकर के गायन से कैसे प्रभावित हुए?

उत्तर- लेखक कुमार गंधर्व बीमारी के दौरान रेडियो सुन रहे थे। तभी उन्होंने एक अत्यंत मधुर और अद्वितीय स्वर सुना, जिसने उनके हृदय को गहराई से प्रभावित किया। गीत समाप्त होने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि वह स्वर लता मंगेशकर का था। लेखक को उनकी आवाज़ में उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर की गायकी की झलक दिखाई दी। उस दिन से लेखक लता के प्रशंसक बन गए और उनके गायन की विशिष्टता को पहचानने लगे।

प्रश्न 2. लेखक के अनुसार लता मंगेशकर ने भारतीय संगीत को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर- लेखक के अनुसार लता मंगेशकर ने चित्रपट संगीत को अत्यधिक लोकप्रिय बनाया। उनके गीतों के माध्यम से सामान्य लोगों में संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न हुई। लोगों का स्वरज्ञान, लयबोध और संगीत की समझ विकसित हुई। नई पीढ़ी ने सुर में गाना सीखा तथा संगीत के प्रति उनकी अभिरुचि परिष्कृत हुई। इस प्रकार लता ने भारतीय समाज के संगीत संस्कारों को समृद्ध बनाया।

प्रश्न 3. लेखक ने लता मंगेशकर को 'अनभिषिक्त सम्राज्ञी' क्यों कहा है?

उत्तर- लेखक ने लता मंगेशकर को चित्रपट संगीत की 'अनभिषिक्त सम्राज्ञी' इसलिए कहा है क्योंकि उन्होंने दशकों तक श्रोताओं के हृदय पर राज किया। उनकी लोकप्रियता केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि विदेशों तक फैली। अनेक गायकों और गायिकाओं के बीच भी उनका स्थान सर्वोच्च बना रहा। उनकी कला, लोकप्रियता और दीर्घकालिक प्रभाव उन्हें चित्रपट संगीत का अद्वितीय व्यक्तित्व बनाते हैं।

प्रश्न 4. 'गानपन' से लेखक का क्या आशय है? लता के गायन में यह कैसे दिखाई देता है?

उत्तर- 'गानपन' से आशय उस मधुरता और भावात्मक प्रभाव से है जो श्रोता को आनंदित और भावविभोर कर दे। लेखक के अनुसार संगीत का वास्तविक मूल्य इसी गुण में निहित है। लता मंगेशकर के प्रत्येक गीत में गानपन पूर्ण रूप से उपस्थित है। उनके गीतों में मधुर स्वर, भावपूर्ण प्रस्तुति और आकर्षक लय का ऐसा समन्वय होता है कि श्रोता सहज ही उनसे जुड़ जाता है।

प्रश्न 5. शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत में क्या अंतर है?

उत्तर- शास्त्रीय संगीत गंभीरता, नियमबद्धता और परंपरागत संरचना पर आधारित होता है। इसमें राग, ताल और लय का विस्तृत तथा परिष्कृत रूप मिलता है। दूसरी ओर चित्रपट संगीत में सरलता, चपलता और लोकप्रियता को अधिक महत्व दिया जाता है। चित्रपट संगीत आम जनता तक आसानी से पहुँचता है। लेखक का मानना है कि दोनों का उद्देश्य श्रोताओं को आनंद देना है, इसलिए किसी एक को दूसरे से श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न 6. यदि आप एक संगीत शिक्षक हों, तो विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि विकसित करने के लिए लता मंगेशकर के जीवन और गायन से क्या प्रेरणा देंगे?

उत्तर- मैं विद्यार्थियों को बताऊँगा कि सफलता केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास, अनुशासन और समर्पण से मिलती है। लता मंगेशकर ने अपने मधुर स्वर और अथक परिश्रम से विश्वभर में सम्मान प्राप्त किया। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर विद्यार्थी संगीत के प्रति लगन, धैर्य और उत्कृष्टता की भावना विकसित कर सकते हैं।

प्रश्न 7. आज के डिजिटल युग में लता मंगेशकर जैसी कलाकारों का योगदान नई पीढ़ी के लिए किस प्रकार उपयोगी है?

उत्तर- डिजिटल युग में युवा विभिन्न प्रकार का संगीत सुनते हैं। लता मंगेशकर के गीत उन्हें शुद्ध उच्चारण, सुरों की शुद्धता, भावपूर्ण प्रस्तुति और संगीत की गरिमा का परिचय कराते हैं। उनके गीत भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और संगीत परंपरा से जोड़ते हैं। नई पीढ़ी उनके गायन से कला के प्रति समर्पण और उत्कृष्टता की प्रेरणा प्राप्त कर सकती है।

प्रश्न 8. लेखक ने पाठ में गानपन का उल्लेख किया है। पाठ के संदर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएँ कि आपके विचार में इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?

उत्तर- 'गानपन' का शाब्दिक अर्थ है-वह गायकी जो एक आम इनसान को भी भाव-विभोर कर दे। वास्तव में, यह कला लता जी में है। गीत को गाने में मन की गहराइयों से भाव पिरोए जाएँ, यही

उनका प्रयास रहता है। इस प्रयास में उन्हें काफ़ी हद तक सफलता भी मिली है। जिस प्रकार एक मनुष्य के लिए 'मनुष्यता' का होना जरूरी है, उसी प्रकार संगीत के लिए गानपन होना बहुत ज़रूरी है। लता जी की लोकप्रियता का मुख्य कारण यही गानपन है। यह गुण अपनी गायकी में लाने के लिए गायक को भरपूर रियाज़ करना चाहिए। साथ ही गीत के बोल, स्वरों के साथ-साथ भावों में भी पिरोए जाने चाहिए। गानों में गानपन के लिए स्वरों का उचित ज्ञान के साथ-साथ स्पष्टता व निर्मलता भी होनी चाहिए। स्वरों का जितना स्पष्ट व निर्मल उच्चारण होगा, संगीत उतना ही मधुर होगा। रसों के अनुसार उनकी लयात्मकता भी होनी चाहिए। स्वर, लय, ताल, उच्चारण आदि का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर उनको अपने संगीत में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न 9. लेखक ने लता की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है? आपको लता की गायकी में कौन-सी विशेषताएँ नज़र आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर- लेखक ने लता की गायकी की निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर किया है:-

1. **सुरीलापन -** लता के गायन में सुरीलापन है। उनके स्वर में अद्भुत मिठास, तन्मयता, मस्ती, लोच आदि हैं। उनका उच्चारण मधुर गूँज से परिपूर्ण रहता है।
2. **निर्मल स्वर -** लता के स्वरों में निर्मलता है। लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है, वही उसके गायन की निर्मलता में झलकता है।
3. **कोमलता -** लता के स्वरों में कोमलता व मुग्धता है। इसके विपरीत नूरजहाँ के गायन में मादक उत्तान दिखता था।
4. **नादमय उच्चार -** यह लता के गायन की अन्य विशेषता है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। ऐसा लगता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं। लता के गानों में यह बात सहज व स्वाभाविक है।
5. **शास्त्रीय शुद्धता -** लता के गीतों में शास्त्रीय शुद्धता है। उन्हें शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी है। उनके गीतों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होने के साथ-साथ रंजकता भी पाई जाती है।

प्रश्न 10. लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं। इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- लेखक का यह कथन पूर्णतया सत्य नहीं प्रतीत होता। यह संभव है कि किसी विशेष चित्रपट में लता ने करुण रस के गीतों के साथ न्याय नहीं किया हो, किंतु सभी चित्रपटों पर यह बात लागू नहीं होती। लता ने कई चित्रपटों में अपनी आवाज़ दी है तथा उनमें करुण रस के गीत बड़ी मार्मिकता व रसोत्कटता के साथ गाए हैं। उनकी वाणी में एक स्वाभाविक करुणा विद्यमान है। उनके स्वरों में करुणा छलकती-सी प्रतीत होती है। फ़िल्म 'रुदाली' में उनका 'दिल-हुँ-हुँ करे.....' गीत विरही जनों के हृदयों को उत्कंठित ही नहीं करता अपितु अपनी मार्मिकता से हृदय को बींध-सा देता है। इसी प्रकार अन्य। कई चित्रपटों पर भी यह बात लागू होती है। अत: यह नहीं कहा जा सकता है कि लता जी

केवल श्रृंगार के गीत ही भली प्रकार गा सकती हैं। वे सभी गीतों को समान रसमयता के साथ गा सकती हैं।

प्रश्न 11. संगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण है। वहाँ अब तक अलक्षित असंशोधित और अदृष्टिपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्रांत है, तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं-इस कथन को वर्तमान फ़िल्मी संगीत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भारतीय संगीत शास्त्र बहुत प्राचीन है। इतनी प्राचीन परंपरा होने के कारण उसका क्षेत्र भी बहुत विशाल हैं। आज भी संगीत में नए-नए प्रयोग होते देखे जा सकते हैं। शास्त्रीय व लोकसंगीत की परंपरा आज भी निरंतर चल रही है, किंतु उनमें नाना प्रकार के प्रयोग करके संगीत को नया आयाम आज की फ़िल्मों में दिया जा रहा है। फ़िल्मों में गीत-संगीतकार कुछ-न-कुछ नया करने का प्रयास पहले से ही करते आए हैं। आजकल के फ़िल्मी संगीत पर भी यह बात लागू होती है। कभी इसमें पॉप संगीत का मिश्रण किया जाता है तो कभी सूफी संगीत का तथा कभी लोक संगीत का। लोक संगीतों में भी अनेकानेक प्रांतों के संगीत को आधार बनाकर नए-नए गीतों की रचना कर उन पर संगीत दिया जाता है। इसका फ़िल्मकार लोग बहुत जोर-शोर से प्रचार भी करते हैं। इस प्रकार वर्तमान फ़िल्मी संगीत में भी नए प्रयोगों के माध्यम से संगीत का विस्तार हो। रहा है।

प्रश्न 12. 'चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए'-अकसर यह आरोप लगाया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुमार गंधर्व की राय और अपनी राय लिखें।

उत्तर- शास्त्रीय संगीतकारों का एक बहुत बड़ा वर्ग हमारे देश में रहता है। शास्त्रीय संगीत की परंपरा बहुत प्राचीन व उत्कृष्ट है। शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के अनुसार स्वर, लय, ताल आदि निश्चित होते हैं, उनमें थोड़ा-सा भी परिवर्तन असहनीय होता है। लोक संगीत या फ़िल्मी संगीत स्वर, लय, ताल आदि के संबंध में इतना सख्त रवैया नहीं रखता। इसमें जो भी श्रोताओं को आह्लादित करे, वही श्रेष्ठ समझा जाता है। इसे सीखने के लिए भी शास्त्रीय संगीत की तरह वर्षों के अभ्यास की जरूरत नहीं होती। शास्त्रीय संगीत के आचार्य चित्रपट या फ़िल्मी संगीत पर यह दोष मढ़ते रहते हैं कि उसने लोगों के कान बिगाड़ दिए हैं; अर्थात् उसके कारण लोगों को केवल कर्णप्रिय धुनें सुनने की आदत पड़ गई है।इस विषय में कुमार गंधर्व का मत है कि वस्तुतः फ़िल्मी संगीत ने लोगों के कान बिगाड़े नहीं अपितु सुधारे हैं। आज फ़िल्मी संगीत के कारण एक साधारण श्रोता भी स्वर, लय, ताल आदि के विषय में जानकारी रखने लगा है। लोगों की रुचि संगीत में बढ़ी है। शास्त्रीय संगीत के काल में कितने लोग संगीत का ज्ञान रखते थे? कितने लोग उसके दीवाने होते थे? अर्थात् बहुत कम। आज लोग केवल फ़िल्मी संगीत ही नहीं शास्त्रीय संगीत की ओर भी मुड़ने लगे हैं। यह भी फ़िल्मी संगीत के कारण ही संभव हुआ है। हमारा मत भी कुमार गंधर्व से मिलता है। हमारा भी यही मानना है कि आज के फ़िल्मी संगीत के कारण ही शास्त्रीय संगीतकारों की पूछ भी बढ़ी है। जब उन्हें फ़िल्मों में संगीत देने व कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है तो लाखों लोग उन्हें पहचानते हैं। अतः फ़िल्मी संगीत पर उपर्युक्त दोष लगाना उचित नहीं है।

प्रश्न 13. शास्त्रीय एवं चित्रपट दोनों तरह के संगीतों के महत्त्व का आधार क्या होना चाहिए? कुमार गंधर्व की इस संबंध में क्या राय है? स्वयं आप क्या सोचते हैं?

उत्तर- कुमार गंधर्व का स्पष्ट मत है कि चाहे शास्त्रीय संगीत हो या फ़िल्मी संगीत, वही संगीत अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाएगा, जो 'रसिकों या श्रोताओं को अधिक आनंदित कर सकेगा। वस्तुतः यह तथ्य बिलकुल सही है कि संगीत का मूल ही आनंद है। संगीत की उत्पत्ति उल्लास से हुई है। श्रोता भी संगीत अपने मनोविनोद के लिए ही सुनते हैं न कि ज्ञान के लिए। अतः संगीत का चरम उद्देश्य आनंद प्राप्ति ही है। जो भी संगीत श्रोताओं को अधिक-से-अधिक आनंदित करेगा, वही अधिक लोकप्रिय भी होगा। अतः उसी को अधिक महत्त्व भी श्रोताओं द्वारा दिया जाएगा। यह बात संगीत ही नहीं अन्य सभी कलाओं पर भी लागू होती है। शास्त्रीय संगीत भी रंजक या आनंददायक न हो तो वह बिलकुल नीरस ही कहलाएगा। कुछ करने और सोचने के लिए।

राजस्थान की रजत बूँदें (अनुपम मिश्र)

पाठ का सारांश

'राजस्थान की रजत बूँदें ' प्रसिद्ध पर्यावरणविद् **अनुपम मिश्र** द्वारा लिखित एक ज्ञानवर्धक निबंध है। इस पाठ में राजस्थान जैसे मरुस्थलीय प्रदेश में पानी की कमी के बावजूद वहाँ के लोगों द्वारा विकसित की गई अद्भुत जल-संरक्षण व्यवस्था का वर्णन किया गया है। लेखक बताता है कि राजस्थान में वर्षा बहुत कम होती है, फिर भी वहाँ के लोगों ने अपने अनुभव, परिश्रम और बुद्धिमत्ता से वर्षाजल को सहेजने के अनोखे तरीके विकसित किए हैं। वर्षा का जल रेत और मिट्टी की परतों में समाकर नमी के रूप में सुरक्षित रहता है, जिसे **रेजाणी पानी** कहा जाता है। इस पानी को प्राप्त करने के लिए **कुँई** नामक विशेष प्रकार की संरचना बनाई जाती है। कुँई आकार में छोटी होती है, परंतु इसकी गहराई अधिक होती है। इसके निर्माण का कार्य कुशल कारीगर **चेजारो** करते हैं। पाठ में पानी के तीन रूपों– **पालरपानी, पातालपानी और रेजाणीपानी**– का उल्लेख किया गया है। पालरपानी वर्षा का सतही जल है, पातालपानी भू-गर्भ में गहराई पर मिलने वाला जल है, जबकि रेजाणीपानी धरती की ऊपरी परतों में संचित नमी का जल है। राजस्थान के लोग रेजाणीपानी को सबसे अधिक उपयोगी मानते हैं क्योंकि यह अपेक्षाकृत मीठा और स्वच्छ होता है। लेखक ने कुँई निर्माण की प्रक्रिया, उसमें आने वाली कठिनाइयों तथा कारीगरों की मेहनत का भी सजीव चित्रण किया है। यह पाठ बताता है कि हमारे पूर्वज प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीते थे और जल की प्रत्येक बूँद का महत्त्व समझते थे।इस प्रकार यह पाठ जल-संरक्षण, पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक सहयोग और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है तथा हमें जल के महत्त्व को समझकर उसका विवेकपूर्ण उपयोग करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. "कुंई एक स्त्रीलिंग शब्द है और कुआँ पुल्लिंग।" पाठ के इस कथन के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि राजस्थान की मरुभूमि में पाई जाने वाली 'कुंई' सामान्य कुओं से संरचना, आकार और जल की प्रकृति के आधार पर किस प्रकार भिन्न होती है? अथवा कुंई के संकरा व्यास होने के बावजूद उसकी गहराई और उसमें एकत्र होने वाले अमृत समान जल के वैज्ञानिक कारणों की सविस्तार समीक्षा कीजिए।

उत्तर- लेखक अनुपम मिश्र जी ने पाठ में सामान्य कुएँ और कुंई के बीच के तकनीकी, बनावट और प्राकृतिक अंतर को बहुत ही तार्किक ढंग से स्पष्ट किया है। ये दोनों निम्नलिखित आधारों पर एक-दूसरे से पूरी तरह भिन्न हैं: **व्यास और आकार का अंतर:** कुआँ एक पुल्लिंग शब्द है जिसका व्यास (घेरा) बहुत बड़ा होता है। इसके विपरीत, कुंई एक स्त्रीलिंग शब्द है जिसका मुँह और व्यास अत्यंत संकरा (केवल चार-पाँच हाथ) होता है। हालाँकि, कुंई की गहराई लगभग कुएँ के बराबर ही (तीस से साठ-पैंसठ हाथ) होती है। **जल की प्रकृति और स्रोत का अंतर:** कुएँ में 'भूजल' (भूमि के बहुत नीचे का पानी) इकट्ठा होता है, जिसे 'पातालपानी' कहते हैं। राजस्थान की मरुभूमि में यह भूजल अधिकांश

स्थानों पर अत्यधिक खारा और पीने के बिल्कुल अयोग्य होता है। इसके विपरीत, कुंई में कोई खारा भूजल नहीं आता। इसमें तो मरुभूमि की रेत में समाई वर्षा की नमी बूँद-बूँद रिसकर मीठे पानी के रूप में जमा होती है, जो अत्यंत शुद्ध, ठंडी और अमृत समान होती है।

एकत्र होने की अनूठी प्रक्रिया: कुएँ में पानी नीचे के बड़े जल-स्रोतों से आता है, जबकि कुंई में रेत के बारीक कणों के बीच फँसा वर्षा का जल खड़िया पत्थर की पट्टी के कारण नीचे नहीं जा पाता। यही नमी धीरे-धीरे पानी की बूँदों में बदलकर कुंई की सूखी सतह पर टपकती है। इसलिए कुंई खारे पानी के सागर के बीच मीठे पानी का एक अद्भुत और जीवनदायी स्रोत है।

प्रश्न 2. चेलवांजी (चेजारो) किन्हें कहा जाता है? कुंई निर्माण के दौरान अत्यधिक गहराई में दमघोंटू गर्मी से बचने के लिए ऊपर खड़े लोगों और चेलवांजी के बीच जो तकनीकी तालमेल होता है, उस पर प्रकाश डालिए। अथवा

'चेजा' कार्य के दौरान चेलवांजी उकड़ूं बैठकर 'बसौली' से खुदाई करते हैं। इस संकरे स्थान पर वे अपने जीवन की सुरक्षा और ताज़ी हवा के लिए किस अनूठी तकनीक का प्रयोग करते हैं? सविस्तार वर्णन कीजिए।

उत्तर- चेलवांजी का परिचय: राजस्थान में कुंई की खुदाई और उसकी दीवारों की चिनाई करने वाले अत्यंत दक्ष, अनुभवी और कुशल कारीगरों को **'चेलवांजी' या 'चेजारो'** कहा जाता है। कुंई के इस विशेष और जोखिम भरे निर्माण कार्य को **'चेजा'** कहा जाता है। यह सामान्य मज़दूरी नहीं, बल्कि एक विशिष्ट कला है।

खुदाई की विशिष्ट तकनीक: कुंई का मुँह और घेरा बहुत छोटा होने के कारण चेलवांजी अंदर ज़मीन पर उकड़ूं (घुटने मोड़कर पंजों के बल) बैठते हैं। इतनी संकरी जगह में सामान्य आकार के फावड़े या कुल्हाड़ी को घुमाना असंभव होता है। इसलिए वे लोहे के नुकीले फल और लकड़ी के छोटे हत्थे वाले एक विशेष औज़ार **'बसौली'** से बहुत सावधानीपूर्वक खुदाई करते हैं।

गर्मी और हवा से सुरक्षा की तकनीक: जैसे-जैसे कुंई की गहराई बीस-पच्चीस हाथ से नीचे जाती है, वैसे-वैसे अंदर ऑक्सीजन की भारी कमी होने लगती है और दमघोंटू गर्म हवा बढ़ने लगती है। इस समस्या से निपटने के लिए ऊपर ज़मीन पर खड़े लोग एक बहुत ही सुंदर और प्रभावी तकनीक अपनाते हैं। वे बीच-बीच में बहुत ज़ोर से अपनी मुट्ठी में भरकर रेत नीचे फेंकते हैं। **वैज्ञानिक प्रभाव और सुरक्षा:** ऊपर से फेंकी गई रेत जब तेज़ी से गति करती हुई नीचे गिरती है, तो वह अपने साथ ऊपर की ठंडी और ताज़ी हवा नीचे ले जाती है और नीचे जमा गर्म व ज़हरीली हवा तेज़ी से ऊपर की तरफ लौट आती है। इससे चेलवांजी को तुरंत साँस लेने में राहत मिलती है। ऊपर से गिरने वाली इस भारी रेत और कंकड़ों की तीव्र चोट से अपने सिर को सुरक्षित रखने के लिए चेलवांजी सिर पर पीतल, काँसे या लोहे का एक गहरा बर्तन 'टोप' (टोपी) की तरह पहनते हैं।

प्रश्न 3. लेखक अनुपम मिश्र ने राजस्थान में उपलब्ध पानी को कितने रूपों में विभाजित किया है? प्रत्येक रूप की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए स्पष्ट कीजिए कि कुंई किस पानी को समेटती है।
अथवा
'पालरपानी', 'पातालपानी' और 'रेजाणीपानी' के बीच के बारीक अंतर को स्पष्ट कीजिए। उत्तर- लेखक ने राजस्थान की मरुभूमि में मिलने वाले पानी की उपलब्धता, प्रकृति और उसके स्थान के आधार पर उसे निम्नलिखित तीन मुख्य भागों में विभाजित किया है:

पालरपानी- यह सीधे आकाश से वर्षा के रूप में मिलने वाला प्राकृतिक जल है। यह पानी धरातल (ज़मीन की सतह) पर बहता है और इसे नदियों, तालाबों, झीलों या बड़े कुंडों में रोककर इकट्ठा किया जाता है। इसका उपयोग सिंचाई और पशुओं के लिए अधिक होता है।

पातालपानी- यह वह जल है जो वर्षा के बाद भूमि की गहराइयों में समा जाता है और गहरे भूजल का रूप ले लेता है। इसे कुएँ खोदकर या नलकूपों द्वारा निकाला जाता है। राजस्थान की मरुभूमि में यह पातालपानी अत्यधिक खारा होता है, जिसके कारण यह दैनिक उपयोग, पीने या खेती के काम में नहीं आ सकता।

रेजाणीपानी- यह पालरपानी और पातालपानी के बीच का एक अद्भुत जल-रूप है। यह वर्षा का वह जल है जो धरातल से नीचे तो उतर जाता है, परंतु नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी होने के कारण वह गहरे खारे पातालपानी में नहीं मिल पाता और बीच की रेत की परतों में नमी के रूप में अटक जाता है। **कुंई का महत्व:** मरुभूमि में अमृत समान इसी **'रेजाणीपानी'** को बूँद-बूँद करके सहेजने, रिसने और इकट्ठा करने के लिए ही कुंई का निर्माण किया जाता है।

प्रश्न 4. राजस्थान में वर्षा के मापने के लिए 'रेजा' शब्द का व्यावहारिक अर्थ क्या है?

उत्तर- 'रेजा' का अर्थ: राजस्थान में वर्षा की मात्रा को मापने के लिए इंच या सेंटीमीटर का उपयोग नहीं किया जाता, बल्कि **'रेजा'** शब्द का प्रयोग होता है। 'रेजा' का अर्थ केवल धरातल पर हुई वर्षा की मात्रा से नहीं है, बल्कि इस बात से है कि वर्षा का पानी रेत में कितनी अंगुल गहराई तक समाया है यदि पानी ज़मीन में पाँच अंगुल नीचे तक प्रवेश कर गया है, तो उसे पाँच अंगुल रेजा कहा जाएगा।

प्रश्न 5. राजस्थान के कुछ जिलों में ही कुंइयाँ क्यों पाई जाती हैं? (लगभग 100 शब्द)

उत्तर- कुंइयाँ राजस्थान के चुरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर जैसे जिलों में इसलिए पाई जाती हैं क्योंकि वहाँ रेत की सतह के नीचे खड़िया पत्थर की लंबी पट्टी मौजूद होती है। यह पट्टी वर्षा के मीठे जल को नीचे के खारे पातालपानी में मिलने से रोकती है। मरुभूमि की रेत के कण बहुत बारीक होते हैं और पानी मिलने पर आपस में चिपकते नहीं हैं। इसलिए भूमि में दरारें नहीं पड़तीं और नमी सुरक्षित रहती है। यही नमी रेजाणीपानी के रूप में कुंइयों में एकत्र होती है। खड़िया पट्टी और रेत की विशेषताएँ ही कुंइयों के निर्माण को संभव बनाती हैं।

प्रश्न 6. कुंइयों पर ग्राम समाज का अंकुश क्यों रहता है?

उत्तर- कुंइयाँ सार्वजनिक भूमि पर बनाई जाती हैं, पर उनका पानी उस परिवार का होता है जिसने उन्हें बनवाया है। फिर भी ग्राम समाज नई कुंई बनाने पर नियंत्रण रखता है क्योंकि किसी क्षेत्र की रेजाणी नमी सीमित होती है। यदि बहुत अधिक कुंइयाँ बना दी जाएँ, तो नमी का बँटवारा हो जाएगा और सभी कुंइयों में पानी कम हो जाएगा। इसलिए पंचायत सोच-समझकर ही नई कुंई की अनुमति देती है। यह व्यवस्था व्यक्तिगत अधिकार और सामाजिक हित के संतुलन का उदाहरण है तथा जल-संसाधनों के संरक्षण में सामुदायिक सहयोग की महत्ता को दर्शाती है।

प्रश्न 8. चेलवांजी द्वारा कुंई निर्माण की तकनीक तथा आच प्रथा का वर्णन कीजिए।

उत्तर- कुंई की खुदाई के समय मिट्टी धँसने से बचाने के लिए चेलवांजी 'साँपणी' तकनीक का प्रयोग करते थे। इसमें खींप घास की मोटी रस्सी को कुंडली की तरह दीवारों से सटाकर लगाया जाता था। कहीं-कहीं पेड़ों की टहनियों के लट्ठों को खड़ा करके भी सहारा दिया जाता था। पुराने समय में चेलवांजी को समाज में बहुत सम्मान मिलता था। 'आच प्रथा' के अनुसार उन्हें तीज-त्योहारों, विवाह और फसल कटाई पर भेंट तथा अनाज दिया जाता था। आज यह परंपरा लगभग समाप्त हो गई है और संबंध केवल मजदूरी तक सीमित रह गए हैं।

आलो आँधारि लेखिका परिचय : बेबी हालदार

पाठ का सारांश

"आलो आँधारि" बेबी हालदार की आत्मकथा का एक अंश है, जिसमें उन्होंने अपने संघर्षपूर्ण बचपन और जीवन की कठिन परिस्थितियों का मार्मिक चित्रण किया है। पाठ में लेखिका अपने बचपन की स्मृतियों को याद करती हैं। उनका परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। पिता का स्वभाव कठोर था तथा परिवार में प्रेम और सुरक्षा का अभाव था। माँ परिवार की उपेक्षा और कठिन परिस्थितियों से परेशान होकर घर छोड़ देती हैं। माँ के जाने के बाद बच्चों का जीवन और अधिक कष्टपूर्ण हो जाता है। लेखिका को कम उम्र में ही घरेलू जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं। उन्हें शिक्षा से वंचित होना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। गरीबी, उपेक्षा, बाल-विवाह और स्त्री-शोषण जैसी समस्याएँ उनके जीवन को प्रभावित करती हैं।जीवन के संघर्षों से जूझते हुए बेबी हालदार घरेलू कामगार के रूप में कार्य करने लगीं। इसी दौरान उनकी मुलाकात **तातुश (प्रबोध कुमार)** से हुई। तातुश ने उनकी पढ़ने-लिखने की रुचि को पहचाना, उन्हें पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा अपने जीवन के अनुभवों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके मार्गदर्शन और सहयोग से बेबी हालदार ने अपनी आत्मकथा **"आलो आँधारि"** लिखी, जिसने उन्हें एक लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह पाठ एक स्त्री के साहस, आत्मविश्वास और संघर्षशील व्यक्तित्व की प्रेरक कहानी प्रस्तुत करता है।

"आलो आँधारि" बेबी हालदार की संघर्षमय जीवन-यात्रा का मार्मिक चित्रण है, जो शिक्षा, आत्मसम्मान और स्त्री-सशक्तिकरण के महत्व को रेखांकित करती है।

प्रश्न 1. तातुश का बेबी हालदार के जीवन और लेखन में क्या योगदान था?

उत्तर- तातुश (प्रबोध कुमार) ने बेबी हालदार के जीवन में गुरु और मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। उन्होंने उनकी पढ़ने-लिखने की रुचि को पहचाना और उन्हें पुस्तकें उपलब्ध कराईं। तातुश ने उन्हें अपने जीवन के अनुभवों को लिखने के लिए प्रेरित किया तथा आत्मविश्वास दिया। उनके प्रोत्साहन के कारण बेबी हालदार ने अपनी आत्मकथा 'आलो आँधारि' लिखी। इस प्रकार तातुश ने उनकी प्रतिभा को पहचानकर उसे विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रश्न 2. शर्मिला दी और जेठू ने लेखिका को किस प्रकार प्रोत्साहित किया?

उत्तर- शर्मिला दी और जेठू ने बेबी हालदार की लेखन क्षमता को पहचानकर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने लेखिका को अपने अनुभवों को लिखने और उन्हें संजोने के लिए प्रेरित किया। उनके सहयोग और प्रोत्साहन से बेबी हालदार का आत्मविश्वास बढ़ा। उन्होंने लेखिका को यह विश्वास दिलाया कि उनका जीवन-संघर्ष समाज के लिए प्रेरणादायक हो सकता है। इस प्रकार दोनों ने उनके साहित्यिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रश्न 3. 'आलो आँधारि' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'आलो आँधारि' का अर्थ है- 'अँधेरे का उजाला' । यह शीर्षक लेखिका के जीवन के सुख-दुःख, आशा-निराशा तथा संघर्ष-सफलता का प्रतीक है। उनके जीवन में एक ओर गरीबी, उपेक्षा और कष्ट थे, तो दूसरी ओर शिक्षा, आत्मविश्वास और सफलता की किरणें भी थीं। इसलिए यह शीर्षक उनके जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है।

प्रश्न 4. बेबी हालदार के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- बेबी हालदार संघर्षशील, साहसी, आत्मसम्मानी और दृढ़ निश्चयी महिला हैं। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने हार नहीं मानी। शिक्षा के प्रति उनकी गहरी रुचि थी और उन्होंने अपने अनुभवों को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी। उनमें आत्मविश्वास, संवेदनशीलता और जीवन को बदलने का साहस था। यही गुण उन्हें एक सफल लेखिका और प्रेरणादायी व्यक्तित्व बनाते हैं।

प्रश्न 5. 'आलो आँधारि' पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- यह पाठ हमें सिखाता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी संघर्ष और आत्मविश्वास नहीं छोड़ना चाहिए। शिक्षा जीवन को बदल सकती है और व्यक्ति को नई पहचान दे सकती है। यह पाठ महिलाओं के अधिकार, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता का संदेश देता है। सही मार्गदर्शन और अवसर मिलने पर कोई भी व्यक्ति अपनी प्रतिभा को विकसित कर सकता है।

प्रश्न 6. यदि आपके आसपास कोई बालिका आर्थिक या सामाजिक कारणों से शिक्षा से वंचित हो रही हो, तो आप उसकी सहायता के लिए क्या प्रयास करेंगे?

उत्तर- मैं सबसे पहले उसके परिवार को शिक्षा के महत्व के बारे में समझाने का प्रयास करूँगा। उसे सरकारी योजनाओं, छात्रवृत्तियों और निःशुल्क शिक्षा सुविधाओं की जानकारी दूँगा। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों और सामाजिक संस्थाओं की सहायता भी लूँगा। मैं उसे पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रेरित करूँगा ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके और अपने जीवन को बेहतर दिशा दे सके।

प्रश्न 7. तातुश की तरह किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति को प्रोत्साहित करना समाज के लिए क्यों आवश्यक है?

उत्तर- समाज में अनेक प्रतिभाएँ अवसरों के अभाव में दब जाती हैं। यदि उन्हें तातुश जैसे मार्गदर्शक मिल जाएँ, तो वे अपनी क्षमता का पूर्ण विकास कर सकती हैं। प्रोत्साहन से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है और वह नई उपलब्धियाँ प्राप्त करता है। इससे न केवल उसका जीवन बदलता है, बल्कि समाज को भी प्रेरणा और नई दिशा मिलती है। इसलिए प्रतिभाओं को पहचानना और उन्हें आगे बढ़ाना समाज की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

प्रश्न 8. पाठ के किन अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरूष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है| क्या वर्तमान समय में स्त्रियों की इस सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन आया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए|

उत्तर- लेखिका बेबी हालदार अपने बच्चों के साथ किराए के घर में अकेले रहती थी| उसे बच्चों के साथ अकेला रहते देख आस-पास के सभी लोग पूछते, तुम यहाँ अकेली रहती हो? तुम्हारा स्वामी कहाँ

रहता है? तुम क्या यहाँ अकेली रह सकोगी? तुम्हारा स्वामी क्यों नहीं आता? किसी-किसी दिन लेखिका को घर पहुँचने में देर हो जाती तो मकान-मालिक की स्त्री पूछने चली आती कि इतनी देर क्यों हुई| कभी-कभी यह जानना चाहती कि वह कहाँ गई थीं| बाजार-हाट करने भी जाना होता तो वह बूढ़ी, मकान-मालिक की स्त्री, कहती, कहाँ जाती है रोज-रोज? तेरा स्वामी है नहीं, तू तो अकेली ही है! तुझे इतना घूमने-घामने की क्या दरकार? वर्तमान समय में स्त्रियों की इस सामाजिक स्थिति में बहुत परिवर्तन आया है| पुरूष के बिना भी स्त्रियाँ हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर आर्थिक रूप से मजबूत खड़ी हैं| बड़े शहरों में कई ऐसी स्त्रियाँ हैं जिनका समाज में सम्मान किया जाता है और समाज के लोगों से भी उन्हें सहयोग भी प्राप्त होता है|

प्रश्न 9. अपने परिवार से तातुश के घर तक के सफ़र में बेबी के सामने रिश्तों की कौन-सी सच्चाई उजागर होती है?

उत्तर- अपने परिवार से तातुश के घर में नौकरी लगने तक के सफ़र में बेबी को सच्चे रिश्तों के मायने समझ में आ गए थे| अपने पति के अत्याचारों से तंग आकर उसने अकेले रहने का फैसला किया| किराए के घर में आने के बाद बेबी मकान-मालिक के सवालों तथा आस-पास के लोगों की बातों से परेशान हो चुकी थी| उसके अपने सगे भाइयों ने भी साथ नहीं दिया| वह अपने तीन बच्चों के साथ अकेली रहती थी और घरों में नौकरानी का काम करती थी| वह जहाँ भी रही, लोगों ने उसे गंदी नजरों से देखा और उसका गलत फायदा उठाना चाहा| तातुश के यहाँ नौकरी लगने के बाद बेबी की जिन्दगी ही बदल गई| तातुश उसे अपनी बेटी मानते थे और किसी चीज की कमी नहीं होने देते थे| उन्होंने बेबी की पढ़ाई-लिखाई का भी ध्यान रखा और उन्हीं के कारण बेबी एक लेखिका बनी|

प्रश्न 10. इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की जटिलताओं का पता चलता है| घरेलू नौकरों को और किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? इस पर विचार कीजिए|

उत्तर- प्रस्तुत पाठ 'आलो आँधारि' से घरेलू नौकरों के जीवन की अनेक जटिलताओं का पता चलता है| मालिक उन्हें कम मजदूरी देकर उनसे मनमाना काम करवाते हैं| पूरे दिन काम करने के बाद भी उन्हें भूखे-प्यासे ही सोना पड़ता है| उन्हें बच्चों के पालन-पोषण तथा घर की जिम्मेदारी की चिंता हमेशा लगी रहती है| कहीं-कहीं तो घरेलू नौकरों के साथ बहुत ही अमानवीय व्यवहार किया जाता है| बीमार होने पर भी उनसे काम करवाया जाता है और उनका सही इलाज भी नही करवाया जाता| इस प्रकार वे कठिन मेहनत करके भी स्वतंत्र होकर जीवन व्यतीत नहीं कर पाते हैं|

प्रश्न 11 . 'आलो आँधारि' रचना बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ कई सामाजिक मुद्दों को समेटे है| किन्हीं दो मुख्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए|

उत्तर- 'आलो आँधारि' रचना में लेखिका बेबी हालदार की कई व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों को भी उजागर किया गया है| उनमें से दो मुख्य समस्याएँ निम्नलिखित हैं:

• समाज में स्त्री की दशा- लेखिका बेबी हालदार अपने तीन बच्चों के साथ किराए के मकान में अकेले रहती थीं| पति के साथ न होने के कारण उन्हें आस-पास लोगों के सवालों का सामना करना पड़ता

था| एक अकेली स्त्री के प्रति लोगों के विचार अच्छे नहीं होते हैं| बुरे समय में कोई उसकी सहायता भी नहीं करना चाहता है| हर कोई उसके अकेलेपन का लाभ उठाना चाहता है|

• आर्थिक तंगी- लेखिका बेबी हालदार घरों में काम करके अपने परिवार का भरण-पोषण करती थीं| उनकी आर्थिक स्थिति इतनी भी मजबूत नहीं थी कि वह एक अच्छा सा कमरा लेकर रह सके| जहाँ वह रहती थीं वहाँ बाथरूम और पानी की असुविधा थी| लोगों को शौच करने बाहर जाना पड़ता था| आर्थिक स्थिति उजागर करता है, जहाँ अभी भी पानी और बाथरूम की समस्या व्याप्त है| यह खासकर स्त्रियों के लिए कमजोर होने के कारण लोगों को इन समस्याओं का सामना करना पड़ता था| यह बस्तियों की दुर्दशा को बहुत बड़ी समस्या है|

प्रश्न 12. बेबी की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन कैसा होता? कल्पना करें और लिखें |

उत्तर- बेबी की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन अभी भी पहले की तरह ही कठिनाइयों और अभावों से भरा होता| तातुश के यहाँ आने से पहले बेबी अपने बच्चों के साथ किराए के घर में अकेले रहती थी| वहाँ आस-पास के लोग उससे तरह-तरह के सवाल करते थे| पानी और शौचालय की भी असुविधा थी| लेखिका की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं थी कि वह कहीं और जाकर रह सकती, इसलिए मजबूरन उसे वहीं रहना पड़ता| तातुश ने जिस प्रकार लेखिका की सहायता की, उसके बिना उसका जीवन परेशानियों से ही भरा होता| उसके बच्चों का भविष्य भी खराब हो गया होता| वह न तो लेखिका बन पातीं और न ही उन्हें अपने जीवन की समस्याओं से छुटकारा मिलता| वह अपने पिता से भी नहीं मिल पाती।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र -1

कक्षा : ग्यारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

विषय : हिंदी (आधार) **विषय कोड - (302)** **निर्धारित समय : 3 घंटे**

सामान्य निर्देश:-

- प्रश्न पत्र तीन खंडों-- **क, ख और ग** में विभाजित है।
- **खंड 'क'** में अपठित बोध आधारित प्रश्न हैं, सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- **खंड 'ख'** में अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- **खंड 'ग'** में आरोह तथा वितान से प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रश्नपत्र में कुल- **13 प्रश्न** हैं।
- उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखिए।

खंड- क (अपठित बोध) अंक (18)

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- **10**

नवाचार (Innovation) वह शक्ति है जो समाज, उद्योग और अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने का कार्य करती है। यह केवल नई खोजों या तकनीकों तक सीमित नहीं है, बल्कि किसी मौजूदा प्रक्रिया, उत्पाद या सेवा में ऐसा सुधार करना है जिससे वह अधिक प्रभावी और उपयोगी बन सके। 21वीं सदी में नवाचार केवल प्रतिस्पर्धा का साधन नहीं, बल्कि जीवंतता और सतत विकास की अनिवार्य शर्त बन चुका है।

आज के युग में डिजिटल नवाचार ने हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ब्लॉकचेन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) और बायोटेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में हो रहे नवाचारों ने स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार और संचार को अधिक कुशल और सुलभ बना दिया है। उदाहरण के लिए, टेलीमेडिसिन और रोबोटिक सर्जरी ने चिकित्सा सेवाओं को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाया है, जबकि ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म ने शिक्षा को वैश्विक स्तर पर विस्तारित किया है।

नवाचार केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं लाता, बल्कि यह समाज की सोच और जीवनशैली में भी बदलाव करता है। स्टार्टअप संस्कृति, हरित ऊर्जा समाधान, स्मार्ट सिटीज और डिजिटल भुगतान प्रणालियाँ नवाचार के उदाहरण हैं जो सामाजिक-आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देते हैं। सरकारें और कंपनियाँ अब अनुसंधान एवं विकास (R&D) में अधिक निवेश कर रही हैं ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बना जा सके।

नवाचार भविष्य का निर्माण करता है। यह जिज्ञासा, रचनात्मकता और समाधान खोजने की प्रक्रिया है जो मानवता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक है। एक नवाचारी सोच ही किसी राष्ट्र को सशक्त और आत्मनिर्भर बना सकती है।

(क) स्टार्टअप संस्कृति, हरित ऊर्जा समाधान और स्मार्ट सिटीज किसका उदाहरण हैं? 1

अ- केवल वैज्ञानिक अनुसंधान ब - तकनीकी बाधा

स- सामाजिक आर्थिक नवाचार द- पारंपरिक व्यापार मॉडल

(ख) कॉलम A में दिए गए कथनों के अनुसार कॉलम B से सही मिलान कीजिए: 1

स्तंभ A (नवाचार के	स्तंभ B (संबंधित नवाचार)क्षेत्र)
1. स्वास्थ्य	(A) ब्लॉकचेन और डिजिटल भुगतान प्रणाली
2. संचार	(B) हरित ऊर्जा समाधान और स्मार्ट सिटीज
3. व्यापार	(C) रोबोटिक सर्जरी और टेलीमेडिसिन
4. शिक्षा	(D) 5G नेटवर्क और इंटरनेट ऑफ थिंग्
5. पर्यावरण	(E) ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और VR तकनीक

विकल्प-

अ - 1-(C) 2-(D) 3-(A) 4-(B) 5-(E)

ब - 1-(C) 2-(D) 3-(B) 4-(A) 5-(E)

स - 1-(C) 2-(E) 3-(A) 4-(B) 5-(D)

द- 1-(C) 2-(D) 3-(A) 4-(E) 5-(B)

(ग) प्रश्नों में दिए गए दोनों कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही उत्तर का चयन करें: 1

कथन - पारंपरिक सोच और वित्तीय बाधाएँ नवाचार को धीमा कर सकती हैं।

कारण- नवाचार के लिए केवल वैज्ञानिक अनुसंधान आवश्यक होता है, सामाजिक समर्थन की कोई आवश्यकता नहीं होती।

अ- कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

ब- कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।

स- कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

द - कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(घ) नवाचार का मुख्य उद्देश्य क्या है? 1

(ङ) कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और ब्लॉकचेन किस प्रकार नवाचार को बढ़ावा देते हैं? 2

(च) क्या सभी नवाचार समाज के लिए लाभकारी होते हैं? अथवा इसके नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं? स्पष्ट कीजिए- 2

(छ) नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कौन-कौन क्या-क्या योगदान दे रहे हैं । 2

2. निम्नलिखित अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- 8

पथ बंद है पीछे अचल है पीठ पर धक्का प्रबल
मत सोच बढ़ चल तू अभय, ले बाहु में उत्साह-बल।
जीवन-समर के सैनिकों संभव, असंभव को करो

पथ-पथ निमंत्रण दे रहा आगे कदम, आगे कदम।
ओ बैठने वाले तुझे देगा न कोई बैठने।
पल-पल समर, नूतन सुमन-शय्या न देगा लेटने।
आराम संभव है नहीं जीवन सतत संग्राम है

बढ़ चल मुसाफिर धर कदम, आगे कदम, आगे ओ नौजवाँ, निर्माण के पथ मोड़ दे, पथ खोल दे कदम। जय-हार में बढ़ता रहे आगे कदम, आगे कदम।

ऊँचे हिमानी श्रृंग पर, अंगार के भ्रु-भृंग पर
तीखे करारे खंग पर आरंभ कर अद्भुत सफर

(क) कविता में "ऊँचे हिमानी श्रृंग पर - अद्भुत सफर" का प्रयोग किसका प्रतीक है ? 1

(अ) विलासिता और सुगमता का (ब) कठिनाइयों और उच्च लक्ष्यों के संघर्षपूर्ण मार्ग का

(स) हिमालय के शांत वातावरण का (द) सरलता से मंजिल प्राप्त होना

(ख) कविता के अनुसार "पथ बंद है पीछे - धक्का प्रबल" पंक्ति का क्या अभिप्राय है ? 1

(अ) पीछे लौटने के लिए पर्याप्त अवसर हैं

(ब) मार्ग चुनने की स्वतंत्रता नहीं है

(स) व्यक्ति को रुककर सोचने की आवश्यकता है

(द) परिस्थितियाँ व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं

(ग) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए

कथन (A): कविता में बार-बार "आगे कदम" कहकर कवि कर्मशीलता और निरंतर प्रगति का संदेश देता है।

कारण (R): कवि का मानना है कि बैठकर प्रतीक्षा करने से जीवन में सफलता अपने-आप प्राप्त हो जाती है।

विकल्प:

(अ) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ब) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(स) A सत्य है, परंतु R असत्य है।

(द) A असत्य है, परंतु R सत्य है। 1

(घ) इस काव्यांश में कवि किसे प्रेरणा दे रहा है ? **1**

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए - जीवन सतत संग्राम है । **2**

(च) कविता का केंद्रीय भाव दो - तीन वाक्यों में लिखिए । **2**

खंड- 'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक (22)

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर रचनात्मक लेख (120 शब्द) लिखिए :- **6**

(क) "अगर मैं समय को रोक पाता..." **(ख)** "प्रकृति की गोद में बिताया एक दिन"

(ग) "भविष्य का मेरा आदर्श शहर - जहाँ तकनीक और प्रकृति साथ हों"

4. विद्यालय के पुस्तकालय में बढ़ते शोर और अव्यवस्था को नियंत्रित करवाने हेतु पुस्तकालयाध्यक्ष को पत्र लिखिए। अथवा

स्थानीय कंपनी में 'डेटा एंट्री असिस्टेंट' के पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए। **1×5 = 5**

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर (40 शब्द) दीजिए :- **4×2 = 8**

(क) अंतर वैयक्तिक संचार का क्या महत्व है ?

(ख) पेज थ्री पत्रकारिता क्या है ?

(ग) वॉचडॉग पत्रकारिता का क्या महत्व है ?

(घ) टिप्पण का क्या उदेश्य होता है ?

(ङ) निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोशीय क्रम में व्यवस्थित कीजिए-

क्षत्रिय, क्या, कंगन, कौस्तुभ

6. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- **1×3 = 3**

(क) एक अच्छी डायरी लेखन के लिए किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

(ख) फ़्लैशबैक तकनीक और फ्लैशफॉरवर्ड तकनीक क्या होती है? दोनों तकनीकों के उदाहरण भी लिखिए ।

खंड 'ग' (पाठ्यपुस्तक आरोह एवं वितान पर आधारित प्रश्न) अंक (40)

7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:- **5×1= 5**

मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती
गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती
बैठे बिठाए पकड़े जाना-बुरा तो है
सहमी-सी चुप में जकड़े जाना-बुरा तो है
पर सबसे खतरनाक नहीं होता
कपट के शोर में
सही होते हुए भी दब जाना-बुरा तो है
किसी जुगनू की लौ में पढ़ना-बुरा तो है
मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना
बुरा तो है
सबसे खतरनाक नहीं होता

(क) "कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना" किसकी ओर संकेत करता है ?

(अ) शारीरिक संघर्ष (ब) नैतिक सत्य का दमन

(स) आर्थिक असमानता (द) राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति

(ख) "मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना" किस प्रकार का व्यवहार दर्शाता है ?

(अ) डर और मजबूरी में समझौता (ब) सक्रिय प्रतिरोध

(स) सामाजिक परिवर्तन की इच्छा (द) आत्मविश्वास का विकास

(ग) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :-

कॉलम 1		कॉलम 2	
1	बैठे-बिठाए पकड़े जाना	A	भय का ऐसा वातावरण जहाँ आवाज़ उठाना मुश्किल

			हो जाता है
2	सहमी-सी चुप में जकड़े जाना	B	बिना कारण अन्याय सहना
3	किसी जुगनू की लौ में पढ़ना	C	अंधकार में सत्य की धुंधली पहचान

(अ) 1-B, 2-A, 3-C (ब) 1-A, 2-B, 3-C (स) 1-C, 2-A, 3-B (द) 1-B, 2-C, 3-A

(घ) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए-

कथन (A): कवि कहता है कि मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती।

कारण (R): असली खतरा मनुष्य की चेतना और संवेदनशीलता का मर जाना है।

(अ) A सही, R सही और R, A की सही व्याख्या है।

(ब) A सही, R सही लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(स) A सही है, R गलत है। (द) A गलत है, R सही है।

(ङ) कवि "सबसे खतरनाक" किसे मानता है ?

(अ) सहमी-सी चुप (ब) मेहनत की लूट

(स) गद्दारी और लोभ (द) मनुष्य का भीतर से टूट जाना और सत्य से मुख मोड़ लेना

8. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 2×3= 6

(क) "आओ, मिलकर बचाएँ" कविता के अनुसार दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?

(ख) दुष्यंत की गज़लों का मिजाज बदलाव के पक्ष में है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

(ग) निम्नलिखित पंक्तियों का "भाव व शिल्प" सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

"दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी"

9. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 2×2= 4

(क) "घर की याद" कविता में कवि का भरा-पूरा घर आज 'परिताप का घर' क्यों है?

(ख) चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

(ग) कबीर की दृष्टि में ईश्वर का स्वरूप क्या हैं?

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :- 5×1= 5

बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। आपको बिछड़ते देखकर आज हृदय में बड़ा दुख है। माइ लॉर्ड ! आपके दूसरी बार इस देश में आने से भारतवासी किसी प्रकार प्रसन्न न थे। वे यही चाहते थे कि आप फिर न आवें। पर आप आए और उससे यहाँ के लोग बहुत ही दुखित हुए। वे दिन-रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान् यहाँ से पधारें। पर अहो! आज आपके जाने पर हर्ष की जगह

विषाद होता है। इसी से जाना कि बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है, बड़ा पवित्र, बड़ा निर्मल और बड़ा कोमल होता है।वैर-भाव छूटकर शांत रस का आविर्भाव उस समय होता है।

(क) गद्यांश में "वैर-भाव छूटकर शांत रस का आविर्भाव" किस मनोवैज्ञानिक परिवर्तन का संकेत देता है?

(अ) सामाजिक स्तर पर सामूहिक क्षमा-भाव (ब) विरोधी के प्रति सहानुभूति का उदय

(स) विदाई-क्षण में भावनात्मक परिपक्वता का उभरना (द) पराजय के प्रति अनिच्छुक स्वीकृति

(ख) इस अंश के संदर्भ में बिछड़न-समय के बारे में सही विकल्प चुनिए:

(अ) यह केवल शत्रुओं के लिए आनंददायक होता है

(ब) यह वैर-भाव को और अधिक प्रगाढ़ करता है

(स) यह मन को पवित्र, निर्मल और कोमल बना देता है

(द) इसका मनोभावों से कोई संबंध नहीं हो

(ग) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए-

कथन (A): माइ लॉर्ड के जाने पर लोगों को हर्ष हुआ और वे ख़ुशी से झूम उठे ।

कारण (R): भारतवासी उनके यहाँ आने पर प्रसन्न नहीं थे।

(अ) A सही, R सही, और R, A की सही व्याख्या है।

(ब) A सही, R सही, पर R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(स) A गलत है, R सही है। (द) A सही है, R गलत है।

(घ) इस अंश से 'भारतीय जनमानस' के बारे में कौन-सी बात प्रमुख रूप से स्पष्ट होती है?

(अ) भारतीय केवल क्रोध प्रधान हैं (ब) भारतीय कटु स्मृतियों को हमेशा लिए रहते हैं

(स) भारतीयों के भीतर कोमलता और क्षमाशीलता है

(द) भारतीय केवल स्वार्थ से प्रेरित होकर व्यवहार करते हैं

(ङ) पाठ "विदाई संभाषण" के रचनाकार कौन हैं?

(अ) कृष्णा सोबती (ब) जवाहरलाल नेहरू (स) पाश (अवतार सिंह संधू) (द) बालमुकुंद गुप्त

11. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 2×3= 6

(क) "अपू के साथ ढाई साल" संस्मरण का प्रतिपादय लिखिए।

(ख) "नमक का दारोगा" कहानी सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है, कैसे?

(ग) यह कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है कि "जामुन का पेड़" कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।

12. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 2×2= 4

(क) भारत माता के प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी?

(ख) स्वयं को खानदानी नानबाई साबित करने के लिए मियाँ नसीरुद्दीन ने कौन-सा किस्सा सुनाया?

(ग) धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था?

13. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 2×5= 10

(क) "राजस्थान में जल-संग्रह के लिए बनी कुंई किसी वैज्ञानिक खोज से कम नहीं है।" तर्क सहित कथन की पुष्टि कीजिए।

(ख) आज शास्त्रीय संगीत के स्थान पर फ़िल्म संगीत को अधिक पसंद किया जाता है। क्यों?

(ग) बेबी हालदार की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन कैसा होता? कल्पना करें और लिखें।

प्रतिदर्श -1 उत्तरमाला (संकेत)

प्रश्न संख्या खंड- क (अपठित बोध) अंक 18

1. **निम्नलिखित अपठित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- 10**

(क) उत्तर : द **(ख)** उत्तर : द **(ग)** उत्तर: अ

(घ) मौजूदा प्रक्रियाओं, उत्पादों या सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाना

(ङ) कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) डेटा विश्लेषण, स्वचालन और निर्णय-निर्माण को सशक्त बनाती है, जबकि ब्लॉकचेन डेटा सुरक्षा और पारदर्शिता को सुनिश्चित करता है, जिससे व्यापार, वित्त और स्वास्थ्य क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा मिलता है।

(च) नवाचार आमतौर पर समाज की उन्नति और सुविधा के लिए होता है, लेकिन यह हमेशा लाभकारी ही हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। कुछ नवाचारों के सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं, जो समाज, पर्यावरण और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। नवाचार के नकारात्मक प्रभाव- रोजगार पर प्रभाव, गोपनीयता और डेटा सुरक्षा की समस्या, सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय क्षति, नैतिक एवं सामाजिक प्रभाव आदि।

(छ) सरकारें नवाचार को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप योजनाएँ, नीति निर्माण और बुनियादी ढाँचे का विकास कर रही हैं। अनुसंधान एवं विकास (R&D) के लिए वित्तीय सहायता और अनुदान प्रदान कर रही हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निवेश कर रही हैं और डिजिटल भारत जैसी योजनाएँ चला रही हैं। कंपनियाँ एवं उद्योग तकनीकी नवाचारों में निवेश कर उत्पादन और सेवाओं की गुणवत्ता सुधार रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ब्लॉकचेन और ऑटोमेशन जैसी आधुनिक तकनीकों को अपना रही हैं।

2. दिए गए अपठित पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 08

(क) ब **(ख)** द **(ग)** स

(घ) कवि युवा पीढ़ी, कर्मशील मनुष्यों और जीवन-संघर्ष के पथिकों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है।

(ङ) इसका आशय है कि जीवन कभी भी आराम या ठहराव वाला नहीं है।
हर चरण पर संघर्ष,परिश्रम, चुनौतियाँ एवं आगे बढ़ने का प्रयत्न निरंतर चलता रहता है।
मानव को हर परिस्थिति में कर्म करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है।

(च) कवि का केंद्रीय संदेश है कि मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जीवन में रुकना या हार मानना नहीं चाहिए। साहस, उत्साह और कर्मशीलता के साथ कठिन से कठिन मार्ग भी पार किए जा सकते हैं।

खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक 22

3. रचनात्मक लेखन आरंभ- 01 अंक, विषयवस्तु- 03 अंक, प्रस्तुति- 01 अंक, भाषा- 01 अंक

4. पत्र लेखन आरंभ- 01 अंक, विषयवस्तु- 03 अंक, भाषा- 01 अंक

5. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 08

(क) अंतरवैयक्तिक संचार दो व्यक्तियों के बीच विचार, भावनाएँ और सूचनाएँ स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की प्रक्रिया है। इससे संबंधों में विश्वास बढ़ता है, गलतफहमियाँ दूर होती हैं और सहयोगपूर्ण व्यवहार विकसित होता है।

(ख) पेज थ्री पत्रकारिता वह शैली है जिसमें समाचारों से अधिक मनोरंजन, पार्टियाँ, सेलिब्रिटी जीवन, फैशन और ग्लैमर से जुड़े समाचार प्रकाशित किए जाते हैं। यह समाचार पत्रों में पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती है।

(ग) वॉचडॉग पत्रकारिता सरकार, संस्थाओं और बड़े संगठनों पर निगरानी रखती है। यह भ्रष्ट्राचार, अन्याय और दुरुपयोग का पर्दाफाश करती है, जिससे लोकतंत्र मजबूत रहता है।

(घ) टिप्पणी का मुख्य उद्देश्य किसी मामले या दस्तावेज़ पर स्पष्ट, संक्षिप्त और क्रमबद्ध जानकारी या विचार प्रस्तुत करना है, ताकि उस पर सही और त्वरित निर्णय लिया जा सके और उसका एक स्थायी रिकॉर्ड बना रहे, जिससे भविष्य में संदर्भ लिया जा सके ।

(ङ) कंगन, कौस्तुभ, क्या, क्षत्रिय ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किसी एक प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 03

(क) अच्छी डायरी लेखन के लिए भाषा सरल और आत्मीय होनी चाहिए। दिनभर की घटनाएँ ईमानदारी, स्पष्टता और संक्षिप्तता से लिखी जाएँ। इसमें भावनाएँ, अनुभूतियाँ और सीखें स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त हों। तिथि अवश्य लिखी जाए और निजी गोपनीयता का ध्यान रखा जाए। डायरी को आत्ममंथन तथा आत्म-विकास का साधन माना जाता है।

(ख) फ्लैशबैक तकनीक और फ्लैश फॉरवर्ड तकनीक कथा कहने के तरीके हैं, जिसमें फ्लैशबैक कहानी के वर्तमान से पीछे जाकर अतीत की घटनाओं को दिखाता है, जिससे पात्रों और पृष्ठभूमि को समझने में मदद मिलती है, जबकि फ्लैश फॉरवर्ड कहानी को भविष्य में ले जाकर दर्शकों को भविष्य की झलक दिखाता है, जो रहस्य या पूर्वाभास पैदा करता है।

खंड 'ग' (पाठ्यपुस्तक आरोह एवं वितान पर आधारित प्रश्न) अंक- 40

7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 05

(क) ब **(ख)** अ **(ग)** अ **(घ)** अ **(ड़)** द

8. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 06

(क) "आओ, मिलकर बचाएँ" कविता में दिल के भोलेपन के साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को बचाने पर इसलिए जोर दिया गया है, क्योंकि भोलेपन का फायदा उठाकर लोग शोषित होते हैं; अक्खड़पन (दृढ़ता) उन्हें शोषण के खिलाफ खड़ा होने और अपनी बात मनवाने की शक्ति देता है, जबकि जुझारूपन (संघर्ष की भावना) उन्हें अपनी संस्कृति, पहचान और अस्तित्व के लिए लड़ने की प्रेरणा देता है, ताकि आधुनिकता के नाम पर वे अपनी जड़ों और जीवन-मूल्यों को खो न दें, बल्कि एक स्वस्थ, संतुलित जीवन जी सकें।

(ख) दुष्यंत कुमार की गज़लें व्यवस्था, राजनीति, भ्रष्टाचार और सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ आवाज़ उठाती हैं। वे शोषण और अन्याय के विरुद्ध जनता की आकांक्षाओं को स्वर देते हैं। उनकी रचनाओं का स्वर परिवर्तनकारी है– वह समाज में सुधार, जागरूकता और जनता की सक्रिय भागीदारी का आग्रह करता है। इसलिए उनकी गज़लों का मिजाज बदलाव के पक्ष में माना जाता है।

(ग) भाव: जैसे दूध को मथकर कीमती घी (ईश्वर) निकाल लेते हैं और छाछ (संसार) छोड़ देते हैं, वैसे ही मीरा ने मोह-माया त्यागकर प्रभु-प्रेम को अपना लिया है। शिल्प: ग्रामीण बिंबों व रूपक अलंकार के प्रयोग से बात जीवंत हो उठी है और भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 04

(क) 'घर की याद' कविता में कवि का भरा-पूरा घर आज 'परिताप (दुःख) का घर' इसलिए है क्योंकि कवि खुद जेल में है और अपने परिवार से दूर है, जिससे उसके भाई, माता-पिता और बहन सभी पुत्र-वियोग में दुखी और बेचैन हैं; घर में खुशियाँ होने के बावजूद, कवि की अनुपस्थिति उस घर में पीड़ा और उदासी का माहौल बना देती है, खासकर जब उसकी बहन मायके आती है और भाई को न पाकर उसे यह घर 'परिताप का घर' लगता है, क्योंकि वह अपने प्रियजनों के साथ नहीं है।

(ख) चंपा ने कलकत्ता पर 'बजर गिरने' की बात इसलिए कही क्योंकि उसे डर था कि उसका पति रोज़गार के बहाने उसे छोड़कर कलकत्ता (महानगर) चला जाएगा, जो उसके लिए परिवार तोड़ने वाला था और वह अपने पति से अलग नहीं होना चाहती थी, इसलिए उसने उस जगह का विनाश चाहा जहाँ से उसके पति के दूर जाने की आशंका थी।

(ग) कबीरदास के अनुसार ईश्वर एक है और वह समस्त प्राणियों तथा वस्तुओं में समान रूप से व्याप्त है। जिस प्रकार सब जगह ही पवन और एक ही जल है। सारा जगत एक ही ज्योति से प्रकाशमान हैं। वह परमात्मा लकड़ी में अग्नि की तरह रहता हैं। जिस प्रकार बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है किन्तु उसमें निहित अग्नि को नहीं नष्ट कर सकता उसी प्रकार मनुष्य का शरीर तो नश्वर है किन्तु उसके भीतर निवास करने वाला परमात्मा अमर है।

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :- 05

(क) स **(ख)** स **(ग)** स **(घ)** स **(ङ)** द

11. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 06

(क) इस संस्मरण में सत्यजित राय के निर्देशन में 'पाथेर पांचाली' के निर्माण की कठिनाइयों, धैर्य, सृजनशीलता और संघर्ष का चित्रण है। लेखक ने अपू (अभिनेता) के साथ बिताए समय, ग्रामीण परिवेश की चुनौतियों और फिल्म निर्माण के अनुभवों को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है। यह कला-समर्पण और यथार्थवादी सिनेमा का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

(ख) "नमक का दारोगा" कहानी सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है क्योंकि नायक मुंशी वंशीधर अपनी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और धर्मपरायणता से भ्रष्ट समाज को झुका देते हैं, जहाँ धनबल से धर्मबल को कुचलने की कोशिश होती है, लेकिन अंततः वंशीधर के अडिग सद्गुणों से प्रभावित होकर बेईमान व्यापारी अलोपीदीन भी नतमस्तक हो जाते हैं और उन्हें अपनी संपत्ति का मैनेजर नियुक्त कर सम्मान देते हैं, जो धन पर धर्म और सत्य की जीत को दर्शाता है।

(ग) यह कहना पूर्णतः युक्तिसंगत है कि "जामुन का पेड़" कहानी में हास्य के साथ करुणा की गहरी अंतर्धारा है, क्योंकि कृश्नचंदर ने सरकारी दफ्तरों की संवेदनहीनता और औपचारिकता को हास्य के माध्यम से उजागर करते हुए, पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति (एक कवि) की पीड़ा और उस पर हो रही असंवेदनशील चर्चाओं से पाठक के मन में गहरी करुणा और संवेदना जगाई है; हर विभाग का अपने काम से बचना और अंततः व्यक्ति की मृत्यु पर फाइलों का निपटना, हास्य के साथ मानवीय संवेदना की विफलता पर करुणा को चरम पर ले जाता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 04

(क) पंडित जवाहरलाल नेहरू के लिए भारत माता सिर्फ़ ज़मीन, पहाड़, नदियाँ और खेत नहीं थे, बल्कि इस देश के करोड़ों लोग थे, जिनमें किसान, मजदूर और आम जनता शामिल थी; उनके लिए 'भारत माता की जय' का मतलब इन सभी लोगों की जय था, और वे चाहते थे कि लोग खुद को भारत माता का हिस्सा समझें, जिससे उनमें राष्ट्रीय एकता और गौरव की भावना जगे।

(ख) मियाँ नसीरुद्दीन ने खुद को खानदानी नानबाई साबित करने के लिए यह किस्सा सुनाया कि उनके वालिद (पिता) और वालिद के वालिद (दादा) शाही बावर्ची (रसोइया) थे और वे बादशाह के लिए आग और पानी का इस्तेमाल किए बिना पकवान बनाते थे, जिससे यह पता चलता है कि उनका खानदान कितना पुराना और प्रतिष्ठित है और उन्हें रोटियाँ बनाने की कला विरासत में मिली है, जो उन्हें साधारण नानबाइयों से अलग बनाती है।

(ग) धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था क्योंकि -

1.वह स्वयं को नीची जाति का समझता था। यह बात बचपन से उसके मन में बैठा दी गई थी।

2. मोहन कक्षा का सबसे होशियार लड़का था। वह हर प्रश्न का उत्तर देता था। उसे मास्टर जी ने पूरी पाठशाला का मॉनीटर बना रखा था। वह अच्छा गाता था।

13. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 10

(क) जल-कमी वाले राजस्थान में लोगों ने अनुभव और प्रयोग से जल-संग्रह का वैज्ञानिक तरीका कुंई विकसित किया। खड़िया की पट्टी पहचानना, वर्षा के बाद रेत में पानी का न बैठना देखकर जल-स्तर जानना और कुंई खोदते समय रेत डालकर मजदूरों को गर्मी से बचाना– अनुभव-आधारित विज्ञान है। इसकी चिनाई पत्थर, ईंट और खींप की रस्सी से की जाती है, जो संरचनात्मक विज्ञान को दर्शाती है। आज यह पारंपरिक जल-प्रणाली पूरे देश के लिए एक आदर्श मॉडल बन गई है।

(ख) शास्त्रीय संगीत घराना-परंपरा से जुड़ा, जटिल और सीमित वर्ग तक सीमित रहा, इसलिए आम जनता के लिए इसकी पहुँच कठिन थी। फ़िल्मों के आने के बाद सरल, मधुर और आसानी से समझ आने वाला फ़िल्मी संगीत तुरंत लोकप्रिय हो गया। शास्त्रीय संगीत सीखने में लम्बा समय, मेहनत और खर्च लगता है, जबकि फ़िल्मी संगीत अपेक्षाकृत आसानी से सीखा और प्रस्तुत किया जा सकता है। इन्हीं कारणों से आज फ़िल्मी संगीत समाज में अधिक पसंद और अधिक प्रचलित है।

(ग) तातुश बेबी हालदार के जीवन में सौभाग्य बनकर आए, क्योंकि उन्होंने उसे अपमान, हिंसा और नारकीय परिस्थिति से निकलने का अवसर दिया। यदि तातुश न मिलते, तो बेबी अपनी प्रतिभा पहचान ही नहीं पाती और घर-घर काम करते हुए अपमान तथा शोषण भरा जीवन जीती रहती। उसके बच्चों की शिक्षा रुक जाती और वे भी विपरीत परिस्थितियों में खो जाते। तातुश के सहयोग से ही बेबी सुरक्षित वातावरण, आत्मविश्वास और लेखन जैसी अद्भुत क्षमता खोज पाई।

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र -2

कक्षा : ग्यारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

विषय : हिंदी (आधार) **विषय कोड - (302)** **निर्धारित समय : 3 घंटे**

सामान्य निर्देश:-

- प्रश्न पत्र तीन खंडों-- **क, ख और ग** में विभाजित है।
- **खंड 'क'** में अपठित बोध आधारित प्रश्न हैं, सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- **खंड 'ख'** में अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- **खंड 'ग'** में आरोह तथा वितान से प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रश्नपत्र में कुल- **13 प्रश्न** हैं।
- उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखिए।

खंड - क (अपठित बोध) अंक(18)

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 10

सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को कार्य करने की प्रेरणा देता है । मनुष्य किसी भी कारणवश जब किसी के कष्ट को दूर करने का संकल्प करता है तब जिस सुख को वह अनुभव करता है, वह सुख विशेष रूप से प्रेरणा देने वाला होता है । जिस भी कार्य को करने के लिए मनुष्य में कष्ट, दुःख या हानि को सहन करने की ताकत आती है, उन सबसे उत्पन्न आनंद ही उत्साह कहलाता है । उदाहरण के लिए दान देने वाला व्यक्ति निश्चय ही अपने भीतर एक विशेष साहस रखता है और वह है धन - त्याग का साहस । यही त्याग यदि मनुष्य प्रसन्नता के साथ करता है तो उसे उत्साह से किया गया दान कहा जाएगा । उत्साह आनंद और साहस का मिला - जुला रूप है । उत्साह में किसी न किसी वस्तु पर ध्यान अवश्य केंद्रित होता है । वह चाहे कर्म पर, चाहे कर्म के फल पर और चाहे व्यक्ति या वस्तु पर हो । इन्हीं के आधार पर कर्म करने में आनंद मिलता है । कर्म - भावना से उत्पन्न आनंद का अनुभव केवल सच्चे वीर ही कर सकते हैं क्योंकि उनमें साहस की अधिकता होती है । सामान्य व्यक्ति कार्य पूरा हो जाने पर जिस आनंद का अनुभव करता है, सच्चा वीर कार्य प्रारम्भ होने पर ही उसका अनुभव कर लेता है । आलस्य उत्साह का सबसे बड़ा शत्रु है । जो व्यक्ति आलस्य से भरा होगा, उसमें काम करने के प्रति उत्साह कभी उत्पन्न नहीं हो सकता । उत्साही व्यक्ति असफल होने पर भी कार्य करता रहता है । उत्साही व्यक्ति सदा दृढ़ निश्चयी होता है ।

(क) सच्चा उत्साह वही है, जो - **1**

(i) सुख का अनुभव करवाए (ii) कष्ट को दूर करे

(iii) प्रसन्नता दे (iv) मनुष्य को कार्य करने की प्रेरणा दे

(ख) किसी के कष्ट को दूर करने का संकल्प मनुष्य को प्रदान करता है - **1**

(i) सुख और दुख (ii) सुख और प्रेरणा (iii) असफलता (iv) आलस्य और हीन भावना

(ग) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए - 1

कथन (A): उत्साह आनंद और साहस का मिला - जुला रूप है ।

कारण (R): जिस भी कार्य को करने से मनुष्य में कष्ट, दुःख या हानि को सहन करने की ताकत आती है । उन सबसे उत्पन्न आनंद ही उत्साह कहलाता है ।

(i) कथन(A) तथा कारण(R) दोनों सही हैं तथा कारण(R) कथन(A) की सही व्याख्या करता है ।

(ii) कथन(A) तथा कारण(R) दोनों सही है तथा कारण(R) कथन(A) की सही व्याख्या नहीं करता है ।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं ।

(iv) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है ।

(घ) गद्यांश के अनुसार उत्साही व्यक्ति का मुख्य गुण क्या है ? 1

(ङ). सामान्य व्यक्ति और सच्चे वीर के आनंद में क्या अंतर है ? 2

(च) आलस्य किसका का सबसे बड़ा शत्रु है और क्यों ? 2

(छ) सच्चे वीर की क्या विशेषताएँ होती हैं ? 2

2 निम्नलिखित अपठित पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (08)

शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न सब का सम हो ।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो ।
नहीं किसी को कम हो ।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ।
बोलो धर्मराज , शोषित वे
जिएँ या कि मिट जाएँ ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले , तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को ,
जीत , या कि खुद मर के ।
किसने कहा , पाप है? अनुचित
स्वत्व - प्राप्ति - हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना -मरना ?

(क) "स्वत्व - प्राप्ति - हित लड़ना ?" - पंक्ति का आशय है ? **1**

(i) अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु संघर्ष करना । (ii) अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना ।

(iii) आजादी प्राप्ति हेतु संघर्ष करना । (iv) परहित हेतु संघर्ष करना ।

(ख) काव्यांश के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक है ? **1**

(i) मौन रहना (ii) संघर्ष करना

(iii) सुख के साधनों का समान बँटवारा (iv) अपने कार्यों में व्यस्त रहना

(ग) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए- **1**

कॉलम 1	**कॉलम 2**
1 स्वत्व	**अ) निर्भीक**
2 संघात	**ब) अधिकार**
3 अभय	**स) संघर्ष**

(i) 1-ब,2-स,3-अ (ii) 1-स,2-अ ,3-ब (iii) 1-अ ,2-ब,3-स (iv) 1-ब,2-अ ,3-स

(घ) काव्यांश के अनुसार कौन - सा युद्ध निष्पाप है ? **1**

(ड.) काव्यांश में धर्मराज से क्या प्रश्न पूछे गए हैं ? **2**

(च) काव्यांश के अनुसार तेजस्वी लोगों की क्या पहचान है ? **2**

खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक (22)

3 निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- **1×6=6**

(क) प्रकृति का मौन प्रतिशोध : भूकंप, बाढ़ और चक्रवात

(ख) कृत्रिम बुद्धिमत्ता : वरदान या चुनौती

(ग) अगर मैं फिल्म बनाता

4. 'स्वच्छ भारत अभियान' को सफल बनाने की अपील एवं नागरिकों को अभियान में सहयोग हेतु संदेश देते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । अथवा

आपके जिले में स्वास्थ्य विभाग के लापरवाह रवैये के कारण खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या गंभीर होती जा रही है । स्वास्थ्य विभाग के निदेशक के नाम इस समस्या की शिकायत करते हुए पत्र लिखिए । **1×5=5**

5.निम्नलिखित पाँच प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए- **4×2=8**

(क) वॉचडॉग पत्रकारिता किसे कहते हैं ?

(ख) कूटवाचन या डिकोडिंग से आप क्या समझते हैं ?

(ग) डायरी लेखन से हम अपना अन्तरंग साक्षात्कार कैसे करते हैं ?

(घ) अनुस्मारक या स्मरण पत्र क्या है ?

(ड.) निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोशीय क्रम में व्यवस्थित कीजिए-

चावल, चंग, च्यवनप्राश, चौसर

6. निम्नलिखित दो प्रश्नों को पढ़कर किसी एक प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए - **1×3=3**

(क) संचार किसे कहते हैं ? संचार के विविध प्रकारों पर प्रकाश डालिए ।

(ख) पटकथा किसे कहते है ? पटकथा लिखते समय किन -किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है ?

खंड 'ग' (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न) **अंक (40)**

7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- **5×1=5**

चंपा कहती है
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चंपा चुप हो जाती है
उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा

गाँधी बाबा की इच्छा है-
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चंपा ने कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे कि गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने-लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी

(क) "हारे गाढे काम सरेगा" - काव्यांश में आए मुहावरे का अर्थ है?

(i) हारते हुए काम आएगा । (ii) कठिनाई में काम आएगा ।
(iii) गहरा हरा करने में काम आएगा । (iv) अच्छे समय में काम आएगा ।

(ख) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए -

कॉलम 1	कॉलम 2
1 चंपा	अ) तुम कागद ही गोदा करते हो दिनभर
2 महात्मा गाँधी	ब) चंपा तुम भी पढ़ लो हारे गाढ़े कम सरेगा
3 कवि (त्रिलोचन)	स) सब जन पढ़ना-लिखना सीखें

(i) 1- अ, 2 -ब ,3-स (ii) 1- अ,2 -स ,3-ब (iii) 1- ब,2 -अ ,3-स (iv) 1- ब, 2 -स, 3-अ

(ग) "तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर"- पंक्ति में कागद गोदना में चंपा का कौन -सा भाव मुखर हो उठा है ?

(i) ख़ुशी का (ii) निराशा का (iii) खीझ का (iv) उदासीनता का

(घ) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए -

कथन (A): चंपा पढ़ना नहीं चाहती है ।

कारण (R): उसकी पढ़ाई-लिखाई में अरुचि है ।

(i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है ।

(ii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है ।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं ।

(iv) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है ।

(ड.) काव्यांश की सजीवता का मुख्य कारण है ?

(i) गाँधी बाबा के प्रभाव का चित्रण (ii) काव्यांश की संवाद शैली

(iii) केवल देशज शब्दों का प्रयोग (iv) केवल मुहावरे का प्रयोग

8. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×3=6

(क) कबीर जी ने स्वयं को 'दीवाना' क्यों कहा है ?

(ख) कवयित्री अक्क महादेवी के अनुसार लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं- इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।

(ग) वह चाँद सबसे खतरनाक क्यों होता है, जो हर हत्याकांड के पश्चात् आपकी आँखों में मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है ? (सबसे खतरनाक - पाश)

9. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×2=4

(क) 'भाषा में झारखंडीपन' से क्या अभिप्राय है? (आओ, मिलकर बचाएँ - निर्मला पुतुल)

(ख) मीरा जगत को देखकर रोती क्यों है ?

(ग) मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' क्यों कहा है ?

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 5×1=5

लंबे बेंटवाले हँसुवे को लेकर मोहन घर से इस उद्देश्य से निकला था कि अपने खेतों के किनारे उग आईं काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ कर आएगा। बूढ़े वंशीधर जी के बूते का अब यह काम नहीं रहा। यही क्या, जन्म भर जिस पुरोहिताई के बूते पर उन्होंने घर -संसार चलाया था, वह भी अब वैसे कहाँ कर पाते हैं! यजमान लोग उनकी निष्ठा और संयम के कारण ही उन पर श्रद्धा रखते हैं लेकिन बुढ़ापे का जर्जर शरीर अब उतना कठिन श्रम और व्रत-उपवास नहीं झेल पाता। सुबह-सुबह जैसे उससे सहारा पाने की नीयत से ही उन्होंने गहरा नि:श्वास लेकर कहा था- "आज गणनाथ जाकर चंद्रदत्त जी के लिए रुद्रीपाठ करना था, अब मुश्किल ही लग रहा है। यह दो मील की सीधी चढ़ाई अब अपने बूते की नहीं । एकाएक ना भी नहीं कहा जा सकता, कुछ समझ में नहीं आता !"

(क) मोहन किस उद्देश्य से घर से बाहर निकला था ?

(i) काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ़ करने (ii) अपने खेतों में उगी फसल को काटने

(iii) गणनाथ जाकर चंद्रदत्त जी के यहाँ रुद्रीपाठ करने (iv) जंगल से लकड़ी काटने

(ख) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए -

कथन (A): वंशीधर जी अब रुद्रीपाठ करने जाने में असमर्थ महसूस करते हैं।

कारण (R): बुख़ार के कारण उनका शरीर कठिन परिश्रम नहीं कर पाता।

(i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) ,कथन (A) की सही व्याख्या करता है ।

(ii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है ।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं ।

(iv) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है ।

(ग) यजमान लोगों का वंशीधर के प्रति श्रद्धा का मूल कारण क्या था ?

(i) उनकी आर्थिक सम्पन्नता के कारण (ii) उनकी विद्वता के कारण

(iii) उनकी निष्ठा और संयम के कारण (iv) वे बूढ़े थे और सभी उन पर दया करते थे

(घ) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए -

कॉलम 1	**कॉलम 2**
1 मोहन	**अ) बूढ़ा ब्राह्मण**
2 चंद्रदत्त	**ब) वंशीधर का पुत्र**
3 वंशीधर	**स) यजमान**

(i) 1- अ, 2 -ब ,3-स (ii) 1- अ,2 -स ,3-ब (iii)1- ब,2 -अ ,3-स (iv) 1- ब, 2 -स, 3-अ

(ड.) गद्यांश के अनुसार वंशीधर की आजीविका का मुख्य स्त्रोत क्या था ?

(i) पुरोहिताई (ii) खेतीबाड़ी (iii) नमक का दारोगा (iv) लोहार का कार्य

11. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×3=6

(क) नमक का दरोगा कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों ?

(ख) यह कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है कि जामुन का पेड़ कहानी में हास्य के साथ-साथ करूणा की भी अंतर्धारा है। अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।

(ग) स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है ?

12. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×2=4

(क) मियां नसीरुद्दीन को 'नानबाइयों का मसीहा' क्यों कहा गया है ?

(ख) शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते हैं?

(ग) 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया? उसने फ़िल्म के किस दृश्य को पूरा किया?

13. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 2×5=10

(क) लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है , जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं- इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

(ख) 'राजस्थान की रजत बूँदें' अध्याय के आधार पर लिखिए कि कुंई का मुँह (व्यास) छोटा क्यों रखा जाता था ? स्पष्ट कीजिए ।

(ग) 'आलो आँधारि' रचना बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ कई सामाजिक मुद्दों को समेटे है। किन्हीं दो मुख्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

आदर्श प्रश्नपत्र -2 उत्तरमाला (संकेत)

प्रश्न संख्या **खंड - क (अपठित बोध)** **अंक(18)**

1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (10)

(क) (iv) **(ख)** (ii) **(ग)** (i)

(घ) उत्साही व्यक्ति सदा दृढ़ निश्चयी होता है तथा वह असफल होने पर भी कार्य करता रहता है ।

(ड.) सामान्य व्यक्ति कार्य पूरा हो जाने पर जिस आनंद का अनुभव करता है, सच्चा वीर कार्य प्रारम्भ होने पर ही उसका अनुभव कर लेता है ।

(च) आलस्य उत्साह का सबसे बड़ा शत्रु है क्यों कि जो व्यक्ति आलस्य से भरा होगा, उसमें काम करने के प्रति उत्साह कभी उत्पन्न नहीं हो सकता ।

(छ) सच्चे वीर कर्म - भावना से उत्पन्न आनंद का अनुभव करते हैं ।
उनमें साहस की अधिकता होती है ।

2 निम्नलिखित अपठित पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (08)

(क) (ii) **(ख)** (iii) **(ग)** (i)

(घ) जो युद्ध न्यायपूर्ण अधिकारों को पाने के लिए किया जाता है ,वह निष्पाप होता है । 1

(ड.) अगर अधिकार माँगने पर भी न मिले तो शोषित लोग कहाँ जाएँ ? वे जीवित कैसे रहें ?क्या वे मर जाएँ ?

(च) तेजस्वी लोगों की पहचान यह है कि वे अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करते हैं । वे या तो अपना हक़ लड़ कर प्राप्त कर लेते हैं या लड़ते - लड़ते मर जाते हैं ।

खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक 2)

3 रचनात्मक लेखन आरंभ- 01 अंक, विषयवस्तु- 03 अंक, प्रस्तुति- 01 अंक, भाषा- 01 अंक

4. औपचारिक पत्र - आरंभ- 01 अंक, विषयवस्तु- 03 अंक, भाषा- 01 अंक

5. निम्नलिखित पाँच प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए- 4×2=8

(क) लोकतंत्र में पत्रकारिता का मुख्य उत्तरदायित्व सरकार के कामकाज पर निगाह रखना है और कहीं भी कोई गड़बड़ी हो तो उसका पर्दाफाश करना है । इस तरह की पत्रकारिता को वॉचडॉग पत्रकारिता कहा जाता है।

(ख) डीकोडिंग का अर्थ है - प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने की कोशिश। यह एनकोडिंग से उलटी प्रकिया है। इसमें संदेश प्राप्तकर्ता प्राप्त चिहनों व संकेतों के अर्थ निकालता है।

(ग) डायरी एक तरह का अन्तरंग साक्षात्कार भी है, जिसमें अपने जीवन के खास पलों, किसी विशेष समय में मन के अंदर चलने वाले विचारों, यादगार मुलाकातों और तर्क-वितर्क को हम लिख कर सुरक्षित कर लेते हैं। जिन बातों को हम दुनिया में किसी और व्यक्ति के सामने नहीं कह सकते, उन्हें भी डायरी के पन्नों पर लिख करके खुद को सुना डालते हैं ।

(घ) जब पहले से किसी भेजे गए पत्र या ज्ञापन इत्यादि का उत्तर समय पर प्राप्त नहीं होता तो याद दिलाने के लिए 'अनुस्मारक' भेजा जाता है। इसे 'स्मरण पत्र' भी कहते हैं।

(ड.) चंग, चावल, चौसर, च्यवनप्राश

6. निम्नलिखित दो प्रश्नों को पढ़कर किसी एक प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए-

1×3=3

(क) संचार' शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है- चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना। संचार से हमारा तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान है। संचार के अनेक प्रकार हैं- सांकेतिक संचार, मौखिक संचार, अमौखिक संचार, अंत: वैयक्तिक संचार, अंतर वैयक्तिक संचार, समूह संचार व जनसंचार।

(ख) परदे पर दिखाई जाने वाली कहानी को पटकथा कहते हैं। पटकथा लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना के समय का संकेत दिया जाए। 2. पात्रों की गतिविधियों का संकेत दिया जाए। 3. दृश्य के साथ घटनास्थल का संकेत होना चाहिए। 4. दृश्यों का बँटवारा जिन आधारों पर हो उनका ध्यान रखना चाहिए। 5. पटकथा के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप को ही मानना चाहिए।

खंड 'ग' (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न) अंक (40)

7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 5×1=5

(क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iii) (घ) (i) (ड.) (ii)

8. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×3=6

(क) कबीर के अनुसार जो लोग सांसारिक मोह-माया से मुक्त हो जाते हैं, वे निर्भय होकर रहते हैं। कबीर भी इस मिथ्या जगत से दूर रहकर परमात्मा की भक्ति में लीन हैं। इसलिए वे स्वयं को दीवाना कहते हैं, जिन्हें किसी भी तरह का भय नहीं रहता ।

(ख) इंद्रियाँ मनुष्य को लक्ष्य की ओर जाने नहीं देतीं, वे मनुष्य को एकाग्रचित्त नहीं होने देतीं। जब भी मनुष्य अपने लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आगे बढ़ना चाहता है, इंद्रियाँ उसे स्वाद-सुख में भटका देती है। मनुष्य की इंद्रियाँ उसे सांसारिक मोह-माया में उलझा कर रखती हैं और उन्हें लक्ष्य-प्राप्ति के मार्ग में अग्रसर नहीं होने देतीं।

(ग) यहाँ 'चाँद' का प्रयोग उन व्यक्तियों के लिए किया गया है जो आस्था और विश्वास के नाम पर अत्याचार और अन्याय को चुपचाप सहने का उपदेश देते हैं। वे लोग भगवान की भक्ति के नाम पर पीड़ित लोगों से मनमोहक बातें करते हैं और उन्हें अन्याय के विरूद्ध कोई आवाज न उठाने की प्रेरणा देते हैं। कवि ऐसी आस्था को खतरनाक मानता है जिससे मानवीय समस्याओं का हल नहीं निकलता।

9. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×2=4

(क) झारखंडीपन का अर्थ है- झारखंड के लोगों की अपनी मूल भाषा है,जिसका विशिष्ट उच्चारण और स्वभाव है। यह उनकी संस्कृति को अलग पहचान प्रदान करता है।

(ख) मीरा संसार के लोगों द्वारा व्यर्थ के सांसारिक मोह-माया में पड़कर भ्रमित होने से दुखी हैं। उन्हें भगवद् प्रेम की समझ नहीं है इसलिए झूठे आडंबरों तथा विषय-वासनाओं में लिप्त हैं। मीरा ऐसे संसार को देखकर दुखी हैं।

(ग) आज पानी गिरने से कवि को बहनों के आने पर हँसी-खुशी से भर जानेवाले घर की याद आती है और वह जानता है कि इस वर्ष बहनों को केवल चार भाई मिलेंगे और पाँचवें (कवि स्वयं) का अभाव घर को दुख से भर देगा। भाई जेल में यातना झेल रहा है, वह उन सबसे दूर है। इसलिए भुजाओं के समान सहयोग देने वाले चारों भाई और प्यार का प्रतीक बहनें और माता-पिता सभी दुखी हैं। यह बात दूर जेल में बैठा कवि जानता है। वह घर को परिताप (दुख) का घर कह रहा है।

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 5×1=5

(क) (i) **(ख)** (iv) **(ग)** (iii) **(घ)** (iv) **(ड.)** (i)

11. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×3=6

(क) कहानी का नायक दारोगा वंशीधर हमें सर्वाधिक प्रभावित करता है जो ईमानदार, आज्ञाकारी, धर्मनिष्ठ तथा कर्मयोगी जैसे गुणों से युक्त एक दारोगा है। वह एक भ्रष्ट समाज में रहता है जहाँ उसके पिता भी बेईमानी की सीख देते हैं। कहानी का एक पात्र पंडित अलोपीदीन दारोगा को खरीदने में असफल रहता है । उसकी ईमानदारी के आगे पंडित को भी आखिरकार झुकना पड़ता है। इस प्रकार वंशीधर समाज के सामने अपमानित होने के डर से झूठ के सामने कमजोर नहीं पड़ता है।

(ख) इस कहानी में हास्य के साथ-साथ करूणा की भी अंतर्धारा है। इस बात से मैं सहमत हूँ। कहानी के आरंभ में ही हास्य दृश्य है, जब जामुन के पेड़ के गिरने पर सभी उसके रसीले फल को याद करके अफ़सोस व्यक्त करते हैं। कोई उसके नीचे दबे हुए आदमी की कराह को नहीं सुनता। कुछ मनचले क्लर्क पेड़ की जगह आदमी को ही काटने की बात करते हैं जिससे कि पेड़ को कोई नुकसान न हो। इस बात से हास्य और करूणा दोनों की अनुभूति होती है। कहानी के अंत में एक ओर फैसला आता है और दूसरी ओर आदमी की मौत हो जाती है तथा चीटियों की एक लंबी पंक्ति उसके मुँह में चली जा रही है। यह अत्यंत ही कारुणिक दृश्य है।

(ग) रजनी वह स्त्री है जो कहीं भी हो रहे अन्याय को नज़रअंदाज़ नहीं कर पाती। वह उसकी जड़ तक जाकर उसे नष्ट करके ही दम लेती है, जबकि भारतीय समाज में स्त्री सहनशीलता, शालीनता और कोमलता का प्रतीक मानी जाती है। संघर्ष करते समय सहन करने और शालीन बने रहने का तो सवाल ही नहीं उठता। जब अत्याचारी का विरोध करें तो हमें भी कठोर बनना ही पड़ता है। अतः तथाकथित स्त्रियोचित गुणों को त्यागकर ही रजनी का चेहरा तैयार होता है जो बनी हुई धारणाओं से काफ़ी अलग है।

12. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×2=4

(क) मियाँ नसीरूद्दीन छप्पन प्रकार की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर हैं। यह उनका खानदानी पेशा है। यह कला उन्होंने अपने पिता से सीखी थी। उनकी रोटियाँ तुनकी पापड़ से भी ज्यादा महीन होती हैं। वे अपने कारीगरों को काम सिखाने के साथ-साथ उचित मजदूरी भी देते थे । इसलिए उन्हें नानबाइयों का मसीहा कहा जाता है ।

(ख) लेखक ने शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से बताया है कि भारत में मनुष्य तो मनुष्य, पशुओं में भी अपने साथ रहने वालों के प्रति लगाव होता है। वे स्वयं को दुख पहुँचाने वाले व्यक्ति के बिछुड़ने पर भी दुखी होते हैं। यहाँ भावनाएँ प्रधान होती हैं। शिवशंभु की मारने वाली गाय के जाने पर दुर्बल गाय ने चारा नहीं खाया। यहाँ बिछुड़ते समय वैर-भाव को भुला दिया जाता है। विदाई का समय करुणा उत्पन्न करने वाला होता है।

(ग) भूलो का गमले में भात खाने वाला दृश्य लेखक को चित्रित करना था परन्तु सूरज की रोशनी खत्म हो चुकी थी और लेखक के पास पैसे भी नहीं थे । इसलिए इसके बाद का दृश्य छह महीने बाद फिल्माया गया। तब तक भूलो की मृत्यु हो चुकी थी इसलिए 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता को लाया गया। उसने गमले में पड़े भात को खाया और उस दृश्य को पूरा किया।

13. निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×5=10

(क) लेखक का यह कहना कि 'लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं' से मैं सहमत नहीं हूँ। लता मंगेशकर ने 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गाना इतनी भावुकता तथा करूणा भरे स्वर में गाया है कि उसे सुनकर अभी भी हमारे आँखों में आँसू आ जाते हैं। उनके द्वारा गाए गए अनेक गीत करुण रस से भरे हुए हैं और वे लोकप्रिय भी हैं। इस प्रकार यह कहना उचित नहीं होगा कि लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है।

(ख) कुंई का मुँह(व्यास) छोटा रखने के कारण - कुंई को ढकने में आसानी रहती है । कुंई का पानी हवा में उड़ न सके । कुंई का पानी जमीन पर ज्यादा न फैले । कुंई में धूल-मिट्टी न गिरे । कुंई की सतह से पानी भरने में आसानी हो । पानी की सुरक्षा कर सके।

(ग) 1. **समाज में स्त्री की दशा-** लेखिका बेबी हालदार अपने तीन बच्चों के साथ किराए के मकान में अकेले रहती थीं। पति के साथ न होने के कारण उन्हें आस-पास लोगों के सवालों का सामना करना पड़ता था। एक अकेली स्त्री के प्रति लोगों के विचार अच्छे नहीं होते हैं। बुरे समय में कोई उसकी सहायता भी नहीं करना चाहता है। हर कोई उसके अकेलेपन का लाभ उठाना चाहता है।

2. शौचालय की समस्या- जहाँ वह रहती थीं वहाँ बाथरूम और पानी की असुविधा थी। लोगों को शौच करने बाहर जाना पड़ता था। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण लोगों को इन समस्याओं का सामना करना पड़ता था। यह बस्तियों की दुर्दशा को उजागर करता है, जहाँ अभी भी पानी और बाथरूम की समस्या व्याप्त है। यह खासकर स्त्रियों के लिए बहुत बड़ी समस्या है।

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र -3

कक्षा : ग्यारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

विषय : हिंदी (आधार) **विषय कोड -(302)** **निर्धारित समय : 3 घंटे**

सामान्य निर्देश:-

- प्रश्न पत्र तीन खंडों-- **क, ख और ग** में विभाजित है।
- **खंड 'क'** में अपठित बोध आधारित प्रश्न हैं, सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- **खंड 'ख'** में अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- **खंड 'ग'** में आरोह तथा वितान से प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रश्नपत्र में कुल- **13 प्रश्न** हैं।
- उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखिए।

खंड - क (अपठित बोध) **अंक (18)**

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए - **(10)**

आज का मनुष्य सुविधा सम्पन्न होने के बावजूद पहले से अधिक चिंतित दिखाई देता है। तकनीक ने उसके जीवन को आरामदायक तो बनाया है, परंतु मन को बेचैन भी कर दिया है। मोबाइल, इंटरनेट और लगातार बदलती सूचनाओं की इस दुनिया में मनुष्य स्वयं के लिए समय नहीं निकाल पा रहा है। धीरे-धीरे वह प्रकृति, परिवार और अपने भीतर की शांति से दूर होता जा रहा है। वास्तविक सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि मन की स्थिरता में है। जब मनुष्य अपने विचारों और भावनाओं को समझना सीख लेता है, तब उसे जीवन की छोटी-छोटी बातों में भी आनंद मिलने लगता है। किसी फूल का खिलना, किसी बच्चे की मुस्कान या भोर की ठंडक–ये सभी अनुभव तभी सुंदर लगते हैं, जब मन शांत और सजग होता है। जीवन की भागदौड़ में ठहराव का महत्व समझना आज पहले से अधिक जरूरी हो गया है। दिन में कुछ समय ऐसा होना चाहिए जब मनुष्य न किसी स्क्रीन को देखे, न किसी परिणाम की चिंता करे– बस अपने साथ समय बिताए। यह ठहराव मन को संतुलित करता है और आत्मिक ऊर्जा को पुनर्जीवित करता है। जो व्यक्ति भीतर से स्थिर रहता है, वही परिस्थितियों के तूफानों में भी संतुलन बनाए रखता है। इसलिए हमें तकनीक से दूरी नहीं बनानी चाहिए, बल्कि उसका संयमित उपयोग करना चाहिए। जीवन का संतुलन वही बना सकता है, जो अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं के बीच अंतर जानता हो। आधुनिकता और आत्मिक शांति का मेल ही सच्ची प्रगति का प्रतीक है।

(क) गद्यांश के अनुसार मनुष्य की बढ़ती चिंता का मुख्य कारण क्या है? **1**

(a) प्रकृति से दूरी (b) तकनीकी निर्भरता (c) आर्थिक कठिनाई (d) शिक्षा का बोझ

(ख) वास्तविक सुख कहाँ बताया गया है? **1**

(a) धन और यश में (b) बाहरी वस्तुओं में (c) मन की स्थिरता में (d) परिवार के साथ

(ग) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए - **1**

कथन (A): तकनीक से दूरी बनाकर ही आत्मिक शांति पाई जा सकती है।

कारण (R): तकनीक मनुष्य को बेचैन और असंतुलित बना देती है।

a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही कारण है।

b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परंतु (R), (A) का सही कारण नहीं है।

c) (A) सत्य है, पर (R) असत्य है। d) (A) असत्य है, पर (R) सत्य है

(घ) गद्यांश के अनुसार आधुनिक मनुष्य स्वयं के लिए समय क्यों नहीं निकाल पा रहा है? 1

(ड.) तकनीक ने मनुष्य को आराम भी दिया और बेचैनी भी"–इस विचार की व्याख्या करें। 2

(च) गद्यांश के अनुसार वह व्यक्ति सशक्त कैसे बनता है जो भीतर से स्थिर रहता है? 2

(छ) गद्यांश का मुख्य संदेश अपने शब्दों में लिखिए। 2

2. निम्नलिखित अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (08)

नयन संयम के दीप बुझा बैठा मन,
विचारों की आँधी सब उजियारा ले गई।
विकास का शोर जितना बढ़ा,
उतना ही आत्मा की निस्तब्धता सहम गई।
नदियाँ अब दर्पण नहीं रहीं,
वे भी शहर की थकान ढोती हैं।

मनुष्य ने जब स्वयं को जीता,
तभी तो प्रकृति हार मानती है।
सफलता की सीढ़ियाँ ऊँची जरूर हैं,
पर उनके शिखर पर शांति नहीं ठहरती।
जो भीतर की नीरवता पहचान ले,
वही सच्चे अर्थों में अमरता को छू लेता है।

(क) कवि के अनुसार "विकास का शोर" से क्या परिणाम निकला है? 1

(a) समाज में खुशी बढ़ी (b)आत्मिक शांति घटी (c) लोगों में आशा जगी (d)प्रकृति का सौंदर्य बढ़ा

(ख) कवि ने 'नदियाँ अब दर्पण नहीं रहीं' कहकर क्या सूचित किया है? 1

(a) नदियों का जल गंदा हो गया है (b) मनुष्य अब स्वयं को नहीं देख पाता

(c) दर्पण के कारखाने नदियों के किनारे नहीं है (d) नदियाँ अपना मार्ग भूल गई हैं

(ग) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए - 1

कथन (A): सफलता के शिखर पर शांति सदैव बनी रहती है।

कारण (R): सफलता के साथ मानव को आत्मिक संतोष मिलता है।

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही कारण है।

(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परंतु (R), (A) का सही कारण नहीं है।

(c) (A) सत्य है, पर (R) असत्य है।

(d) (A) असत्य है, पर (R) सत्य है।

(घ) कवि ने "मनुष्य ने जब स्वयं को जीता, तभी तो प्रकृति हार मानती है" कहकर क्या संकेत दिया है? 1

(ड.) विचारों की आँधी सब उजियारा ले गई" पंक्ति का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। 2

(च) पद्यांश के आधार पर 'भीतर की नीरवता' का अर्थ स्पष्ट कीजिए और बताइए कि कवि ने इसे क्यों महत्त्वपूर्ण माना है ? 2

खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक (22)

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- 6

(क) बिन छतरी बारिश में

(ख) एक शांत सुबह का आत्म संवाद

(ग) भारत : एक महाशक्ति के रूप में उभरता देश

4. आपके विद्यालय के पुस्तकालय में कई पुस्तकें पुरानी और क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं, साथ ही नई संदर्भ पुस्तकों की कमी के कारण विद्यार्थियों को अध्ययन में कठिनाई होती है। समाधान हेतु प्राचार्य को पत्र लिखिए। अथवा 1×5=5

आपके शहर की सफ़ाई-व्यवस्था ठीक नहीं है । किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए जिसमें इस विषय पर ध्यान आकर्षित किया गया हो ।

5. निम्नलिखित पाँच प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए- 4×2=8

(क) कार्यवृत्त और कार्यसूची में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(ख) जनसंचार के प्रमुख कार्य कौन-कौन से हैं?

(ग) शब्दकोश में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित संकेताक्षरों का अर्थ लिखिए-
(अ०), उप०, अ० क्रि०, (पु०)

(घ) डायरी लेखन को 'आत्म-चिंतन का दर्पण' क्यों कहा जाता है?
इसके दो मनोवैज्ञानिक लाभ स्पष्ट कीजिए।

(ड.) स्ववृत्त क्या है? स्ववृत्त के दो पक्षों को स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित दो प्रश्नों को पढ़कर किसी एक प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए - 1×3=3

(क) समाचार और पत्रकारिता का मूल तत्त्व क्या है? खोजपरक पत्रकारिता और वॉचडॉग पत्रकारिता में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

(ख) पटकथा से क्या तात्पर्य है? फ़्लैशबैक तकनीक और फ्लैशफॉरवर्ड तकनीक क्या होती है?

खंड 'ग' (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न) अंक (40)

7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 5×1=5

हम तौ एक एक करि जांनां ।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां ।।
एकै पवन एक ही पानीं एकै जोति समांनां ।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोंहरा सांनां ।।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई ।
सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई ।।
माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबांनां ।
निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवांनां ।।

(क) कबीर के अनुसार सच्चा ज्ञान क्या है?

(a) द्वैत को मानना (b) एकत्व को पहचानना (c) भौतिक सुख भोगना (d) माया में लिपटना

(ख) पद्यांश में पंचतत्वों को संसार में एक ही बताकर कबीर क्या सिद्ध करते हैं?

(a) विविधता का महत्व (b) ईश्वर की सर्वव्यापकता
(c) भेदभाव की आवश्यकता (d) सृष्टि का विखंडन।

(ग) "जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई" छंद से कबीर क्या संदेश देते हैं?

(a) माया के बंधन को (b) अग्नि की शक्ति को (c) आत्मा की अमरता (d) जल की क्रूरता को

(घ) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :-

कॉलम 1	कॉलम 2
1 भांडै	A परमात्मा
2 खाक	B शरीर
3 कोंहरा	C पंचतत्त्व

(a) 1-B, 2-A, 3-C (b) 1-A, 2-B, 3-C (c) 1-C, 2-A, 3-B (d) 1-B, 2-C, 3-A

(ड.) पद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है ?

(a) अद्वैत दर्शन और मायामुक्ति (b) भौतिक सुखों का महत्व

(c) द्वैत भक्ति का समर्थन (d) कर्मकांडों का महत्त्व

8. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×3=6

(क) निम्नलिखित पंक्तियों का "भाव व शिल्प" सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

"दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी"

(ख)'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता में चित्रित दो सामाजिक समस्याओं को स्पष्ट कीजिए ।

(ग) मुर्दा शांति से भर जाना और हमारे सपनों का मर जाना - इनको सबसे खतरनाक माना गया है। आपकी दृष्टि में इन बातों में परस्पर क्या संगति है और ये क्यों सबसे खतरनाक हैं?

9. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2×2=4

(क) ग़ज़ल के आधार पर चिराग और चिरागां शब्द के सांकेतिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए ।

(ख) "घर की याद" कविता में कवि का भरा-पूरा घर आज 'परिताप का घर' क्यों है?

(ग) 'अपना घर' से अक्क महादेवी क्या तात्पर्य है?

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 5×1=5

आगे भी इस देश में जो प्रधान शासक आए, अंत में उनको जाना पड़ा। इससे आपका जाना भी परंपरा की चाल से कुछ अलग नहीं है, तथापि आपके शासन-काल का नाटक घोर दुखांत है, और अधिक आश्चर्य की बात यह है कि दर्शक तो क्या, स्वयं सूत्रधार भी नहीं जानता था कि उसने जो खेल सुखांत समझकर खेलना आरंभ किया था, वह दुखांत हो जावेगा। जिसके आदि में सुख था, मध्य में सीमा से बाहर सुख था, उसका अंत ऐसे घोर दुख के साथ कैसे हुआ? आह! घमंडी खिलाड़ी समझता है कि दूसरों को अपनी लीला दिखाता हूँ। किंतु पर्दे के पीछे एक और ही लीलामय की लीला हो रही है, यह उसे खबर नहीं।

(क) "अंत में उनको जाना पड़ा" से लेखक कौन-सा राजनीतिक सत्य रेखांकित करता है?

(a) शासक अमर होते हैं (b) इतिहास स्थिर है

(c) जनता निर्बल है (d) सत्ता अस्थायी है

(ख) "आपके शासन-काल का नाटक घोर दुखांत है" में 'नाटक' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

(a) मनोरंजन के लिए किए गए कार्यक्रम के अर्थ में

(b) शासन की समूची प्रक्रिया के प्रतीक के रूप में

(c) रंगमंच की तकनीक के रूप में (d) धार्मिक अनुष्ठान के रूप में

(ग) लेखक के अनुसार सूत्रधार की सबसे बड़ी भूल क्या रही?

(a) उसने दर्शकों की परवाह नहीं की (b) उसने इतिहास नहीं पढ़ा

(c) उसने सुखांत की धारणा के साथ शासन आरंभ किया (d) उसने नियमों का पालन नहीं किया

(घ) घमंडी खिलाड़ी समझता है कि दूसरों को अपनी लीला दिखाता हूँ" - यहाँ 'घमंडी खिलाड़ी' किस पर व्यंग्य है?

(a) सामान्य नागरिक पर (b) विरोधी दलों पर

(c) सत्ता-मद से भरे शासक पर (d) कलाकारों पर

(ड.)निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए -

कथन (A): शासन-काल का अंत घोर दुखांत इसीलिए हुआ कि सूत्रधार ने इतिहास के संकेतों की उपेक्षा की।

कारण (R): पूर्व शासकों के जाने की परंपरा से यह स्पष्ट था कि किसी भी शासक की सत्ता स्थायी नहीं रहती।

a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही कारण है।

b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, पर (R), (A) का सही कारण नहीं है।

c) (A) सत्य है, पर (R) असत्य है।

d) (A) असत्य है, पर (R) सत्य है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-2×3=6

(क) लेखिका कृष्णा सोबती ने किसे 'नानबाइयों का मसीहा' कहा है? उन्होंने ऐसा किस आधार पर कहा है, उन विशेषताओं को रेखांकित कीजिए ।

(ख) किसी फिल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, 'अपू के साथ ढाई साल' पाठ के आधार उन्हें लिखिए ।

(ग) स्त्री की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है ? स्पष्ट कीजिए ।

12. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-2×2=4

(क) धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था?

(ख) दबा हुआ आदमी एक कवि है, यह बात कैसे पता चली और इस जानकारी का फाइल की यात्रा पर क्या असर पड़ा?

(ग) भारत माता के प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी?

13. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-2×5=10

(क) चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए'-अकसर यह आरोप लगाया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुमार गंधर्व की राय और अपनी राय लिखें।

(ख) राजस्थान में कुंई केवल जल आपूर्ति ही नहीं करतीं, सामाजिक संबंध भी बनाती हैं, कैसे?

(ग) बेबी के अँधेरे जीवन में आलोक फैलाने का श्रेय तातुश को क्यों दिया जाना चाहिए ? तर्क सहित लिखिए।

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र -3

उत्तरमाला (संकेत)

खंड- क (अपठित बोध) अंक 18

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- 10

(क) (b) **(ख)** (c) **(ग)** (d)

(घ) क्योंकि वह मोबाइल, इंटरनेट और लगातार सूचनाओं में उलझा रहता है।

(ङ) तकनीक ने सुविधाएँ तो बढ़ाई हैं, पर उसकी अत्यधिक निर्भरता से मनुष्य की मानसिक शांति खो गई है

(च) जो व्यक्ति भीतर से स्थिर रहता है, वह कठिन परिस्थितियों में भी संयम और संतुलन बनाए रखता हैं।

(छ) गद्यांश का मुख्य संदेश यह है कि तकनीक का संयमित और संतुलित प्रयोग करते हुए मनुष्य को भीतर की शांति और संतुलन बनाए रखना चाहिए ।

2. दिए गए अपठित पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- 08

(क) (b) (ख) (e) (ग) (d)

(घ) इसका अर्थ है कि मानव का अहंकार प्रकृति के संतुलन को विचलित कर देता है।

(ङ)इन पंक्तियों में कवि कहता है कि अनियंत्रित विचार और भौतिक उत्तेजना मनुष्य की अंतरात्मा के प्रकाश को ढक देते हैं।

(च) 'भीतर की नीरवता' का अर्थ है मन की शांत स्थिति जहाँ बाहरी शोर और लालसाएँ मौन हो जाती हैं; कवि के अनुसार यही आत्मिक उत्कर्ष और अमरता का मार्ग है।

खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक 22

3. आरंभ -01 अंक , विषयवस्तु - 03 अंक , प्रस्तुति - 01 अंक , भाषा - 01 अंक

4. आरंभ -01 अंक , विषयवस्तु - 03 अंक , भाषा - 01 अंक

5. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 08

(क) कार्यवृत्त और कार्यसूची में अंतर- कार्यवृत्त बैठक के बाद जारी होता है जबकि कार्यसूची पहले। कार्यवृत्त बैठक के निर्णयों का लेखा-जोखा है जबकि कार्यसूची बैठक में चर्चा के बिंदुओं का ब्यौरा है।

(ख) सूचना देना, शिक्षित करना, निगरानी करना, एजेंडा तैयार करना, विचार विमर्श के मंच तैयार करना।

(ग) शब्दकोश में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित संकेताक्षरों का अर्थ -

(अ०)- अरबी, उप०- उपसर्ग, अ० क्रि०- अकर्मक क्रिया, (पु०)- पुंलिंग

(घ) डायरी में व्यक्ति बिना किसी बाहरी दबाव के अपने विचार, भावनाएँ, त्रुटियाँ और सपने दर्ज करता है; जब वह इन्हें दोबारा पढ़ता है तो जैसे आईने में अपना ही मन देखता है, इसलिए इसे

'आत्म-चिंतन का दर्पण' कहा जाता है। दो प्रमुख मनोवैज्ञानिक लाभ- भावनात्मक शुद्धि, स्व-जागरूकता और आत्म-सुधार।

(ङ) स्ववृत्त किसी व्यक्ति की योग्यता, कौशल और कार्य संबंधी अनुभव का लिखित सारांश है।
स्ववृत्त के दो पक्ष - पहला उम्मीदवार जिसको केंद्र में रखकर सूचनाएँ संकलित की गईं हैं , दूसरा नियोक्ता जिसके लिए सूचनाएँ संकलित की गईं हैं।

6. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किसी एक प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 03

(क) समाचार और पत्रकारिता का मूल तत्त्व - जिज्ञासा । खोजपरक पत्रकारिता- ऐसी पत्रकारिता जिसमें गहराई से छानबीन कर ऐसे तथ्यों को सामने लाया जाता है जिन्हें दबाने का प्रयास किया जाता है वॉचडॉग पत्रकारिता - ऐसी पत्रकारिता जिसमें सरकार के कामकाज पर निगाह रख गड़बड़ी का पर्दाफाश किया जाता है ।

(ख) पटकथा - ऐसी कहानी जो परदे पर दिखाई जाए । फ्लैशबैक तकनीक और फ्लैश फॉरवर्ड तकनीक कथा कहने के तरीके हैं, जिसमें फ्लैशबैक कहानी के वर्तमान से पीछे जाकर अतीत की घटनाओं को दिखाता है, जिससे पात्रों और पृष्ठभूमि को समझने में मदद मिलती है, जबकि फ्लैश फॉरवर्ड कहानी को भविष्य में ले जाकर दर्शकों को भविष्य की झलक दिखाता है, जो रहस्य या पूर्वाभास पैदा करता है।

खंड 'ग' (पाठ्यपुस्तक आरोह एवं वितान पर आधारित प्रश्न) अंक 40

7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :- 05

(क) b) (ख) b) (ग) c) (घ)d) (ङ) a)

8. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 06

(क) इन पंक्तियों (मीराबाई के पद से) में भाव यह है कि जैसे प्रेम से मथनी चलाकर दूध से शुद्ध घी (परमात्मा) निकाला जाता है और मट्ठा (व्यर्थ की सांसारिक चीजें) छोड़ दी जाती है, वैसे ही मीरा ने अपने प्रेममय हृदय से साधना करके सार तत्व (ईश्वर) को प्राप्त किया और सांसारिक मोह-माया को त्याग दिया; शिल्प सौंदर्य में दूध, मथनी, घी, छोई (मट्ठा) जैसे ग्रामीण बिंबों व रूपक अलंकार का सुंदर प्रयोग है, जिससे बात सहज और जीवंत हो उठी है, भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है।

(ख) 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता में चित्रित दो समस्याएँ-

1. शिक्षा व्यवस्था द्वारा बच्चों को आकर्षित न कर पाना।
2. रोज़गार हेतु ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े शहरों में पलायन करने और परिवार टूटने की समस्या।

(ग) मुर्दा शांति से मर जाना' का अर्थ है ?-निष्क्रियता, जड़ता व प्रतिक्रिया शून्यता का होना। ऐसा समाज अन्याय के खिलाफ संघर्ष नहीं कर पाता। 'हमारे सपनों का मर जाना' का अर्थ है-कुछ करने की इच्छा समाप्त होना। सपनों के मर जाने पर हम यथास्थिति में ही रहते हैं। इनसे समाज में अन्याय करने वाला प्रभावी रहता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 04

(क) ग़ज़ल के आधार पर चिराग और चिरागां के सांकेतिक अर्थ चिराग (एकवचन) - थोड़ी सी ख़ुशी, चिरागां (बहुवचन) - ढेर सारी खुशियाँ ।हमने तय किया था कि आज़ादी के बाद हर घर में ढेर सारी खुशियाँ होगी, पर आज़ादी के बाद पूरे शहर में कहीं थोड़ी-सी ख़ुशी भी नहीं दिख रही ।

(ख) 'घर की याद' कविता में कवि का भरा-पूरा घर आज 'परिताप (दुःख) का घर' इसलिए है क्योंकि कवि खुद जेल में है और अपने परिवार से दूर है, जिससे उसके भाई, माता-पिता और बहन सभी पुत्र-वियोग में दुखी और बेचैन हैं; घर में खुशियाँ होने के बावजूद, कवि की अनुपस्थिति उस घर में पीड़ा और उदासी का माहौल बना देती है, खासकर जब उसकी बहन मायके आती है और भाई को न पाकर उसे यह घर 'परिताप का घर' लगता है ।

(ग) अपना घर से तात्पर्य है- अपना स्वार्थमय संसार , सांसारिक रिश्ते-नाते, लोभ-लालच , व्यक्तिगत सुख- दुख और लाभ- हानि।

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :- 05

(क) d **(ख)** b **(ग)** c **(घ)** c **(ङ)** a

11. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 06

(क) मियां एक खानदानी नानबाई है। उनके पास छप्पन प्रकार की रोटियाँ बनाने का हुनर है। वह अपने काम को कला मानते हैं और उन्हें इस काम में महारत हासिल है। साथ ही आत्मविश्वास और फक्कड़पन के भरपूर हैं। वे अपने कारीगरों को काम सिखाने के उचित मजदूरी भी देते थे ।

(ख) किसी फिल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार के सामने आने वाली समस्याएँ-पात्रों की समस्या-अपू के चयन की, भूलो कुत्ते व मिठाईवाले के मरने के कारण समस्या आदि,धन की समस्या - सत्यजित राय के पैसे खत्म होने पर शूटिंग रोकनी पड़ती थी , स्थान की समस्या- काशफूलों को जानवरों द्वारा खा लेने के कारण समस्या ,मौसम की समस्या - बारिश के सीन के लिए बारिश का इंतजार करना आदि ।

(ग) स्त्री की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा अलग- सामान्य स्त्री अन्याय को चुपचाप सहन कर लेती है ,शांत स्वभाव की होती है तथा परिस्थितियों से समझौता कर लेती है । लेकिन रजनी ने अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज उठाई और उसे जन आन्दोलन बना दिया। उसने परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की ।

12. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 04

(क) धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था क्योंकि -1.वह स्वयं को नीची जाति का समझता था। यह बात बचपन से उसके मन में बैठा दी गई थी। 2.मोहन कक्षा का सबसे होशियार लड़का था। वह हर प्रश्न का उत्तर देता था। उसे मास्टर जी ने पूरी पाठशाला का मॉनीटर बना रखा था। वह अच्छा गाता था।

(ख) जब दबे हुए आदमी ने एक शेर बोला - माना कि तुम तगाफुल न करोगे.....। इस कारण माली द्वारा यह बात पता चली कि दबा हुआ आदमी कवि है ।इससे फाइल की यात्रा लम्बी हो गई और वह कल्चरल विभाग,विदेश विभाग आदि में भटकती रही तथा आदमी की मौत हो गई।

(ग) पंडित जवाहरलाल नेहरू के लिए भारत माता सिर्फ़ ज़मीन, पहाड़, नदियाँ और खेत नहीं थे, बल्कि इस देश के करोड़ों लोग थे, जिनमें किसान, मजदूर और आम जनता शामिल थी; उनके लिए 'भारत माता की जय' का मतलब इन सभी लोगों की जय था, और वे चाहते थे कि लोग खुद को भारत माता का हिस्सा समझें, जिससे उनमें राष्ट्रीय एकता और गौरव की भावना जगे।

13. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 10

(क) मैं इस आरोप से सहमत नहीं। कुमार गंधर्व की नजर में, संगीत में चित्रपट संगीत आने के बाद काफी सुधार आया है। इस विषय में कुमार गंधर्व का मत है कि वस्तुतः फ़िल्मी संगीत ने लोगों के कान बिगाड़े नहीं अपितु सुधारे हैं। आज फ़िल्मी संगीत के कारण एक साधारण श्रोता भी स्वर, लय, ताल आदि के विषय में जानकारी रखने लगा है। लोगों की रुचि संगीत में बढ़ी है। मेरा भी मत यही है कि चित्रपट संगीत ने लोगों की संगीत समझ को बढ़ाया है ।

(ख) कुंई जनसंपर्क स्थापित करने का काम करती हैं। कुंई की खुदाई करनेवाला चेलवांजी (चेजारो) तो जिस परिवार के लिए कुंई बनाता है उसका माननीय सदस्य बन जाता है, कुंई सामान्य जनों को भी एक समान धरातल पर लाती है। निजी होने पर भी कुंई एक सार्वजनिक स्थान पर बनाई जाती है। वहाँ अनेक कुंई होती हैं और पानी लेने का समय एक ही होता है। लोग एक-दूसरे से मिलते हैं। जल लेने के साथ-साथ सामाजिक जुड़ाव भी होता है।अतः सामाजिक संबंधों की सूत्रधारिणी हैं।

(ग) तातुश ने बेबी को अपने घर में घरेलू काम के लिए रखा, पर सदा उसका ध्यान रखते हुए उसे निराशाजनक माहौल में उसे पढ़ने के लिए किताबें दीं और लेखन के लिए बाध्य किया और कहा कि लेखन को वह तातुश का काम समझकर करे, जैसा भी हो गलती हो तो भी लिखे। वह अपना ही जीवन-परिचय लिख सकती है। वे बेबी को समझाते कि जो बुरे हैं वे ऐसे क्यों हैं? उन्हें माफ करने का प्रयास करो। उसके लिखे हुए की वे केवल तारीफ़ ही नहीं करते वरन् उसे अपने सभी मित्रों में प्रसारित करते। इस उत्साहजनक व्यवहार से ही बेबी को यह मुकाम हासिल हुआ।

संदर्भ :

- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद :
  आरोह-1, वितान-1, अभिव्यक्ति और माध्यम